B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

2nd INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Karishma. chavan. Roll No./ಸ್ಥಾನಕ : 08 Date /ದಿನಾಂಕ : 12-2-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi - DSC-I Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : I Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಕ : U15KM23AU008

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 27/30

I

1) a) विदापत

2) b) घेरा हुआ

3) b) नैतिकता a) मानवीय संवेदना

4) b) मिरदंगा

5) b) नीबु

6) a) रहमान

II

अ) सवीता को चिड़ियां को एक नीबु के गाछ के वहा मिलती तभी सविता कहती यह चिड़ियाँ मेरी है। मुझे मिली है कहकर अपने पास रख लेती है। लेखक भी कहता है वह चिड़ियां सीमा को देदे कहकर कहता फिर भी नही देती। इसलिए नीबु के गाछ छिपाकर रखा लेती है।

ब)

1) सपिया में उल्लेख है कि ए ठटोरी का उल्लेख किया गया है। पंचकौडी एक सपिया बजाने वाला है। पंचकौडी मिरदंगिया कहता है की सपिया एक विदापत है।

3) रमापतिया पंचकौड़ी को गुरु द्रोही इसलिए मानती है की वह पंचकौड़ी एक एक रमापतिया शक करता है। तुम किशोर पुर के ननबाबु के होत हो कहकर उसे छोड़कर अपने गाँव चली जाते है। इसलिए रमापतिया पंचकौड़ी पर गुरु द्रोही मानती है।

घ)

4) रमीला चिड़ियों की देखभाल कुछ बच्चो के साथ छोटे बच्चों के जैसे देख भाल करती है। उसे दाना पानी देना। उसे देखभाल करती है। पिंजरो को किसी बच्चो को आने नही देती थी।

5) मोहना के अनुसार किस वजह से की शायद आपकी उंगलीयाँ रमप्रिया बजाते बजाते टेढ़ी हुई है ना मोहना कहता है।

प्रश्न IV

1) पंचकौड़ी एक अनपढ़िया पंचकौड़ी है। जो किशोर पुर के वह जा रहा था। तभी उसे मोहना दिखाई देता है। तभी मोहना कहता है की अरे! आपकी उंगलीया रमप्रिया बजाते बजाते टेढ़ी हुई है ना। तभी आपको कैसा पता। कहते है। उसे मोहना को बेटा कहने का बार-बार मन कर रहा था की बेटा कहूँ। पर वो एक घटना के वजेसे वही के पाता है।

वो घटना है पंचकौड़ी किशोर पुर के वहा जाता था। तभी वह एक बच्चे के बेटा बोला है। वहा के लोग उसे बच्चा कहकर देख उसे बहुत ही प्यार कर देते है। तभी पंच कौड़ी कहते है मुझे साफ कर दो साहेब कहते है।

पंचकौड़ी किशोर पुर के वह आ रहा था। उसे वह उसे अच्छी अच्छी बाते सुनेको को मिलती थी। अच्छा खाना। कीशोर पुर के नंदू बाबू के घर जाता है।

मोहना को देखक उसके आँखे नंदूबाबू के तरह थे। यह एक राज कुमारी की तरह दिख रहा था। वे विद्या पढ़ने के वाचके लिए ठीक है। वह कहता है।

अरे मोहना तेरी माँ चली गई कहते थे। तभी मोहना मेलाह को लेने को जेला जाता है। पंच कौड़ी मोहना का इंतजार करता है। बहुत देर तक बैठ रहता है। तभी मोहना आता है। पंचकौड़ी कहते है शायद मोहना को भूख लगी होगी। उसे आम निकाल देती है। मोहना नही खाता वो मिक है। कहकर नही खाता। पंचकौड़ी गुस्सा आता है। उसे गंभीर देखते है। मोहना माँ पुकारी थी है। शायद मुमारी पुकार रही है। मोहना आपको कैसे पता। जा पुला रही है।

वह जाने लगता। फिर उसे पंचकौड़ी
को चवालीस रुपाई निकाल
देती है। यह बीक की नहीं है।
जो जाकर अपनी पत्नीयत दिखाना
और करम धनी पिना।

एक समय था की पंचकौड़ी
मिरदंगीया रसप्रीया बजाते थे।
वह अपने गाँव एक झुंड बनाया था
रसप्रीया बजाने वाले नाचने वाले
कीर्तन गाने वाले सब लोग का
एक झुंड था।

प्रश्न (2)

सहज और शुभ कहानी का
कहानी है की है वह लेखक
मिथिलेश रचीत कीया है।

एक दिन लेखक और अपनी
चचेरे बेटी सवीता दोनो बाहर जाते
है तभी सवीता को एक सुंदर
चिड़ीया दिखाई देती है।
वह उसे उठाकर अपने पास रख
लेती है। अपने माथे की रस्सी
निकाल कर बांध देती है। और
नीबु के गाछ पर छिपाया
जाती है। लेखक बहुत डर था
था। ताकी उसे घर में देखलेगे
तो डाट पड़ेगी कहकर। सवीता
बिलकुल नही डरे थी।

सवीता के घर में अपने
बाबा भेल ढोल काम करते थे।
बजार - बजार जाकर बेच तेथे।

और उसकी माता घर पर रहकर बच्चों की देखभाल करती थी।

उस चिड़ियों को देखकर लेखक बहुत डरता है। ताकि कहीं हमें दाद न पड़ जाये। लेखक कहता है सवीता कविता को कि छोड़ दो उस चिड़िया को तुमारी माँ को कह दुंगी फिर फ भी सवीता नहीं मानती। अपने पास रख लेती है।

तभी रमीला वह आती है। फिर वह पिंजरे को देखती है। सवीता कहती क्या देख रही हो दादी दादी कुछ नहीं कहती।

लेखक और सवीता दोनों हैरान रहता की वह चिड़िया कैसे आई। वह अपनी चीड़िया के पिंजरे के पास कीसी को भि नहीं आने देती अब यह चिड़िया कैसे आई।

वह अपने पिंजरे के पास किसीको भी नहीं आने देती। एक बच्चे को भी। फिर आज ए चिड़िया कैसे आई सवीता और लेखक दोनों हैरान होते है। आज ए चीड़ीया कैसे आई।

सवीता बहुत चालाक थी। वह बिल्कुल नहीं डर थी थी। लेखक को बहुत डरता है।

27/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : LIPAN VALU PATHAD Roll No./ಕ್ರಮಾಂಕ : 078 Date /ದಿನಾಂಕ :12 -02-2024

Subject/ವಿಷಯ : OPL Hindi Det Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : BA I st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM23A0080

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

प्र- 1) — 1) मिट्टीपात

01) 2) विदापत

02) 2) होश हुआ

03) 2) नैतिकता

04) 2) मिरदुंगा

05) 2) नीबू

प्र- IV

01) गुलकी :—

एक गाँव एक औरत रहती है वह अपने काम से काम रखती है उसका नाम ही गुलकी था वह अपने घर में अनेक तरह की रंग बिरंगी पंछीयों को पाल रखी थी और उन पंछीयों का खयाल भी रखा करती थी। वह एक दिन अपने घर पंछीयों को पाल रखी थी और वह उन पंछीयों का बहुत खयाल रखा करा कर थी उन पंछीयों को वह खाना और तमाटर और अनेक रीती की सबजी और

अनेक तरह की बीज और
उन पक्षी यों को वह बहुत
कुछ दाना भी डाल थी
वह उन पक्षी यों को बहुत
खयाल रख थी और उनको
अपने मन पसंन्द चिजे
लाके भी वह डालती थी
एक दिन जब वह उन
पक्षी यों का पंजारा खोली
रहती है तब एक पंक्षी
जाके किसी दुसरे के कन्धे
पर जाके बैठ थी है तभी
वह उस पंक्षी को वापस
नहीं कर ती तो वह एक
दिन सब को बुलाती है
और उन पक्षी यों को दुखने
के लिए देती है और
वह सभी गाँव वालो को रोज
~~उस~~ उन पक्षी यों को देखने
के लिए उस गुलकी घर को
अते है लेकीन वह सब को
दुर से ही देखने के लिए
देती है और पास जाके देखने
के लिए कीसी को नही छोडती
वहाँ तक की कीसी अपना
सगा काया आया तो भी
वह देखने के लिए नहीं
देती थी। तभी एक बार
ऐसे ही देखने गाँव से कोयी
आता है और उसी समय
गुलकी अपने पंक्षी यों का
पिंजरा खोली रहती है तभी
उसमें से एक पंक्षी जाके
उस एक लडके पर जाके बैठ
जाती है तो वह बोलता
है की अब यह पंक्षी मेरी है

प्र. 2

01) पाँचवा बेटा :-

इस प्रस्तुत कहानी के लेखक नासीरा शर्मा जी है वह कहते है इस कहानी में लेखक नासीरा शर्मा अपने असाक्षरता के वर्ग के लोगो के बारे में बहुत अच्छे रीती से बता चुके है। लेखक नासीरा शर्मा जी एक गाँव एक अमतुल नामक औरत रहती है उसके चार बेटे रहते है और वह उसके सभी बेटे रहते है एक दिन जब अमतुल अपने घर सामने काम करती रहती है तो वह उसके बेटे का बहुत ही ख्याल रखता कर थी है वह उनके लिये सब कुछ करती रहती है तभी उसके कारण कुछ भी नही होता। एक दिन वह अपने घर रहती है बारिश का मौसम था तो वह अपने घर उपर कुछ सामायी कर को उस के उपर तुडपत्री डालना चाहती थी लेकीन पैसो की कमी के कारण वह चुप बैठी थी लेकीन ऐसे ही चलता रहा और बारिश का मौसम और साल भगया लेकीन वह अभी तक अपने घर की छत को ठीक नही कर पायी थी और वह ऐसी ही छत के उपर ही अपना जीवन व्यतीत-

रही थी लेकीन वह अपने बेटे
का भरोसे पर वह अपनी घर
की छत्ता को कुछ काम नही
कर रही थी लेकीन उन के
चारो बेटे अभी बड़े होगये
थे और अपने अपने कामो
में शहर को आगये थे और
वापस अपने घर को नही देखने
के लिए गये थे ही नही
तभी उसकी माँ अमतुल ने
उनका बहुत राह देखा और
वह अपने काम में मग्न रही
रहती थी लेकीन वह चारो
बेटे वापस आये ही नही
थे। एक दिन ऐसा आया
की अभी कुछ दिन में
बरसात का मौसम आने वाला
था और उसकी अमतुल की
घर की छत अभी तक ठीक
नही हुयी थी तो वह अपने
चारो बेटो का रह देखती है।
और खुद ही अपना का घर
का छत को कुछ ठीक करने
के लिए आरंभ करने लगती
है तभी वह अपने घर के
ऊपर चढ़ती है और उस
दिन एक बार ऐसे ही करने
करते बरसात का मौसम आ
जाता है और एक दिन
बहुत तेजी से बारीश आ
ने लगती है और अमतुल
के घर में पानी आने
लगता है और वैसे ही
वह बिना छत ठीक कर
वाये ही उस घर में
रहती है और वह

बोलती है की ऐ अल्ला
आज एक दिन बारिश
ना हो तो अच्छा है
मै कल अपनी छत ठीक
कर दूंगी बस आज
एक दिन आप बरसात
ककबाड़ो लेकिन इतना ही
बोलने पर बारिश और
जोर से बरसता है और
बहुत तेजी से बारिश होने
लगती है तभी तक वह
अपने कामों में ही रहती
है वैसे ही एक रात कट
जाती है और अमरुक के
घर के अन्दर पानी भरा रहता
है सुबह वह पुरी रात
नही सो पायी थी तो वह
सुबह उठ के अपने कामों
में लग जाती है और
वह अपने घर की छत को
सुधार ने के लिए चल जाती
है तभी वह देखती है की
उस की घर की छत को
सुधार ने लगती है और
वह उस छत पर ताड़ पत्ती
को डाल देती है और
अपने घर को वापस आजाती
है तभी रात हो गयी थी
और फिर बारिश होने वाला
था तो वह खाना खालेती
है तभी बारिश होने लगती
है और उसके छत पर से
एक बुन्द भी पानी नही
टपकता है तो वह अपने
घर में आराम से रहने
लगती है।

9

प्र-3)

01) रसप्रीया कहानी में जो एक गाँव में जो मिरदुंगा रहता है वह मृदंग बजाता है तो लेखक उस के बारे में रसप्रीया कहानी में उल्लेख किया है।

02) सबीता ने चिड़िया को इस लिये छुपाया था की बस को छु ना ओर कुछ कहे ना इस लिए वह उसे वह छुपाया था।

03) रमपतिया पंचकौड़ी को गुरु द्रोही इसलिए मानती है की वह बच्चो को चुरा कर उनको लड़की बना कर नाचने का काम करता है इसीलिए रमपतिया पंचकौड़ी को गुरु द्रोह मानती है।

04) रमीला चिड़ियों को 'ब पिंजरे में रखती थी ओर उस के निचे दाना डालती थी ओर उन का बहुत देख भाल करती थी ओर उन पिंजरे के पास किसीको आने के लिए ना देती थी।

05) अमतुल मोहरम मनाती थी ओर वह अपने घर में 9 दिनों तक दीपक रखती थी ओर घर को दिवाली की तरह सजा कर अमतुल अगल बगल के लोगों को बुलाकर अमतुल मोहरम मनाती थी।

28/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : सागर, राठोड Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : 175 Date /ದಿನಾಂಕ : 3-1-2023

Subject/ವಿಷಯ : OPt हिंदी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : I st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ :

Invigilator's Signature/ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 30

प्र. १.

१. ~~[illegible]~~ २) जागरण

२ २) ग्राम

३ २) आँचलिक

४ २) फणीश्वरनाथ रेणु

५ २) 300

६ २) जयशंकर प्रसाद

प्र २.

१. सद्गती कहानी को ~~प्रेम~~ प्रेमचंद जिका लिखा हुआ कहानी है, इस कहानी में प्रेमचंद जी ने जाती, निति का भेद भाव का स्पष्ट करते हुए इस कहानी में प्रेमचंद जी ने स्पष्ट किया है।

जब एक दीन दुखी चमार अपनी बेटी की शादी के लिए पंडित घासीराम जि के घर जाकर अच्छा दीन निकलवाने के लिए जाता है तो पंडित घासीराम उस दुखी चमार पर ~~बहु~~ बहोत अत्याचार करता है। इसे कि उनको अपने घर का सारा काम कराने लगता है। जैसे बैलो को घास डालना, घर में झाडु लगाना

और पोछा लगाना फीर ना सब
लो जाने के बाद उनको एक
बड़ी सी लकड़ी का गाट फाड़ने
के लिए कहता है। तो कुछ
घाट को पकड़ने इसे कितने चमार
आके चले गये लेकिन यह गाट
किसी से नही फटी थी।
लेकिन दुखी चमार यह काम को
स्वीकार करके करने लगता है।

दुखी गाट पर जोर-जोर
से मारने कि कोशिश करता है
तो फटति नही। और वह
मुझे से भुखा और प्यासा
था। तो वह सोचता है कि
अगर हीचीक चीलम मिल जाए
~~एक तंबाकु~~ ~~का~~ ~~म~~ तो पीने कहकर
सोचने लगता है।

तब वो एक गाव में गुरु
है। वह पर जाकर चीलम और
तंबाकु दोनो लेकर आ जाता
है तो, पंडित घासीराम के
दरवाजे पे खड़ा होकर कहता
है कि सरब जी अगर हीचीक
आग मिल जाए तो चीलम
पिने कहकर कहने पर, पंडिताइ
आँग देते समय दुखी के माथे
पे आग गिर जाता है। तो
तब। दुखी अपने आप को ही
कहता है कि मैंने ब्राह्मणों के
घर को अपवित्र किया है। इसलिए
उसका सजा मुझे मिल गया
कहकर लकड़ी की गट फाड़ने में
लग जाता है।

तो वो फाटते - फाटते एक आखरी सास लेते - लेते सो जाता है। तब पंडित अकर कहता है चलो बुढ़ी अब तुम्हारे घर चलते है। इतने मे देखते ही अकड़ा हुआ बुढ़ी मर चुका था।

बुढ़ी को मरने के बाद उनकी स्त्री आकर ज्योर - ज्योर से चीलाने लगति है और उस बुढ़ी चमार की लाश को कोई हाथ नही लगाता है तो तब, पंडित घासीराम अपने ही हाथ से उनके पैर पर रस्सी से बाँध कर गाँव के बहार सड़क के किनारे फेक आता है। और पंडित घर आकर पुरे घर को गंगा जल छिड़क कर स्नान कर के पूजा पाठ करने लगता है।

और उस बुढ़ी के लाश को कुते और कौवे, गिद और गीदड़ नोच - नोच के खा रहे थे।

~~विशे०~~
विशेष:- इस कहानी से यही सीख मिलति है, कि अगर आप कैसे भि बड़ो के बात को स्वीकार करो, लेकिन एक अन्यमेश निच जाति वाला कहकर उससे दुर रहता है वासे हमे इस कहानी से सीख मिलति है।

10

प्र 3.

१. दुखी अपनी बेटी की शादी का आछा दिन निकलवाने के लिए दुखी चमार पंडित घासीराम के घर जाता है।

२. दुखी पुरे दिन से पंडित घासीराम के घर में काम कर रहा था और पुरे दिन से कुछ खाया नही था। तो चीलम पीने के लिए दुखी आँसू मँगाता है।

४. राधा और उनके परिवार सब संत बाबा के पास दुखनि लेने के लिए जाते है। तो तब बाबा नग्न बैठे होते उसे देखकर राधा नही जाती, तो उनका कलश उनको घर से निकाल देता है।

५. राधा साधु के समीप इसलिए नही जाती है की - क्योंकि वह साधु नग्न होता हुआ होता है तो इसलिए राधा साधु के पास नही जाती है।

६. कापंजल का व्रत, नंदन और राधा ने क्योंकि वह जब नाव के पानी में डुब रहा था थी। नंदन और राधा ने उसे बाहर निकाल कर कपड़ा पहनाया तो तब कापंजल कहता है, मेरा व्रत भंग कर दीया कहकर कहता है।

प्र ४

२) पंडित घासीराम :—

पंडित घासीराम एक ब्राह्मन समाज के थे। और उनकी पत्नी का नाम पंडिताइन है। वह एक पुराने रिति नीती ख्यालदार लोग थे। उनके पास जब एक दीन दुखी चमार आता है तो उनको अपने घर में काम लगा कर पंडित घासीराम अपने घर में सोने चले जाते है।

जब दुखी पंडित घासीराम के दरवाजे पे आकर आँगा मँगने लगता है तो तब पंडिताइन कहती है। कौन आग माँग रहा है कहने पर पंडित घासीराम कहते है कि - अरे! वो दुखी चमार होगा बेचारा आँग माँग रहा है देदो कहकर कहता है।

पंडित घासीराम अपनी पत्नि को कहता है कि दुखी के लिए कुछ खाने के लिए देदे ना बेचारा सुबह से भुका है।

दुखी को मरने के बाद कोई भी उनके लाश को हाथ नही लगाता है तो पंडित घासीराम खुद ही अपने हाथ से उनके पैर पे एक रस्सी बंध कर सुबह के धुंधली सी राथ में उनके

लाश को रोड के किनारे फेंक आता है। और स्नान करके घर में गंगा जल छिड़कता है और दुर्गा पाठ पूजा और हवन करने लगता है।

प्र 3.

उ 3) पंडित चमारों में इसलिए जाता है। कि दुर्गा के लाश को कई हाकाने लगवा कुकुकर कहने के लिए जाता है।

Extra

29/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I Ind INTERNAL TEST 2023-2024

Name / ಹೆಸರು: Keerishma Chavan Roll No./ಸ್ಥಾನಕ: 08 Date /ದಿನಾಂಕ: 12-2-2024

Subject/ವಿಷಯ: Hindi - DSC - II Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: I Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಕ: V15KM2-3AU008

Invigilator's Signature / ಕೂಡುವ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

I

1) a) निश्चयवाचक सर्वनाम

2) a) सर्वनाम

3) c) भाववाचक

4) a) विशेषण

5) a) लिंग

II

1) जो शब्द संज्ञा के रुप मे प्रयुक्त होते है या स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग जाती पता चल या है उसे लिंग कहते है। जैसे :- स्त्रिलींग - महिला
पुल्लिंग :- पुरुष

2) जो शब्द किसी लिंग या वचन का कारक का कारण का परिवर्तण नही होता वह अव्यय कहते।

जैसे :- इधर, उधर, तब, अब आदि।

3) जो सर्वनाम शब्द प्रयोग होते है। या किसी व्यक्ति के बारे मे बता दे देने वाले शब्द निश्चयतता बताते है कोई वस्तु, स्थान के बारे में

उसे निश्चयतता सर्वनाम कहते है।

जैसे :- वह कार मेरी है।
यह मोटरसाईकल तुमारी है।

5) जो शब्द किसी एक व्यक्ति की या जाती कर संपुर्ण जाती का बोध करते है उसे जातिवाचक कहते है।

जैसे :- मनुष्य, पशु, प्रणी, पर्वत आदि।

6) संबंध बोधक अव्यय में जो शब्द या व्यक्ति एक दुसरे से बात करते है या स्थान के बारे मे बतते है या एक दुसरे को जान - पहचान करते है उसे संबंध बोधक अव्यय कहते।

III
1) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो कहते है उसे सर्वनाम कहते है।

सर्वनाम की परिभाषा के प्रकार 6 है।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
5. संबंध वाचक सर्वनाम
6. निज वाचक सर्वनाम

① पुरुषवाचक सर्वनाम :— जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होते है। या एक दुसरे को जान पहचान बनाते है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते।

जैसे :— मैं, हम, तुम, आप

② निश्चयवाचक सर्वनाम :— जो सर्वनाम शब्द पास की या दुर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चित संकेत करते है, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे :— मेरे पास 6 आम है
यह कार मेरी है।

③ अनिश्चयवाचक सर्वनाम :— जो सर्वनाम शब्द पास की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चतता का बोध नही होता उसे अनिश्चयवाचक कहते है।

जैसे :— वह कोई आ रहा है।
मुझे कुछ तो खाना है।

④ संबंध वाचक सर्वनाम :— जो शब्द सर्वनाम के स्थान पर प्रयोग करते है की जैसे संबंध वाचक एक व्यक्ति या स्थान के बारे पुछने का संबंध होता है उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते है।

⑤ प्रश्नवाचक सर्वनाम :—

जो शब्द सर्वनाम के स्थान पर प्रयोग करते है। यानी एक वक्ती स्थान के बारे मे पता करता है कि सवाल पुचता है उसे प्रश्नवाचक कहते है।

जैसे :— वह कोन है ?
वह क्या कर रहे हो।

⑥ निज वाचक सर्वनाम :—

जो शब्द सर्वनाम के स्थान पर प्रयोग का संबंध व्यक्ती का निस बोल का प्रयास करता है जैसे हय मे अपना काम कुछ कर लुग उसे निज वाचक कहते है।

जैसे :— मै अपने कपडे स्वयं धो लुगा
मै अपने आप जला जाऊगा।

प्रश्न IV

राष्ट्रभाषा की आवश्यकता राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टी से भी है। निवासी मानने वाले दो व्यक्ति किसी विदेशी भाषा मे बात करे यह हास्यस्पद, असंगत है। दुसरे की भाषा मे काम चलाना भी बहुत कुछ वैसा हुई है। इससे राष्ट्रीय सम्मान मे बट्टा लगता है। विदेश मे जाने पर भारतीय को अंग्रेजी मे बात करते देखकर वहाँ के निवासी आश्चर्य युक्त बैठते है की लगता है।

भाषाएँ तो हमारे यहाँ अनेक है
एक से एक बढ़कर, सुंदर और समृद्ध
हमे हीन भावना के कारण अपने
नहीं अपना पाते। अपनी साहित्य
क और भाषिक समृद्धि पर
बना रहता है।

~~शिक शिक्षक राष्ट्र भाषा~~

शिर्षक :- राष्ट्रीय भाषा

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

1st INTERNAL TEST 2023-2024

Name / ಹೆಸರು: Aishwarya Kallur Roll No./ಸ್ಥಾನಂಕ: 099 Date /ದಿನಾಂಕ: 8-1-2024

Subject/ವಿಷಯ: DSC 2 Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: BA 1st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಂಕ: U15BAHN23A00099

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

प्रश्न I वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

1. 2. संज्ञा
2. 3. पाँच
3. 1. व्यक्तिवाचक
4. 1. प्रश्नवाचक
5. 1. तीन
6. 1. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न II निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

1. क्रिया : जिस वाक्य या शब्द से काम चलने या होने की बोध हो वह क्रिया कहलाता है।

उदाहरण के लिए :

1. तुम तेज दौड़ रही थी।
2. मैं खाना खा रही हूँ।

2. सर्वनाम : जो शब्द संज्ञा की जगह पर प्रयुक्त होता है वह सर्वनाम होता है।

* उदाहरण :

1. तुम पढ़ाई करो
2. मैं जा रही हूँ।

3. अव्यय : जो शब्द लिंग, अवस्था या कोई भी वजह से ना बदलता हो उसे हम अव्यय कह सकते है या अविकारी शब्द भी इसे कहते है।

उदाहरण :

1. मैं या तुम्हे वहा जाना था।
2. फिर भी वह वहा जाती है।

4. लिंग के प्रकार और उदाहरण

लिंग के तीन प्रकार होते है।

1. स्त्रीलिंग
2. पुलिंग
3. नपुंसकलिंग

1. स्त्रीलिंग का उदाहरण :

* मै कालेज को जाती हू।

2. पुलिंग का उदाहरण :

* वो घुसा गया है।

3. नपुंसक लिंग का उदाहरण :

* ये मेरी पुस्तक है।

5. भाववाचक संज्ञा : जिस संज्ञा से किसी भी वस्तु या व्यक्ति या किसी भी चिज का भाव या गुण का बोध कराता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते है।

उदाहरण :

1. वह लकड़ी मज़बुत है।

2. तुम बोहो त खुश दिखती हो।

6. गुणवाचक विशेषण : जो विशेषण किसी भी वस्तु या व्यक्ति का गुण या दोष बताता है वह गुणवाचक विशेषण कहलाता है।

Extra

* उदाहरण :

1. वो लड़की सुंदर है।

2. वो पुस्तक अच्छा है।

प्रश्न 1. किसी भी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए।

1. विशेषण की परिभाषा भेद उदाहरण के प्रकार।

* विशेषण :

अर्थ - जो भी शब्द या किसी वाक्य का विशेषता बताता है वह विशेषण होता है या

या

जिस भी शब्द संज्ञा का या सर्वनाम की विशेषता बताता है वह विशेषण कहलाता है।

उदाहरण :

1. तुम सुंदर हो।

2. तुम दुधमिती हो।

विशेषण के 4 भेद होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1 गुणवाचक विशेषण :

जिस शब्द या वाक्य से या किसी भी चीज से गुण या दोष का बोध होता है वह गुणवाचक सर्वनाम कहलाता है।

उदाहरण :

* उसका लिखावट अच्छी नहीं है।

2. संख्यावाचक विशेषण :

जिस वाक्य या शब्द से संख्या का बोध है। वह संख्यावाचक सर्वनाम है।

उदाहरण :

* दो चार छात्र को बुला कर लाना।

3. परिमाणवाचक विशेषण :

जिस भी वाक्या या शब्द में परिमाण (माप तोल) का बोध हो वह परिमाण वाचक विशेषण है।

उदाहरण :

* मुझे किलो शक्कर दो।

4. सार्वनामिक विशेषण :

जो शब्द संज्ञा से पहले वाक्य में आता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते है।

उदाहरण :

* उसका वह लड़की का नाम पुजा है।

* आप बीजापुर को जाना।

प्रश्न किसी एक प्रश्न लिखिए।

1. सर्वनाम

2. गुणवाचक विशेषण

गुणवाचक विशेषण जो, किसी किसी का या वस्तु या व्यक्ति का गुण, धर्म, रंग, रूप, गंध, दशा या दिशा आदि का बोध कराता है यह गुणवाचक विशेषण होता है।

उदाहरण :

* नटराज एक अच्छा लड़का है।

* पुजा आदत या व्यवहार सभ्य है।

28/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 2023 -2024.

Name / ಹೆಸರು: Renuka. v. kotakar Roll No./ಸ್ಥಾನಂ: 115 Date /ದಿನಾಂಕ: 12-2-2024.

Subject/ವಿಷಯ: DSC - 2 - Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: I th Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಂ: U15KM23A0117

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 27/30

प्रश्न 1)

1) 1) निश्चयवाचक सर्वनाम

2) 1) सर्वनाम

3) 3) भाववाचक

4) 1) विशेषण

5) 1) लिंग

6) 1) रीतिवाचक

प्रश्न 2)

1) जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ती का जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते है।

2) जिन शब्दों में लिंग वचन कारक आदि के कारण से कोई उपयोग ना होते उसे अव्यय कहते है

3) सर्वनाम पास की या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चित संकेत करते है वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते है

4) जिन शब्दों में किसी व्यक्ती वस्तु या स्थान का जो बोध होता है उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है

5) जिन शब्दों में संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक सर्वनाम कहलाते है

प्रश्न 3)

1) सर्वनाम : संज्ञा के जगह पर प्रयोग होने वाले शब्दों को ही सर्वनाम कहते है

जैसे : आप तुम हम आदि

सर्वनाम में छे भेद होते है

1) पुरुष वाचक सर्वनाम

2) निश्चयवाचक सर्वनाम

3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

4) जातिवाचक सर्वनाम

5) संबंधवाचक सर्वनाम

6) निजवाचक सर्वनाम

1) पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों में किसी व्यक्ति के बारे बोलना हमें दिखाई देते है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है

1) बोलने वाला
2) सुनने वाला
3) अन्य व्यक्ति के बारे में बोलने

पुरुषवाचक में तिन भेद है

1) प्रथम पुरुष
2) मध्यम पुरुष
3) उत्तम पुरुष

2) निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों में एक निश्चित स्थान मिलता है उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है

उदा : 1) यो मेरा पुस्तक है
2) मेरे पास आठ आम है

3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

जिन शब्दों में एक निश्चित संख्या ना मिले उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है

उदा 1) आज कक्षा में कितने ही छात्र थे

5) जातिवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों किसी वस्तु या व्यक्ती की जाति का जो बोध होता है ना उसे जातिवाचक सर्वनाम कहते है

5) संबंधवाचक सर्वनाम

जब किसी भी व्यक्ती या प्राणी के बारे हम बात करते है उसे संबंध होता है उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते है

6). निजवाचक सर्वनाम :

जिन शब्दों में निज संगती हमें पता चलता की सही सही है जैसे हम कहते है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते है

जैसे हम सर्वनाम की परीभाषा और उसके बेहेंको देखते है

प्रश्न 5).

भारतीय व्यक्ती कोन्से भी देश - विदेश में गये तो भी हमारी मातृभाषा को हि बोलना है किसी अंग्रेजी में बात करना यह हमारी संस्कृती नहीं है. हमारा ही साहित्य इतना बड़ है हम दूसरों के सिहित्य पढ़ना लिखना अच्छा नहीं है

हम दूसरोंके भाषा का उपयोग किया तो हमारे राष्ट्रीय सम्मान में बहुत नुकसान है इसलिए हम हमारे ही भाषा बोलना है।

2 7/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

2nd INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : सागर राठोड Roll No./ಸ್ಥಾನ : 175 Date /ದಿನಾಂಕ 10 -2-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिंदी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : I st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM23A0177

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 30

प्रश्न २. ए

01] २. मानवीय संवेदना

02] २. ~~रक्षिका~~ 3. आत्मसंरक्षक

03] २. रमीला

04] २. कलम

05] २. मीठा

06] ~~६~~ २. दलित

प्रश्न-२. बी

01] अमतुन रहमान की रट इसलिए देख रही थी कि- उनके घर में बारिश के कारण पानी अंदर आ रहा था तो अमतुन रहमान की रट देखती है

02] रमीला चिड़ियों की बुंद रही थी। क्योंकि वह पिंजरे में नहीं थी। वह सविता के पास थी।

03) कमल कि माँ जब कमल हरिश को अपने घर लाता है तो तब कमल कि माँ हरीश और कमल को अलग - अलग थाली में खाना परोसकर भेदभाव करती है।

04) अमतुल अपने बेटो के प्रति इसलिए दुखी है कि - जब उनको अपने बेटो कि जरूरत थी तब चारों बेटो में से एक भी नहीं आता है तो अमतुल दुखी है।

05) रंगा हरीश पर इसलिए क्रोधित थे कि हरीश उनके घर पर सलाम माँगने नहीं जाता है तो तब रंगा हरीश पर क्रोधित थे।

प्रश्न - 3 :-

2) ओमप्रकाश वाल्मिकी जी का लिखा हुआ सलाम कहानी में दलित वर्ग वालो का हुआ आधार सम्मान वाला विषय को ओमप्रकाश वाल्मीक ने इस कहानी सलाम में समझाया गया है।

इस कहानी के मुख्य पात्र जो है - स। कमल अध्यापक जो ब्राह्मण वर्ग का था और वो अपने मित्र हरीश की शादी में आया हुआ था। और दूसरा था हरीश जो निच वर्ग और चमार जाती का था। तो यहा पर हरीश के शादी के बारे में बताते हुये वर्णन किया गया है।

जब एक दीन हरिश
कि शादी हो जाती है तो तब
वो गाँव के एक सरकारी पाठ
शाला में बारात ठहरी हुई होती
है। तो कमल गाँव में चाय पीने
जाता है। तो वहा का चाय वाला
उसे तुम चमार के घर पे
आनेवाले बाराती हो, कहकर
बोला चाय दिये पूरे गाँव
वालो के सामने उसे अपमान या
लज्जित करके वहा से भेज
देते है।

कमल असहाय वहा से
वापस आकर छोटा सा मुंह करकर
चुप बैठा हुआ होता है। तभी
वो सोचता है कि - एक दीन
उसकी माँ ने भि हरिश और
मुझे अलग - अलग थाली में
खाना परोसा कर अपमान किया
था। तब तब

सुबह गाँव के मुखिया
आये हुए थे और हरिश के
ससुर से बात करते हुए वो
ये कहते है कि - सुना है कि
आपका दामाद चमार ज्याती का
है, तो उनका कहो तो तब
उनके ससुर कहता है कि
हरिश बेटा तुमका सलाम मांगना
जाना है, कोककी ग पुराणो सलो
से ये रिवाज चल रहा है।
तब हरिश कहता है कि मै
सलाम माँगने नही जाउगा. तब
गाँव के मुखिया और हरिश
के बिच बात संवाद बढने
लगती है।

तभी कमल आता है और क्या हुआ पूछकर कहने पर उन्हें भी हरिश बक्स में बैठा देता है। और तभी गाँव के मुखिया आदेश देके जाता है कि - अगर आपका दामाद सलाम मांगने नहीं आता है, तो बारात इस गाँव से नहीं जाएगा कहकर चला जाता है।

इस कहानी से यही समझ आता है कि - जब उस पुराने जमाने में दलित वर्ग या जाति वालों को कितना अपमान सहना पड़ता था और लोग करते थे। यही इस कहानी से लेखक हमें समझा रहे हैं।

प्रश्न - 4

2) चिंता चिता के समान है।

यहा पर इस वाक्य में यह स्पष्ट हुआ है कि अगर हमारे अंदर चिंता बहुत है तो हमारा मृत्यु हो सकता है। और हम चिता भी बन सकते है।

चिंता जो है वो हमें एक मानसीक तोर से हमें कमजोर बनाता है। और इनके वजिया हमारा मृत्यु भि हो सकता है। और हम चीत में भी जा सकते है।

अगर हम मर जाते है तो हमें आखिर में चीता के उपर जाना ही पडता है।

हर एक आदमी या प्राणी पक्षी हो उन्हें आखिर में चीता में जाना ही पडता है।

29/30

UUCMS- U15KM23A0113

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : Umesh L Chavan Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : 113 Date / ದಿನಾಂಕ : 6-1-2024

Subject/ವಿಷಯ : B. Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : I st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM23A015

Invigilator's Signature / Signature of Evaluator / Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 27/30

I

1) राक टोकरी पर मिट्टी

2) आठ

3) ट्रेस

4) छाया।

5) किशोर सिंह

6) दलित

II

1) संदर्भ :- प्रस्तुत वाक्य को प्रेमचंद द्वारा लिखित सद्गती पाठ से लिया गया है। इस वाक्य को पंडीताईन पंडीत घासीराम से कहती है।

स्पष्टीकरण :- दुखी चमार सुबह से कुछ नई खाया था। वह सुबह से दोपहर तक पंडीत के घर में लकड़ी फोड़ना, भूसा भरना, आँगन लीपने का काम कर रहा था। दोपहर के समय पंडीत घासीराम खाना खाने के लिए बैठ जाता है। पंडीत खाने के बाद कुछ दो-चार रोटीयाँ बच जाती है। तब पंडीताईन को दुखी पर दया आती है और पंडीत से कहती उसे कुछ खाने दे दिजीए। तब पंडीत कहता वह जात से चमार है सेर भर खाता है इससे उसे क्या दो। तब पंडीताईन ने यह उपर्युक्त वाक्य को पंडीत से कहती है

तात्पर्य :- इस कहानी के माध्यम से लेखक यह बताया है की समाज ऊँच जाती के लोग नीच जाती के लोगों का शोषण करते है। यह पंडीत ने भूखे दुखी खान को कुछ देने से इनकार करके मानवीयता भूल जाता है और जाती निंदा करके दुखी इस कार्य करवाता है।

2) संदर्भ :- प्रस्तुत वाक्य को जयशंकर प्रकाश द्वारा लिखीत कहानी शरणागत से लिया गया है। इस बात को मालीस सुकुमारी से कहती है।

स्पष्टीकरण :- जब बाढ़ के कारण सुकुमारी यमुना नदी में फँस जाती तब युरोपीयन दंपती विलफ्रेड और मालीस इसे बचाया था। सुकुमारी को बचाने के कारण रंगपुर के जमीनदार और सुकुमारी के पती किशोर सिंह ने उन दंपती को घर बुला लाया है और उनकी अच्छी तरह से आथीत्य सिकार करता है। जब सब लोग कुर्सी पर बैठते है तो सुकुमारी नहीं बैठती है। जब किशोर सिंह, विलफ्रेड और मालीस खाना खाने के लीए बैठे रहते तब बार-बार मालीस की नजर सुकुमारी के ओर जाती रहती तब मालीस "आप क्या यहाँ भी न बैठेंगी? क्या यहाँ भी कुर्सी है?" इस सुकुमारी को कहती है।

तात्पर्य :- इस कहानी के माध्यम यह पता चलता है की भारतीय नारी अपने पती के लिए रहनेवाली मान, सम्मान, गौरव दर्शाया गया है।

III

1) प्रस्तुत सद्गति कहानी के लेखक है प्रेमचंद। इनका जन्म 1880 उत्तर प्रदेश के लमही गाँव में हुआ। हिंदी साहित्य के सब लेखक माना जाता। हंस, माधुरी, और जागरण इनकी पत्रिका संपादन है। इनकी कहानी संग्रह को मानसरोवर कहा गया। इसको आठ भागों में संकलित किया गया है। इनका मूल नाम धनपतराय था। प्रेमचंद जी का देहांत 1936 में हुआ था।

झुरिया ने पती दुखी से कहती है अपनी बेटी के शादी का आमंत्रण पंडीत को दे आओ क्यों की वह उनको शुभ मुहूरत निकालकर दे। इस दुखी पंडीत के घर जाने के लिए तैयार हो जाता लेकीन वह खाली हाथ नहीं जा सकता इसलीए वह दाल, गुड़, अनाज लेकर जाता और साथ में गया के लिए कुछ घास भी ले जाता है।

जब दुखी पंडीत के घर जा पहुँचता है तब पंडीत कहता क्या रे दुखीया आज कैसे आया हुआ तब दुखी कहता पंडीत जी शुभ मुहूरत निकालनी है बेटी की शादी है। तब पंडीत कहता है अब नहीं शाम को चले जाना है तो तुम कुछ काम करो कहकर दुखी को भूसा भरना, लकड़ी फोड़ना, आँगन लीपने का काम दे देता है।

दुखी ने मुबह से कुछ खाया नहीं था लेकीन यह काम करने के लीए मान लेता है क्यों की वह काम नहीं किया तो पंडीत जी नहीं आएँगे। वह काम करने लग जाता लेकीन इसने कभी भी लकड़ी चीरने का काम नहीं किया था। यह घास काटता था घास इसके सामने सिर झुका देता है। लकड़ी को जोर-जोर से मारता रहता है लेकीन वह फटती नहीं रहती। सभी गोड़ आकर कहता क्यों अपने आपको मार लेना चाहते हो यह नहीं फटेगी

जब दोपहर को समय पंडीत खाना खा लेता है लेकीन घर के बाहर दुखी भूखा पेट लेकर काम करता रहता है। पंडीतईन को दुखी पर दया आती पंडीत से कहती की उसे भी कुछ खाने के लिया देदो तब पंडीत कहता वह जान से गमार है उसे दो-चार रोटी से क्या होगा। मेरे घर गाड़िया हैं उसने भाती निंदा करता है। जब दुखी की भूख नहीं संभल पायी तो उसने गाँ के पास से चीलम लाया लेकीन उसके पास आग नहीं थी। वह आग माँगने के लिया पंडीत के घर में चला जाता तब पंडीतईन डाँटती है। जब पंडीतईन आग देने के लिया आती है तब दुखी उससे साफी माँगलेते लेकिन वह दुखी घर में घूँसने के कारण पंडीत ने अपवीत्र मानकर घर में गंगजल छीड़कता है।

सुबह से शाम हो गई लेकीन दुखी को खाने के लिया कुछ मिला इसके कारण उसकी सद्गती हो जाती। यह बात पंडीत को पता चली तो जमीन पर पड़े दुखी को उठाने प्रयास करता है लेकीन वह नहीं उठाता। जब मुरीया को पती के मरने की खबर आयी तो वह पंडीत के सामने आकर रोती और चली जाती लेकीन एक चमार तक नहीं गया। सब लोगों ने मिलकर पुलीस को सहारा लेना चाहते हैं लेकिन वह पंडीत और जाती के डरने कारण पुलीसने कुछ नहीं किया। जब मुर्दे से बदबू आने लगी तब पंडीत सुबह जल्दी ही उठकर एक रस्सी से मुर्दे के टाँग को बाँधकर वह घसीटते हुआ गाँव के बाहर मुर्दे को फेंककर आता है। घर आते है वह गंगजल डालकर स्नान कर के अपने आपको पवीत्र मान लेता है। वह दुखी का

मुर्दा पड़ा शरीर गिद्ध, कुत्ते, कौआ का आहार बन चुका। इस तरह दुखी की अंत्यक्रिया तक नहीं चलती है।

इस कहानी के द्वारा हमें पता चलता है की भी समाज ऊँच जाती के लोग निच जाती लोगों का शोषण करते है। और अपने आप को बड़ा मानकर दलितों पर अपना दर्प, दबदबा दिखाते रहते है।

IV

दुखी नाक चमार जाती का है। उसकी पत्नी झुरिया रहती है। झुरिया पत्नी दुखी की बेटी के शादी का मूहूरत निकालने के लिए पंडित को आमंत्रण करने के लिए करती है।

दुखी जब पंडीत के जाता है तब उसके साथ दाल, गुड़, राशन कुछ अनाज और साथ में घास भी ले जाता है। पंडीत उसे बहुत सारे काम लगाता है लेकी उसे घास के लिए कुछ नहीं देता। भूँख मार की उसकी सद्गती हो जाती है।

इस कहानी के माध्यम से पता चलता है

27/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : प्रिया . पवार Roll No./ಸ್ಥಾನ : 104 Date /ದಿನಾಂಕ : 9-1-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिन्दी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM22A0170

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29/30

प्र - 1

1. 2. जालंधर

2. 3. जुदाई की शाम की गीत

3. 2. मध्य

4. 3. 2563

5. 2. बादल की मृत्यु

6. 2. आधुनिक

प्र - 2.

1. फाक अफीम की कीमत कहानी के लेखक डॉ. रामकुमार है। इस कहानी का पात्र मुरारी मोहन और लाला

1. मुरारी मोहन अपनी पसंदी लड़की से शादी करना चाहता है। पर उनके पीता जी अपनी लीची लड़की से शादी करना चाहते है इस लिये मुरारी मोहन आत्महत्या करना चाहता था।

2. 'आर्ट सर्कल के मुख्य श्री धीरेंद्र दत्त ने अपनी नाटक के लिये कहानि लेखक द्वारा श्री दत्त मोहन को नाटक के लिखने को

बुलाया है।

3. साहब को प्रकाम है मैं रंग भूमी के 'आर्ट एक सर्कल' ~~नाटक~~ नाटक के बारे में। श्री दत्त साहब के बारे में ~~कक्षा~~ कक्षा के बारे में है। मध्य

5. विश्वमोहिनी पीता को दहेज देकर नाक शादी नाकरे और पीता जीका दहेज का बोज ना ~~है~~ करे। और दहेज के कारण विश्वमोहिनी आत्महत्या करना चाहती है।

6. नाक तोले अफीम की कीमत में आधुनिक विचार करने युवक और युवकी ने शादी के विचार लेकर चित्रण कीया है।

प्र-3.

1. एक तोले अफीम की कीमत कहानी के लेखक डॉ. रामकुमार वर्मा ने एकांकी रचीत किया है। और स्पथुत युवक के बारे में है। और आधुनिक काल के शादी और वीचार के बारे में डॉ. रामकुमार ने इस एकांकी में कहा गया है।

मुरारी मोहन ने एक विद्यालया में पढाई कीया है और आधुनिक विचार वाला युवक है। और उनका एक दुकान है व अफीम की। उनके पीता उसे सम्भाल ते हैं। एक दीन उनके पीता अफीम खतक होने के कारण बीहार में दुसरे शहर में अफीम खरिद ने जाते हैं। और घर में काम करने वाला बुकान का चौके दारि को बुकान सम्भाल ने कहता है। और मुरारी मोहन पर नझर रकने कहता है। रामदी को केहकर मुरारी मोहन के पीता लाला सीताराम ने केहक जाते हैं।

मुरारी मोहन ने इसी एक समय का मौका उठाता है और रामदीन को घर जाने कहता है। रामदी मना करता है और बात छित में रामदी ने शादी के बारे में कहता है। उसकी शादी उसके पीता को मरडी से हुयी है। और मुरारी मोहन को रामदी कहता है की 'यहाब आत शादी करलो' मुरारी मोहन ने कहते हैं की मैं शादी नहीं करूंगा। मैं उस लड़की के सात शादी करूंगा की मेरे पसंद की लड़की से और आधुनिक विचा वाली। पीता के पसंद की लड़की से शादी नहीं करूंगा।

मुरारी मोहन ने रामदीन को घर भेज देता है। और आत्महत्या करने को अफीम लेता है। उसी समय एक लड़की आती है। और अफीम तूछ तीहाँ। व लड़की विश्वसुंदरीलाहीनी वक्षी आत्महत्या करना चाहती है। क्यों व उसके पीता जीको दहेज देकर शादी करने धन नही है और उनके पीता जीके कोई तकलिफ नही देना नही चाह तीहैं। और दहेज के कारण आत्महत्या करना चाहती है।

इस संदर्भ में दोने को बता चलता है की व दोने शादी के कारखा आत्महत्या करना चाहते है। एक बात करके। और उनके आपस में बता चलता है की व दोने एक ही वीचार वाले है व आधुनिक वीचार और मोहने शादी को विश्वमोहनी को पीचता है। और मीना दहेज के शादी को पीचता है।

इस कहानी के एक आधुनिक युवक और युवकी के वीचक में और घर में बड़े लोग के वीचक और उनके शादी का वीचक लेकर इस कहाकी में वीवर कीया है।

9½

प्र - 4.

1. 'साहाब का जुकाम हवा है' फांकाकी को लेखक अश्क के रचित कीया है। और व फाक नाटक के बारे मे लिखित कीया है। और इस फांकाकी मे श्री दत्त साहब है।

इस फांकाकी मे श्रीधीरेन्द्र दत्त फाक धनी व्यवसायी है और 'आर्ट सर्कल' के मर्ख है। श्री धीरेन्द्र दत्त ने सभि 'आर्ट सर्कल' और 'रंग भूमी' लोगों को ~~अमन्त्रित~~ आमि आंमंत्रण कीया है। और सभि अच्छे रंग कलाविद को आंमंत्रण कीया है। और उसमें फाक लेखक मोहन गुप्ता भी आये है। और उस छोड़ पार्टि में। सारे लोग दत्त साहाब के बगीचा मे बात छीत करते है। सारे आये लोग श्री दत्त साहब के नाटक 'शहजाद सालीम' के बारे मे बात कहे है और मर्ख प्रार्त मे शहजाद नारायण है। और सारे इस नाटक के बारे मे बात कहते है। और उसी बात छीत के समय के दत्त साहब के सर्कति और चपरासी आते है और कहते है की दत्त साहाब का जुकाम हवा है। सारे लोग चले आते है। मोहन गुप्ते को चपरासी शेकल ती और दत्त साहब आते है व जुकाम फाक बहाना था। दत्त साहब फाक नाटक करते है उसके लेखक मोहन गुप्त है व नाटक के लेखक मोहन गुप्त।

29/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು: Shruti, B. Konal Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ: 27 Date /ದಿನಾಂಕ: 9-1-2024

Subject/ವಿಷಯ: DSC-6 Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ: U1SKM22A0008

Invigilator's Signature / ಕೂಡಿಸಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

I

1) जालंधर

2) पिंजरा

3) 1963

5) बादल की मृत्यु

6) आधुनिक

II

1) मुरारी मोहन आत्महत्या कलकी अपकी पीता श्रीराम ने रोक उनपढ़ लड़की से शादी करने के ~~रहने~~ लगी इस लीए मुरारी मोहन आत्महत्या कर रहा था,

2) श्री टन साहेब को इसलिए बुलाता है कि श्री टन की ~~रचना~~ जी मोहन के द्वारा लिखित नाटक को रंगा मंदीर में लाना चाता था इसलीए महोना को बुलाया रहता है,

3) राहुल को जुकाम है से समाज के बारे में है कि समाज की बीच में खड़े होकर उसकी समस्य ओं को सचाई सुनी पर सहने का प्रखारय चित्रण किया है,

4) एक तोले अफिम की कीमत के अनुसार समाज के इस हेड़ के कारण बड़ोत सारी लड़की के परिवार आत्महत्या का सीकार होते है सयस से हेरेज से दुर रहना चाहती है,

5) विश्वमोहिनी ने शादी करने के लीए 5 तोला सोना और 6000 रुपये हेरेज को बोलती है इस लीए विश्वमोहिनी आत्महत्या करने को चाहती थी,

III

10 x 10 = 10

7)

एक तोल अफिम की कीमत इस पाठ से मुरारी मोहन ने अम सबी लोग को यह इस कहानी में मुरारी मोहन ने आत्महत्या करने की लीए सोचा रहता है बल्की उसकी पीता सीता राम ने मुरारी मोहन को एक अनपढ़ा लड़की से शादी करने को बोलती है इस लीए एक दीन मुरारी मोहन ने ने एक पत्र लिखता वह एक लड़की विश्वमोहिनी मुरारी के पास आत अफिम लेने के लिए मुरारी को पति बोलता है की अफिम किया लेने जारहा है

विश्वमोहिनी को मुरारी ने एक थपलोट देता है विश्वमोहिनी ने को लेने जाता है उस दवाई लेती है विश्वमोहिनी को चकर आने लगता है हो चकर आके वही नीचे गिर जाता है,

थोड़ी समयके बाद विश्वमोहिनी
को होश आया है बाद कानेका बाद
वो मैं मरा नहीं हूँ वैसी ही
विश्वमोहिनी सोचती है विश्वमोहिनी
मुरारी के पास आता है कौनसी
दवा तुमने दीया था मैं कित नहीं
मरा मुरारी को पुछती है,

मुरारी विश्वमोहिनी को पुछात है
तुम कित आत्महत्या करना चाती हो
बोलती विश्वमोहिनी और मुरारी मोहन
दोनो आत्महत्या करना चाती तो मुरारी
ने उसको पुछा तुम किवें मरना
चाती हु विश्वमोहिनी ने मुरारी को
बोलती है मुझे शादी करने के लीए हैंडेज
मानक है 5 तोला सोना और 6000
पैसी देना चाहीए बोलती है यहा
विश्वमोहीणी ने मुरारी को बोलती है

यह मुरारी मोहन का पीत लाल
सीतराम ने मुरारी को एक अनपढ़
लड़की को साथ शादी करने को
लिए सोचती है यह मुरारी मोहन
ने विश्वमोहीणी को यहा सभी साथ
बोलती मुरारी मोहन और विश्वमोहिणी
दोनो की आत्महत्या करने को सोचती
है दोनो का भी समर्थ रहती इस
भी दोनो भी पत्र लिखकर मरको तयार
होता है अगर दोनो कहानी खुनकार
यहा मुरारी मोहन और विश्वमोहीणी
दोनों एक बिस्तार को आता है

मुरारी मोहन ने विश्वमोहिणी को
पुछता है मुझे अनपढ़ लड़की नहीं चाही
है

तुम्हे देखने लोगवाल लड़का नहीं
जाहीहै दोन का सामर्थ ही तो है
है दोनो आपसमे एक बात मुरारी
पूछता है यहा मुरारी मोहन के
विश्वमोहिणी को बोलती मुझे कोई
देखने नही जाहीहै बलकी एक अच्छे
पढ़ी ऊही संस्कारी लड़की जाहीहै
मुझे ना तुमारी देखने जाही मुरारी
मोहन मुझे एक देखने नही है
मुझे तुमसे कुछभी नही जाही
बलकी एक अच्छी लड़की जाहीहै
तुमारी पीताजी से एक बात पुछो
ईसी बात विश्वमोहिणी को पुछाने
को कहाती है,

यहा विश्वमोहणी ने उसका पीता
जी को पुछने को चला जाता है,

IV

1)

श्री टन साहब ने साहब को जुकाम है इस पाठ को लिखा है यहाँ यह श्री टन साहब ने आठ कंपनी के मालिक या कंपनीमें चार पांच लोग काम करती है. एक दीन श्री टन साहब ने सभी आठ कंपनी लोगको चाय या पीने के लीए आठ कंपनी में आमंत्रण देते है सभी लोग को आठ कंपनी लोग का भी आमंत्रण दीना है यह सब लोग भी चाय यहा सब लोग को चाँ का आमंत्रण देता है आठ सरकाल को आने के लीए बोलती है.

श्री टन साहब ने एक एक आठ सरकाल से सभी लोग आता श्री टन साहब ने सभीका बारेमें पुचता है बोलती रहा था अब सभी लोग एक आठ सरकाल में एक कवि ता धिरेंद्रनन भी था सभी लोग वह चाँ आय ता चाँ पीकार सभी लोग का बारेमें बोलरहीत सभी लोग चाँ पतेये सान में बैठकार पी रहा था

वह सेकरेट श्री टन साहब का सेकरेटी और चौकिदार आकार अब परती भी आकार बोलती है की सबको जुकाम होगया है तो बड़ी सकती है ईसी चौकिदार ने आकार बोलती है पारती में आया सभी लोग वापस चली जाता है,

28/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

2nd INTERNAL TEST 2023-2024

Name / ಹೆಸರು: Bindu Rathod Roll No./ಸ್ಥಾನಂಕ: _____ Date / ದಿನಾಂಕ: - -20

Subject/ವಿಷಯ: Hindi DSC 6 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: ____ Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಂಕ: _____

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಿಕೆದಾರರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 30

I)

1) चार

2) भाववाचक

3) औपचारिक

4) कवि

5) तत्सम शब्दों के उदाहरण

6) कारक

II)

1) मोलाभाव चंद्रमाल में गति रखता है की उसमें आप को कोई खास चीज पसंद का आदि हो तो उसे उठाकर रखना। और खाते हुए में अपनी आवाज से लोगों को डिस्टर्ब करना करके गति रखता है।

2) मजदूर को मिस्त्री के अलावा मजदूर व्यवसाय के लिए सही मजदूरों को इकट्ठा करने के लिए महत्व तो है।

3) चंद्रमाल मोलाभाव के माध्यम हुए लिए आता है ना कारीगरवाल भाषा में आवश्यक सामग्री को चोरी के लिए आसान रहता है।

5) अमीर पात्र में युवती के पिता तथा रूपक के पिता हमेशा और इस बारात के विवाह का बात चीत करते उभरे रहते हैं।

6) हमेशा और बारात का पहला मुलाकात बारात के बड़े बहन का रूपक का शादी में पहली मुलाकात हुई थी।

IV)

2) सोलाबाय :-

इस प्रस्तुत पाठ को हमारी पाठ्य पुस्तक के पाठ पुस्तक से के मकड़ी की कथा के माध्यम से लिखा गया है। जो रूपक जयाडेर चंद्र माथुर

इस पाठ में सोलाबाय पात्र मुख्य पात्र है। और सोलाबाय बंदरगण को उनके तरह रहने का प्रयास होता है। और वह बंदरगण पात्र को सोच रखने वाला रहता है। वह सोलाबाय वह कहता है। की उसमें उसकी पैरा पांवों से काम करना है।

से उसकी दूसरी रमेश चंद्र की उपहास छोड़ा हुआ बंदरों में से उसकी खुली आखों से स्वप्न महल की आदात रखना उसे कहता है। तब वह कहता की मैं हवाई विचार करके बताया है। कहकर चला जाता है। और फिर दूसरे बार सोलाबाय और उस उसकी अपने विश्वास से उसके अपने बात करता है।

इसके बाद अमर उजाला
पत्रों पूरा है। कहा हम यह कहते
कि वह कहता है कि वह यह
नहीं कर है करके उसका उपयोग
बोल रहे और वह कहता है कि
सोलाबाय हुए हमें पहले अंश है
ते। और अगर तुम्हें तुमारा यार
मेरा-मेरा साहस और इस बारे में
पहले है। वह सोलाबाय कहता है कि
पर अगर तुम तुमारा में सीधे तीर पर
लिख है करके बताता है।

और अंत में
सोलाबाय कहता है कि वह कल से
काम में आरम्भ कहता और सुबह
इस राष्ट्रपति वह पांचमें में अयोग्य
सोलाबाय बताया है।

III)

3) इस प्रश्न का उत्तर में हमारा मानना
है कि पाठ पुस्तक के अन्त कहे
का लेखक का मानना है किस तरह
है। जाने के मानना है
लक्ष्मीप्रसाद प्रसाद के द्वारा रचे हुआ
है।

इस मानना में चार दृश्य
आते हैं। वह अपने युवक पति
शंकलाल और युवक के पिता
जग रहे थे। वह अपना बेटा
बारात का विवाह भव के मालिक
शंकलाल के बेटे धर्मेन्द्र के साथ
करना चाहा है। वह नहीं मानता
है।

एक युवक था जो साधारण परिवार
से था एक युवक है और एक
था जब साहब का लड़का है।
और युवक का नाम है और
लड़की आरती है।

वह आरती और
नीरज पहले से ही एक दूसरे को
चाहते थे। पर आरती के
पिता एक साधारण लेकिन इन्सपेक्टर को
एक बड़े साहब की लड़की के
साथ विवाह करना नहीं होता
है कहकर कहता है। और एक दिन
उस युवक हार साधारण आरती के घर
अपना कुछ सामान लेने के लिए
उसके प्रेमिका से मिलने जाता है
तो वह जब साहब
मिलने नहीं देते हैं। और कहता है
कि वे एक सपना से कभी छुटकारा
लेना है। करके उसे अपमानित करते
हैं। और कुछ दिन के बाद
वह एक इन्सान बनकर वापस आता
है। तब युवक के पिता उसके हाथ
और अपनेको रुतबे पर झुककर मेरे
हाथ की लड़की साथ उसी की
बेटी से शादी करने को कहता पर
वह नहीं मानता है।

एक दिन युवक
पिता और युवक के पिता दोनों
मिलकर उस अलफीज पार्क को चले
तो वह इसलिये उदास रहते हैं कि
वह और डॉक्टर का शादी के कारण
वह उदास रहते हैं। लेकिन वह
नहीं मजबूर है। वह कहता है
मैंने मा पहले नीरज और उसके
अमीर लड़की को छोड़ा
लेकिन तब उसको मुझे उपमानित
करके घर से निकाल दिया

था। और उसका आप मुझे
उसमें से बेटी के स्थान आपके
रूप में प्रस्तुत करूँगा। यह कथन
है। मूर्ख को 6 हजार रुपये और
पान वाला। फिर साहिब कहता
है। वो वह अंत में कहता है
उसको दिखते माल देता है। कहे
आप को और उस ने का आड
हांगता है।

23

29/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

INTERNAL TEST 2023-2024

Name / ಹೆಸರು : प्रिया पवार Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : 104 Date / ದಿನಾಂಕ : 11-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिंदी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM22A0170

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 27/30

प्र 1.

1. २. १९८२

2. २. जमानि

3. २. जनकवि

4. २. महादेवी वर्मा

5. २. २९ मई १९०६

6. २. वैद्यनाथ मिश्र

प्र - 2.

1. संदर्भ :- इस वाक्य के कवि हरिशंकर परसाई 'में 'नर्क से बोलरहा हूँ' से चुनी गई है। "मूर्ख कायर, तू कुत्ते से भी हीन है। बेचारा कुत्ता दीवाल को लाँघकर घुस गया और खाना खा आया", इस वाक्य को भगवान कहा।

स्पष्टीकरण :- मैं नर्क से बोल रहा हूँ, मैं मानव ने भगवान से प्रश्न करता है की मैं नर्क में हू पर इस बात का नही दुःख है। पर मेरा कुत्ते स्वर्ग स्वर्ग में है। मैंने कोई पाप नही की पर मैं नर्क मे हूँ। मुझे न्याय दिजिये। मनुष्य भगवान से पुछता है। तब भगवान कहता है 'मूर्ख कायर, तू कुत्ते से भी हीन है। बेचारा कुत्ता दीवाल को लाँघकर घुस

गया और खाना खा आया" कहते है।

इस संदर्भ मे भगवान ने मनुष को सीढ़ि पर से उतर देते है। और कोई भी शक्त को सदा काम करके जिवन रूप करना चाहते।

2. संदर्भ :-

इस वाक्यो को कवि हरिशंकर परसाई ने "मैं नर्क से बोलरहा हूँ" पाठ से लिया गया है। इस वाक्य को मनुष को भगवान कहते है "पाप पुण्य के झमेले में पडनेवाले कायर"।

स्पष्टीकरण :-

इस वाक्य में भगवान ने मनुष को मुर्ख कहते है और पाप पुण्य को मनुष जिवन मे खुद बनाया है। आदमि ने इस को रूप किया है। इस परह से भगवान ने कहते है।

इस वाक्य से कवि कहते है की भगवान ने कोई तरह से रूप नही किया आदमि ने इस तरह से पाप पुण्य का निर्माण किया है। और मनुष मुर्ख है काम नही करत हात पाँव है पर काम नही करता इस पर हँस भगवान ने कहते है।

प्र-3

२. महादेवी वर्मा ने स्त्री का स्वातंत्र्या का बारे मे पूर्ण तरह से निबंद लिखा है। महादेवी वर्मा ने कहते है कि स्त्री को स्वातंत्र्य पहलेन अधिक काम मे भाग करते थे। पर अब स्त्री को कोई काम मे अधिक परिश्रम मे नही लिया जाता। महादेवी वर्मा ने कहते है। कि अधिक स्तन मे कोई ~~काम~~ काम और अनेक जगा मे भाग नही लीया जाता। स्त्री येकी पुरुक पुरुष को आदि स्थान है। भारत एक पुष प्रधान राष्ट्र है। और पुरुष को अधि काम ~~को~~ लिया जाता है।

महादेवी वर्मा एक महान कवि और लेखक है अनेक पाठ भी लिखा है। महादेवी वर्मा स्त्री का स्वातंत्र्य को बारे मे कहते है कि स्त्री को पिता के कोई अधिक मे हिस्सा नही है। पीता के काम मे भी नही लिया जाता और स्त्री को पुरुष पर निर्भर होता है। स्त्री सिर्फ पूर्ण और संतान कलिये है और स्त्री को घर मे सारे काम करने और घर के देखभाल करने को रखा है। इस जमाने मे स्त्री को अधिक स्वातंत्र्य नही है। कोई भी काम करने जाना है तो घर मे रहने वाले बडो का ~~ब~~ अनुमति लेना है ~~उस~~ उस काल ~~मे~~ स्त्री को अधिक प्रश्न का सामना करता पडता है। महादेवी वर्मा उस तरह से स्त्री कि स्वातंत्र्य में अधिक कष्ट है। आदि काल मे अधिक स्वातंत्र्य था। पर स्त्री को अनेक ~~काम~~ भाग होती थी। और स्त्री को सारे भाग मे सहायता मिल ~~थी~~ थी। महादेवी वर्मा ने इस काल और आधुनि काल को एक तरह इस एक दृष्ट से रट किया है।

स्त्री और पुरुष के अंतर मे लिंग का भेद-भाव करते है। और अधिक स्थान नही दीया जाता है। स्त्री को कोई स्थान में आसानि से नही दिया जाता है और पुरुष को सारे स्थान मे आसा निसे दिया जाता है। महादेवी वर्मा ने कहते है कि स्त्री को आदिकाल मे शोषन भी दीया जाता था और स्त्री को अनेक स्थान मे मार्ग दीया जाता था। अभि सारे काम मे पुरुष को जादा मार्ग दीया जाता है। पुरुष प्रदान है। और पुरुष स्त्री पर शोषण करते है। और पुरुष को स्त्री के आदि सारे आर्थिक मे पुरुष का सहाय मागना पडता है। पुरुष ने स्त्री को सारे आर्थिक सामा लेता है। स्त्री को पुरुष पर निर्भर होना पडता है।

इस पर हसे महादेवी वर्मा ने स्त्री के स्वातंत्र्य पर लिखागया है। स्त्री को आदि स्वातंत्र्य देना चाहिये। स्त्री पदान होना चाहिये। स्त्री सारे काम और वर्ग मे शामिल होना चाहिये। सारे वर्ग मे स्त्री का हात होना चाहिये। स्त्री पदान शब्द होना चाहिये। इस तरह से महादेवी वर्मा ने स्त्री का स्वातंत्र्य बारेमे कहाहै। स्त्री को उच्च स्थान देना चाहिये।

प्र-4

2. प्रेमचंद :- एक व्यक्तित्व

प्रेमचंद कवि के बारे में नागार्जुन कवि ~~स्पष्ट~~ स्पष्ट किया है। नागार्जुन एक कवि है और एक महान कवि प्रेमचंद के बारे में कहा है और प्रेमचंद कवि का एक व्यक्तित्व पर लिखा है।

प्रेमचंद एक प्रसिद्ध कवि है और व एक भाषन के लिए रात भर जागे और उनकी पत्नी उनके रात भर जाग ते देखा और ~~व~~ शिक्षक थे। और दिन में काम करते है और रात भर पत्र लिखते है। एक दिन भि नही छुट्टि नही लिया। और नहि लिखे तो खाना नही खाते है। और इस जमाने में हमें उनके जादा महत्व ~~व~~ नही देते है। प्रेमचंद के जन्म दिवस को हिन्दी दिवस मनाते है। प्रेमचंद ने माह हिन्दी लेखक दिया है। हिन्दी में पत्र लिखा है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು: Shruti, B. Konal Roll No./ಸ್ಥಾನ: 24 Date /ದಿನಾಂಕ: 13- 2-2024

Subject/ವಿಷಯ: BSC (Hindi) Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ: U15KM22A0008

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 26/30

I

1) छायावादी

2) निबंधकार

3) रामवृक्ष बेनीपुरी

4) इलाहाबाद

5) 23 दिसंबर 1899

6) बेघर

II

8) संदर्भ :-
इस वाक्य को यह रोना मना है पाठ से ममता कालिया ने इस पाठ से लिया गया है.

स्पष्टीकरण :-
यह रोना मना है इस पाठ में कालिंदी का नाम है यह मोहन का शादी करके कालिंदी ने मोहन का घरको आया

ये यह सभी लोग बच्चों को कौन
सी नाम है कालिंदी बोलकर तो
इसका नाम मुश्किल है कोई की कोई
एक अच्छा नाम - या नाम रखो यह इस
वक्य मे कहा गया है,

अपनंय अप ~~अलंकार~~ :- इस पाठ से एक लड़कि नाम
तक अच्छी नही है बोलकार लड़कि को
और उसका घर लोग को डाटती है,

9) संदर्भ :-
यह इस वक्य को ममता कालिया
ने यह होता माना है पाठ लिया गया है

स्पष्टीकरण :-
यह मोहनका घरमें कालिंदी शादी
करके आया था यह श्यामुमा ने कालिंदी को
सीख डाटकी रहा था एक दीन कालिंदी का
मां मार जाता है कालिंदी को जाने नही दिया
जाता और यहा रोना माना रोया तो अपशकुन
हो जात है ऐसी मोहन ने कालिंदी को कहा
ती है मोहन और उसकी मां को डाट
ती रहा होता ये यह तो कालिंदी ने जवाब
लडाती है - बदजात बच्ची की! खबरदार मेरी
मां के लिए कुछ कहा तो यह कालिंदी
ने इस वक्य मे बोलती है,

अपशब्दकार :-
यह लड़की यों ने सीख शादी
करके दूसरे घरकी कहा होगया कबमा
श्यामुमा मां का उसकी बेटी नही मानती
यहा भी शिकना करती है,

III

2) लयालीय के ज्वार उन लहरों में,

यह इस पाठ से अमरी देश का एक चरित्र चीत्रण बोलाहाया है इतीहास में पेहली लोग देश के लीए अपनी जान कावी हेकार अमरी देश को लेजाती है, यह इस पाठ से स्वतंत्र का बारे बोलमाया है स्वतंत्र आंदोलन की समीक्षा है लयालीय के मतलब लोग पुरव पीलीया के लोग कैसी अपनी देश और अपनी संस्कृती को मरी बड़ी दीया है,

लयालीय के ज्वार उन लहरों में इंगलेंड और अमारी देश का बीच में एक बड़ा युद्ध होगया था लोग की देश का ऊपर का ममता कभी कभी नहीं होने देता है यहा लो दीतीय की लोग अमारी देश का ऊपर बंद और बंदुक से गोली चलाकार अमारी जनात के ऊपर अंबला करता था लोग का बीड़ और लोग का देश का ऊपर ममक ही चाही ही होरहार यार कभी कभी बड़ी होगया था यह लोग का मरण के सात सात अपनी जीवन को देश का ऊपर तेग करदीया था

स्वतंत्र की राष्ट्रीया लोग दीतरा के दीगुंद सामन रककर अपनी जान को ही ऊपर ही अपकी जीवन से ऊपर पूरी बड़ी था जनकी उसी अमारी देश का काल काल में अमारी देश का कुद और लोग को स्वतंत्र लेना ही है आमंजा लोग अमरी जनता को नैकार से चैसे काम करवाकर

अपनी अपर मार पीट करती थे लोग अंग्रेजो के सामने चुपचाप हथियार अपनी हाथ को रखकर बैठती थी कि अच्छे समाया आने के लिए इंतजार करके बैठा था

बहिरुन लोग अपनी पास बंदूक और तोप रखगया तो भी अमारी देश लोग पीछे नहीं हटी थी अमारी पास तलवार है तलवार जैसी धार है अम लोग लड़ेगे लड़ेगे कहतक बोलता है अमारी देश आजादी होने तक भी अमरी जान जाया तो भी रहेंगे अमलोग अमरी देश को आजाद करके ही रहेंगे इसे बाहा करके आगे निकलती गया है.

स्वतंत्र देश के लिए अमरी जनता को कुत्ते जैसी काम करके पैरो के नीचे बैठाकरता था पर लोग कभी हार नहीं माना या था देश की ममता राष्ट्रीय एकता में अमारी देश अमरी माथा अमारी मिट्टी रक्षा अमारी है रहेगा यहा अमार देश अंग्रेजी के हात आक्रायुक्त होगया तो यहा लोग की लाखो सरकार रखने तरफ देखा तो रक्षा कुन है कुन हैकरहा था देश के लिए आक्रावीर लोग भी देश का स्वतंत्र आंदोलन को समाने अत्याचार अमारी देश को आजाद किया गया था

अंत मे अमारी देश को स्वतंत्र मिली गया मगर देश के लिए लोग कुन अपनी जीवन को समर्पण दिया है अमरी देश के लिए रक्षा दिया गया था और अमारी देश को आजाद होगया था,

IV

12) संक्षिप्तीकरण।

8) हमारी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से भी है जिसको अपनी भाषा है वह दूसरे की भाषा क्यों उधार ले, इससे राष्ट्रीय सम्मान में बट्टा लगता है विदेश में जाने पर भारतीय को अंग्रेजी में बात करते देखकर वहाँ के निवासी आश्चर्य पूर्ण देखते हैं, भाषाएं तो हमारे यहाँ अनेक हैं एक से एक बढ़कर सुंदर और समृद्ध इस हीन भावना के कारण उनको अपना पाते, अपनी सक्रियता और आर्थिक समृद्धि पर संदेह बना रहता है,

रा.शि.

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023-2024

Name / ಹೆಸರು : प्रिया . पवार Roll No./ಸ್ಥಾನ : 104 Date /ದಿನಾಂಕ : 12-2-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिन्दी - DSC - 5 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM22A0170

Invigilator's Signature / ಕರ್ತವ್ಯ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 20

प्र- 1.

1. 1. गद्य काल

2. 2. गद्य काल

3. 2. प्रेममार्गी 1. ज्ञानमार्गी

4. 1. पृथ्वीराज रासो

5. 1 सगुण भक्ति

6. 2. राम बोला

प्र-2.

1. आचार्य विश्वनाथ
रामचंद्र शुक्ल आदिकाल को भक्तिकाल ही कहा है। मिश्रबंधु आदिकाल को माध्यमिक काल कहा है।

2. रामकुमार वर्मा का काल विभाजन
i. आदिकाल संधिकाल
ii. चारणकाल
iii. रितिकाल भक्तिकाल
iv. रितिकाल

3. मिश्रबंधु - अलंकृत काल
शंभूनाथ सिंह - ह्रासकाल
रीतिकाल का नामकरण को नाम दिया है।

4. मिश्रबंधु का काल विभाजन
i. आरंभिक काल
ii. माध्यमिक काल
iii. अलंकृत काल
iv. परिवर्तनकाल

5. आधुनिक काल का नामकरण
शुक्ल जी ने - गद्य काल कहा है।
मिश्रबंधु - परिवर्तनकाल कहा है।

प्र-3.

1. आदिकालीन

2. रीतिकालीन की प्रवृत्तियां

1. आदिकालीन की प्रवृत्तियां :-

आदिकाल में अनेक साहित्यकारने नामकर और विभाजन किया है। हिन्दी साहित्य में भी कीया है। आदिकाल में अनेक बार साहित्यकारन दूसरे दूसरे रिति से बता है। इसतरह से आदिकाली की प्रवृत्तियां इस परह से है।-

1. सिद्ध साह परिवर्तन :-

आदिकाल मे परिवर्तन के बारे मे बताया है

i. सिद्ध साहीत्य :-

सिद्ध साहित्य मे सिद्ध साहीत्य के बारे मे लिखा है। इस साहीत्य मे सिद्ध बोका परिवर्तन और उनके लेखन और सिद्धबो का भाषा के बारेमे विवर्ण किया है।

ii. नाथ साहित्य :-

नाथ साहित्य मे नाथ के बारे मे लिखाया है। नाथो का काल और उनका रिती और साहित्य के बारे मे हम देखा जाता है। नाथ साहित्य मे नाथो के समाज के बाते किया है। इस तरह से, सारे नाथ साहित्य मे देखा जाता है।

iii. जैन साहित्य :-

जैन साहित्य मे जैन के परीवर्त और उनका इतिहा के बारे में लिखाया है। जैन मुनि के बारे मे निर्देश पाता है। जैन के रिति और उनका साहित्य के बारे में देता पाता है।

iv. सन्त साहित्य :-

सन्त साहित्य मे सन्त के बारे में लिखाया है। सन्त के इतिहास और उनके परीवर्त उनके रिति आचार्य के बारे में लिखाया है। सन्त महान भक्ति के मार्ग मे चलने वालने है। सन्त ज्ञानी है। सन्त साहित्य में सन्त है महान है।

v. रासो साहित्य :-

रासो साहित्य में रासलिला के बारे मे और लिला के बारे में लिखाया है। महाराज के ध्रबा मे रासलिला का प्रदर्शन न के बारे मे लिखा है।

vi. ~~रिति साहित्य~~ :- लौकिक साहित्य :-

लौकिक साहित्य मे लौक के बारे में लिखाया है। सतलब लोगों के बारे में लिखाया है। लोग के इतिहास और परीवर्त के बारे मे बताया है।

vii. गद्य साहित्य :-

गद्य साहित्य मे गद्य के बारे मे बताया है। उसके रचना के बारे मे बताया है। उनेक गद्य के रचना किया है इस काल मे।

इस तरह से आदिकालीन की प्रवृत्तियों को बारे मे साहित्य मे विभाजन किया है।

प्र-4.

1 सूरदास :-

सूरदास का जन्म 1478 में 1478 इस में चारवाली स्थान मे रुनकता ग्राम मे हुवा है। उनके पिता का नाम पंडित रामदास उनके माता का नाम जमनादास बाई। व जन्म से अंधे थे कहते है। बल्कि व बाद मे अंधे हुये। और व कृष्ण के प्रेम प्यार मे तरितरह से अंधे और कृष्ण की भक्ति मे तरितरह से अंधे चाहते थे। सूरदास के गुरु का नाम आचार्य बल्लभाचार्य। सारे कविता को ब्रज भाषा मे लिखे है। कृष्ण के बारे मे अनेक चीत्रण कीया है। कृष्ण की लिला, कृष्ण की लिला की चित्रण कीया है। सूरदास, सूरसारावली साहित्य मे लिखा है। सूरदास के माता पीता उसका साथ नही दीया और व प्रेम के मार्ग में कृष्ण के भक्ति मे चलगये।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I st INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : Bandu Rathod Roll No./ಸ್ಥಾನಕ : 152 Date /ದಿನಾಂಕ : 05-01-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi DSC 5 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III rd Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಕ :

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29/30

I)

1) आचार्य शुक्ल

2) विश्वनाथ काल

3) कबीर

4) चंदबरदाई

5) मिश्रबंधु

6) सूरदास

II)

1) आ. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार :-

i) आदिकाल (संवत् 1050 - 1375 तक)
ii) भक्तिकाल (संवत् 1375 - 1700 तक)
iii) रीतिकाल (संवत् 1700 - 1900 तक)
iv) आधुनिक काल (संवत् 1900 से आगे)

2) डॉ. नगेन्द्र के अनुसार :-

i) आदिकाल (संवत् 1000 - 1400)
ii) भक्तिकाल (संवत् 1400 - 1700)
iii) रीतिकाल (संवत् 1700 - 1900)
iv) आधुनिक काल (संवत् 1900 से आगे)

3)

3) मिश्रबंधु के अनुसार :-

i) पूर्व प्रारंभिक काल
ii) अलंकृत काल
iii) माध्यमिक काल
iv) परिवर्तमान काल
v) वर्तमान काल

4) रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार :-

i) विद्यमय काल (संवत् 1000 – 1350)
ii) भक्तकाल (संवत् 1350 – 1650)
iii) रीतिकाल (संवत् 1650 – 1850)
iv) गद्य काल (संवत् 1850 से आगे)

5) श्यामसुंदर दास के अनुसार :-

i) विद्यमय काल (संवत् 1050 – 1400)
ii) भक्तकाल (संवत् 1400 – 1600)
iii) रीतिकाल (संवत् 1600 – 1900)
iv) नवीन विकास काल (संवत् – 1900 से आगे)

P.T.O

III)

1) आदिकाल के विभाजन के आधार में :-

i) आ. रामचंद्र शुक्ल के अनुसार

* आदिकाल (संवत् 1050 – 1350)
* भक्तिकाल (संवत् 1350 – 1700)
* रीतिकाल (संवत् 1700 – 1900)
* आधुनिककाल (संवत् – 1900 से आगे)

ii) डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार

* आदिकाल (संवत् 1000 – 1400)
* भक्तिकाल (संवत् 1400 – 1700)
* रीतिकाल (संवत् 1700 – 1900)
* आधुनिककाल (संवत् – 1900 से आगे)

iii) मिश्रबंधु के अनुसार :-

* पूर्व आरंभिक काल
* अलंकृत काल
* माध्यमिक काल
* परिवर्तन काल
* वर्तमान काल

iv) रामखेलावन चतुर्वेदी के अनुसार :-

* वीरगाथा काल (संवत् 1000 – 1350)
* भक्तिकाल (संवत् 1350 – 1650)
* रीतिकाल (संवत् 1650 – 1850)
* गद्य काल (संवत् 1850 से आगे)
*

4) रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार :-

* विद्यापति काल (संवत् 1050 – 1400)
* भक्तिकाल (संवत् 1400 – 1600)
* रीति काल (संवत् 1600 – 1900)
* आधुनिक विकास काल (संवत् – 1900)

ii) रामकुमार वर्मा के अनुसार :-

* संधिकाल (संवत् 700 – 1000)
* चारण काल (संवत् 1000 – 1350)
* भक्ति काल (संवत् 1350 – 1700)
* रीति काल (संवत् 1700 – 1900)
* आधुनिक काल (संवत् 1900 से अब तक)

iii) गणपति चन्द्रगुप्त के अनुसार :-

* आदिकाल पूर्वमध्यकाल
* चारण काल
* भक्ति से प्रेम काल
* रीतिकाल
* आधुनिक काल

iv) रामखेलावन पाण्डेय के अनुसार :-

* संक्रमण काल
* सन्धि संधिकाल
* पल्लवन काल
* स्वर्णयुग काल
* अवसान काल
* अ. अपभ्रंश काल

III)

आदिकाल अध्ययन :

i) आ. रामचंद्र शुक्ल — आदिकाल

ii) हजारी प्रसाद द्विवेदी — आदि काल

iii) मिश्रबंधु — अलंकृत काल

iv) रामस्वरूप — विस्तार काल

v) श्यामसुंदर — विकास काल

vi) रामशंकर शुक्ल — आदि काल

vii) महाकवि प्रसाद चतुर्वेदी — विश्वसाहित्य काल

viii) पंत जी विश्लेषण — चारण काल

ix) रामखेलावन पांडे — संक्रमण काल

x) गणपति — आदिकाल

xi) विश्वनाथ मुख — वीरकाल

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು: Sanyonshai - P. Patil Roll No./ಕ್ರಮಾಂಕ: _____ Date / ದಿನಾಂಕ: 6-1-2024

Subject/ವಿಷಯ: Hindi DSC-II Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: 5 Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸೀಟ್ ನಂಬರ್: U15KM21ADD57

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಮಾಪಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 24/30

I

① भारती जग विचार कवि

② मैथिलीशरण गुप्त

③ प्रतीप

④ डॉ राजेंद्र प्रसाद

⑤ नवाबराय

II

① भारतीय संस्कृति :

भारतीय की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी का सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल है। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज, परम्परा और विचारों का भी इसमें समावेश है पिछली पाँच सहस्राब्दियों से आर्थिक समय से भारत के रीति-रिवाज, भाषाएँ, प्रथाएँ और परम्पराएँ इसके एक-दूसरे से परस्पर सम्बंधों में महान एक विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती है।

भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, धर्मों का जनक है।

भारती संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग- अलग है। यहाँ के लोग भाषाएं बोलते हैं, अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, भिन्न - भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग- अलग भोजन करते हैं। किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता है। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशियां बांटने का अनुभव करते हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृति के समान ही प्राचीन है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने - आप को बदलते समय के ढालती भी आई है।

③ राष्ट्रीय चेतना :

राष्ट्रीय चेतना से व्यापक अर्थ का बोध होता है जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र का गौरव राष्ट्र का परिवेश, राष्ट्र का इतिहास और राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और अनुभूति समाहित होती है। कतिपय राष्ट्रवादी चिंतक राष्ट्रीय चेतना का अर्थ संकीर्ण सोच के अंतर्गत करते हैं।

10

राष्ट्रीय चेतना की विशेषताएँ

* राष्ट्र कि अस्मिता कि रक्षा :

जिनसे राष्ट्र का अपना एक स्वरूप बनता है, विश्व में उसकी अपनी अलग पहचान बनती है, वह एक स्वतंत्र, प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

* राष्ट्र का गौरव :
विश्व में अपने जीवन में सब की अभिव्यक्ति द्वारा वह राष्ट्र विश्व जीवन में योगदान के कर्तव्य का निर्वाह करता है। इसलिए योगदान करने वाले राष्ट्र का स्वतंत्र होना, समर्थ होना यह उसके योगदान की पूर्व शर्त है।

* राष्ट्र का परिवेश :
संविधान का पालन करे और उसके आदर्श संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का सम्मान करे।

* राष्ट्र का क्रमेश :
राष्ट्रपमुख का पद, राजकीय व्यवस्थापिका का सर्वोच्च अंग होता है और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर, राष्ट्रपमुख को इस देश के औपचारिक प्रमुख मात्र एकमात्र वैधिक प्राधिकारी के रूप में जाता है।

* राष्ट्र का प्रति इस देश के नागरिकों की समर्थ सांच और अनुभूती :
एक विशेष समाजिक राजनैतिक, राष्ट्रीय, या मानव संसाधन समुदाय का एक नागरिक होने की अवस्था है। सामाजिग अनुभूति के सिद्धात के तहत नागरिकता की अवस्था में अधिकार शामिल होते है।

9

III

(a) राष्ट्रीय चेतना :
राष्ट्रीयता का स्वप्न शब्दों के बंधन कुछ कठिन तथा असंभावित है। राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव की अन्तश्चेतना से है। जो राष्ट्रीयता का संबंध केवल जड़भूमि से न होकर आंतरिक होता है।

अपने देश के अगाध प्रेम में, अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गौरव में, अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रकट होती है।

राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाली सामूहिक भावना की एक ऐसी उच्चतम अभिव्यक्ति है जिसका इतिहास-निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है। किसी भी देश का साहित्य वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि के परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बनता व बदलता है।

राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाली सामूहिक भावना की एक ऐसी उच्चतम अभिव्यक्ति है। जिसका इतिहास-निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Sanyashri . P. Patil Roll No./ಸ್ಥಾನಂ : 110 Date /ದಿನಾಂಕ : - -20

Subject/ವಿಷಯ : DSC = II Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : 5 Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಂ :

Invigilator's Signature / ಕೂಡಿಸಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 30

I

(1) साहित्य संदेश

(2) मल्लसर्ज

(3) महात्मा गांधी

(4) राजेंद्र पवार

(6) बाल गंगाधर तिलक

III : टिप्पणी लिखिए :

(1) कित्तूर रानी चन्नम्मा ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ हथियार उठानेवाली पहली भारतीय सशस्त्र महिला क्रांतिकारी है रानी चनमा। बेलगाम जिले के काकती हुक्केरी और पदमावती के घर जन्मी बेटी की बाद मे कित्तूर के राजा मल्लसर्ज देसाई से शादी हुई और वह रानी चन्नमा बन गई।

चन्नमा का विवाह राजा मल्लसर्ज से हो गया मल्लसर्ज का पहला विवाह रुद्रम्मा से हुआ था। विवाह के बाद उसकी मृत्यु हो गई। पुत्र की मृत्यु के कुछ समय बाद ही राजा मल्लसर्ज की भी मृत्यु हो गई संस्थान परिवार से सम्बन्धित मास्तमरडी गाँव के बाब्पा गौडा के सुपुत्र शिवलिंगप्पा को राजगद्दी पर बिठाने के लिए गोद लिया गया। पर अंग्रेज को इस उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया। उनके अनुसार कोई "प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी न होने पर राज्य छीन लिया जाते थे"।

अंग्रेजो ने मद्रास नेटिव हार्स आर्टिलरी की तीसरी टुकड़ी के सिपाहियो और बन्दूको के साथ कित्तूर पर आक्रमण किया। 1824 अक्टूबर लड़ाई हुई इस लड़ाई मे अंग्रेज कि सेना बहुत थी पर कित्तूर के वीरांगना का हौसला अंग्रेज को हरा दिया।

इस युद्ध मे धारवाड़ का तत्कालीन कलेक्टर और अंग्रेजो का पोलिटिकल एजेंट सेट जॉन थैकर मारा गया। रानी चन्नमा के सहयोगी अमतूर बालप्पा मारे गिरगया। ब्रिटिश के दो अधिकारी सर वाल्टर मनरो और स्टीवेंसन को बन्धक बना लिया गया। इन दो अधिकारी को जोड़ने के लिए अंग्रेज चन्नमा के लिए कुछ वायदा बने पर अंग्रेजो ने धोखा दिया कुछ महीने बाद फिर युद्ध छेड़ दिया। अफसर चैपलिन ने युद्ध छेड़ दिया रानी सेनापति वीर संगोल्ली रायन्ना और गुरु सिद्दप्पा के साथ लड़ाई शुरू कर दिया पर अकम सैनिक होने के कारन कित्तूर की सेना हार गई। अंग्रेजो ने कित्तूर को लूट लिया। और रानी को बैलहोंगल के किले मे युद्धबन्दी बनाकर रखा गया। इसके बाद संगोल्ली रायन्ना अंग्रेजो के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध लड़ते रहे। पर कुछ गद्दारो का साथ मिलकर खानापुर तहसील के नन्दगढ़ मे बरगद के पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई। इस घटना के कारण 21 फरवरी 1829 चन्नमा की मृत्यु हो गई।

कित्तूर रानी चन्नमा इन गुनिन्दा भारतीय शासको मे है, जिन्होने अंग्रेजो को बुरी तरह हराया था। हमारे देश को एक वीरांगना की ओर ध्यान देने मे आजादी के बाद इतने वर्ष क्यो लगा मेरा यह भी आत्मनिरीक्षण का विषय है।

II.

(2) राष्ट्र निर्माण का अर्थ यही है वह राष्ट्र जो अपने इतिहास एवं संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए परायणशील हो एवं अपनी संस्कृति को मानने वाले एवं सम्मान करने वाले लोगों के द्वारा संचालित हो ऐसे राष्ट्र का निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है।

i] अध्यापक वर्ग :
शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते है। शिक्षक ही ज्ञान व सफलता का पहला आधार है जिसके अनुपस्थिति में सफल जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षक ही हमारे सफलता की मजबूत नींव है। विद्यार्थी जीवन में शिक्षक का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि शिक्षक ही हमारे ज्ञान और जीवन मूल्यों के आधार है।

ii] डॉक्टर :
जन स्वास्थ्य डॉक्टरों के हाथ में है। डॉक्टर को चाहिए कि जनता में स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार करे। डॉक्टर को इस बात पर प्रसन्नता होनी चाहिए कि उनको इतना महत्वपूर्ण सेवा-कार्य सौंपा गया है।

(1) लोकमान्य तिलक :

"स्वराज्य यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूँगा" - ये वाक्य आज के नहीं है। मगर इसको पढ़ने और सुनने के बाद हर बार इस वाक्य को कहने वाले बाल गंगाधर तिलक की याद आ ही जाती है।

ऐसे उत्साह और जोश भरनेवाले बाल गंगाधर तिलक का आज जन्मदिन है। बाल गंगाधर तिलक को लोकमान्य तिलक के नाम से भी जाना जाता है। लोकमान्य का शीर्षक भी उन्हीं को दिया गया था। लोकमान्य के अलावा इनको हिंदू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है।

लाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 July 1856 मे हुवा। वो एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील थे। वो भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुए। वो गणेशोत्सव द्वारा ~~भी~~ राजनीतिक भावनाओं का प्रचार किया। केसरी नाम के मराठी दैनिक और 'मराठा' नाम के अंग्रेजी साप्ताहिक को जन्म दिया। 1908 मे भारत सरकार के पदमभूषण अलंकरण दिया।

(3) कित्तूर रानी चन्नमा एक भारतीय वीरांगना थी कित्तूर की रानी चन्नमा ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ हथियार उठानेवाली पहली भारतीय सशस्त्र महिला क्रांतिकारी है। राजा मल्लसर्ज के मृत्यु के बाद चन्नमा ने शिवलिंगप्पा को गोद लेने का सोचा पर अंग्रेज इस बात को नहीं मानते है।

उत्तराधिकारी न होने पर राजपाठ को अंग्रेज छीन लिया जाते थे। अंग्रेज को कित्तूर पर कब्जा करने की कोशिश मे थे इसी बात का फायदा उठाकर अंग्रेजो ने मद्रास नेटिव हार्स आर्टिलरी की तीसरी टुकड़ी के सिपाहियों और बन्दूकों के साथ कित्तूर पर आक्रमण कर दिया। 23 अक्टूबर लड़ाई हुई इस लड़ाई मे अंग्रेज कि सेना बहुत थी पर कित्तूर के वीरांगना का हौसला अंग्रेज को हरा दिया। इस युद्ध मे अंग्रेज अधिकारी मारा गया सर वाल्टर मंकियट और स्टीवेन्सन को बन्दी बना लिया गया। फिर कुछ महीने बाद चैपलिन ने कित्तूर पर युद्ध किया, पर किसी पार कित्तूर पर कम सेना थी। इस कारण कित्तूर युद्ध मे हार गया। और रानी चन्नमा को युद्धबन्दी बनाकर बैलहोंगल मे रखा गया। रंगोली रायण ने गुरिल्ला युद्ध लड़ते रहे। पर कुछ गद्दारों के कारण खानापुर तहसील के नन्दगड मे बरगद के पेड़ से लटकाकर फांसी दे दिया। इस कारण से बैलहोंगल मे ही चन्नमा का मृत्यु हो गया।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Kaveri K. Chavan Roll No./ಕ್ರಮಾಂಕ : Date / ದಿನಾಂಕ : 06-01-2024

Subject/ವಿಷಯ : optional Hindi / IXC-21 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : V Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸೀಟ್ ನಂಬರ್ : U15KH021A0042

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಮಾಪಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29/30

I

1) गौरीलंकेश गुप्त

2) प्रदीप

3) डॉ. गजेंद्र प्रसाद

4) नवावराग

5) प्रेमचंद

6)

II

1) भारतीय संस्कृति :

हिन्दी का एक लघुचर्चित तथा विचारात्मक निबंध है, "भारतीय संस्कृति"। इस निबंध के रचनाकार डॉ गजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्रता सेनानी एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

1. विविधता में एकता :

डॉ. गजेंद्र प्रसाद कहते हैं कि भारत विविधता से भरा एक विशाल देश है, लेकिन इस विविधता में भी एकता के दर्शन होते है और यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। कोई भी विदेशी जो भारत की विविधता के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, अगर वह भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करे तो उसको इतनी विविधता देखने को मिलेगी

कि वह भारत को एक देश नहीं बल्कि देशों का समूह कहेगा। उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ, तो दक्षिण की ओर गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा सिंचित, तो दक्षिण की समतल जमीन। पश्चिम से पूर्व दिशा में भी इसी प्रकार की बहुत सारी भिन्नताएं देखने को मिलती है। हिमालय में कठोर शीतकर सर्दी, तो समतल मैदानी क्षेत्रों में गर्म हवा चलती है। असम में 300 इंच तक बरसात होती है। जैसलमेर में केवल 2 से 4 इंच होती है।

2. सागर के समान विशाल संस्कृति :

जिस तरह एक रेशमी धागे में तरह-तरह के सुन्दर मोती तथा फूल पिरोकर एक सुन्दर हार बनता है, उसी तरह भारतीय संस्कृति विविधताओं से भरी है। लेखक ने भारतीय संस्कृति को एक सागर के समान भी बताया है, जिसमें अनेक जाति, धर्म, भाषा के लोग समाहित होते हैं। आज यह जल राजनीतिक स्वार्थ, सांप्रदायिकता, अंध आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता आदि के द्वारा गंदला हो गया है।

3. संस्कृति का मूलाधार - अहिंसा तत्व :

भारतीय संस्कृति का मूल आधार अहिंसा तत्व ही है इसलिए हमारे ग्रंथों में मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है और हिंसा को स्वार्थ कहा है। अहिंसा की इसी भावना के कारण हमने विभिन्न विचारधाराएं तथा संस्कृतियों को अपनाया, दूसरों के घरों या संपत्ति पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया।

4. महान विद्वान तथा कर्मयोगी :

हमारे देश में अनेक शासकों का राज्य रहा और उनका पतन भी हुआ। विभिन्न सम्प्रदाय बनते व मिटते रहे। विदेशियों ने आक्रमण करके हमें बुरी तरह रौंदा, प्रकृति ने भी हम पर कई मुसीबतें गिराई, फिर भी हमारी संस्कृति बच गई। हमारे देश में बहुत से महान विद्वान व कर्मयोगी पैदा हुए। जैसे हम गुलाम थे, गाँधी जैसे कर्मनिष्ठ

5. औद्योगिक विकास के परिणाम :

हमें अंधाधुंध औद्योगिक विकास से प्रकृति में होने वाले भयंकर परिणामों के प्रति सचेत रहना चाहिए, ताकि हम अपने पर्यावरण को बचा सकें।

3) राष्ट्रीय चेतना की विशेताएँ

अर्थ : राष्ट्रीय चेतना से व्यापक अर्थ का बोध होता है। जिसमें राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा, राष्ट्र गौरव - गान, राष्ट्र का परिवेश, राष्ट्र का उन्मेष और राष्ट्र के प्रति उस देश के नागरिकों की समग्र सोच और अनुभूति समाहित होती है। कतिपय राष्ट्रवादी चिंतक राष्ट्रीय चेतना का अर्थ संकीर्ण सोच के अंतर्गत करते है।

राष्ट्रीय चेतना का अभिप्राय राष्ट्र की चेतन - प्राण शक्ति समाज से है। राष्ट्र शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। जिस क्षण समुदाय में एकता की एक सहज लहर हो, उसे राष्ट्र कहते है।

विशेषताएँ :

i) राष्ट्र की अखंडता की रक्षा :

राष्ट्र के कारण शक्ति की अखंडता की पहचान होती है। अतः सभी के हृदय में राष्ट्र के लिए प्रेम एवं सम्मान की भावना होनी चाहिए। राष्ट्र की संस्कृति, मूल्य, आदर्श, परंपरा एवं साहित्य राष्ट्र की आत्मा होती है। ये सभी घटक मनुष्य की गरिमा बढ़ाने में स्वयं सिद्ध होते हैं।

ii) राष्ट्र का गौरव - गान :

उच्छल जलधि तरंग तब शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे गाहे तव जय गाथा। जन - गण - मंगलदायक जय हे भारत भाग्य विधाता। जय हे, जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे। उपर्युक्त पाठ राष्ट्र गान का पूर्ण रूप है और इसे गाने अथवा बजाने में लगभग 52 सेकिण्ड का समय लगना चाहिए।

iii) राष्ट्र का परिवेश :

संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों संस्थाओं राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का सम्मान

iv) राष्ट्र का उद्देश :

राष्ट्र प्रमुख का पद, राजकीय व्यवस्थापिका का सर्वोच्च अंग होता है और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, राष्ट्र प्रमुख को उस देश के औपचारिक प्रमुख एवं एकमात्र वैधानिक प्रतिनिधि के रूप में जाना है।

III

१) राष्ट्रीय चेतना :

भारतीय वाङ्मय में 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता रहा है। यजुर्वेद के 'राष्ट्र में देहि' और अथर्वेद 'त्वा राष्ट्र भृत्याय' में राष्ट्र शब्द समाज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मानव की सहज सामुदायिक भावना ने समूह को जन्म दिया, जो कालान्तर में राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। राष्ट्र एक समुच्चय है, कुलक है और राष्ट्रीयता एक विशेष-भावना है। जिस जन समुदाय में एकता की एक सहज लहर हो, उसे राष्ट्र कहते हैं। आर्यों की भूमि आर्यावर्त्त में एक वाह्य एकता के ही नहीं वैचारिक एकता के भी प्रमाण मिलते हैं।

आर्यों की परस्पर सहयोग तथा संस्कारित सहानुभूति की भावना राष्ट्रीय संचेतना का प्रतिफल है। साहित्य का मनुष्य से शाश्वत संबंध है। साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है।

आधुनिक युग में भारत माता की कल्पना अथर्ववेद के सूक्तकार की देन है। वह स्वयं को धरती पुत्र मानता हुआ कहता है — "माता भूमिः पुत्रो हं पृथिव्याः" अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का प्रत्येक मंत्र राष्ट्र-भक्ति-स्तवन और महापुरुषों (देवताओं) के कीर्तिगान के द्वारा प्रकट होती है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Divyashri. P. Patil Roll No./ಸ್ಥಾನ : 110 Date / ದಿನಾಂಕ : - -20

Subject/ವಿಷಯ : DSC: 10 Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : I Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM21A0057

Invigilator's Signature / ಕೂಡಿದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

I

① 30 जून 1950.

② निशंकु

③ परमेश्वर प्रसाद

④ प्रेम

⑥ अलोक होता

II

① मृदुला गर्ग :

जन्म - 25 अक्टूबर 1938 कलकत्ता में हुआ।

शिक्षा - अर्थशास्त्र में एम. ए. किया।

* उपन्यास कहानी - संग्रह, नाटक तथा निबन्ध - संग्रह सब मिलाकर इनसे अधिक पुस्तकों की रचना की है।

* 'इंडिया टुडे' के हिन्दी संस्करण में लगभग तीन साल तक कटाक्ष नामक स्तम्भ लिखा

कृतियाँ : उसके हिस्से की धूप, वंशज, चितकोबरा, मेहराँ में, खेल नहीं है।

पुरस्कार : व्यास सम्मान, साहित्य अकादेमी पुरस्कार

③ जय प्रकाश कर्दम

जन्म 5 जुलाई 1958 को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में हुआ। एम.ए और पी.एच.डी शिक्षा प्राप्त की। डॉ जयप्रकाश कर्दम एक जाना पहचाना नाम है। वह दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर है और अपने व्यक्तित्व, सृजनकर्म के बूते समकालीनों में काफी चर्चित और समादृत है। कर्दम एक बहुआयामी प्रतिभावाले साहित्यकार चिंतक है।

कृतियाँ : 'गूँगा नहीं था मैं', तिनका - तिनका आग, बस्तियों से बाहर

सम्मान : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

III

① ब्लैक होल :-

संजीव जनवादी कथाआंदोलन के प्रमुख साहित्यकारों में से एक है। उनकी पहली प्रकाशित कहानी 'अपर्णा' थी, जो 'परिचय' लघु पत्रिका में छपी थी। 'ब्लैक होल' यह प्रतिस्पर्धा के जीवन की त्रासदी की कहानी है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में दौड़ते हुए, सबसे आगे रहना और पैसा कमाना यह एकमात्र उद्देश्य रह गया है। इसका असर बच्चों पर भी पड़ता नजर आ रहा है। उसके माता-पिता चाहते है।

कहानी के पात्र परिचय :

श्रीमती अलका, उसके पति परमेश्वर प्रसाद और बेटा अंकुर। पति कुल के दो हार में पैसों का कुछ अभाव होने पर भी पत्नि का चेहरा बेदाग है।

ब्लैक होल कहानी में नयी पीढ़ि की इस रीत का चित्रण प्रभावी रूप से किया गया है। ब्लैक होल अर्थात अंतरिक्ष में मौजूद अंधा कारमय जगह है। ब्लैक होल जहाँ कोई भौतिक नियम काम नहीं करता। इसका गुरुत्वाकर्षण इतना शक्तिशाली होता है कि सारी चीजों को अपने अंदर खींच लेता है यहाँ तक की सारी चीजों जाकर उदृश्य हो जाता है। कहानीकार संजीव के अनुसार आज का यह प्रतिस्पर्धा का जीवन अर्थात एक ब्लैक होल है जो जिसमें जाकर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

शूमडलीकरण के कारण हमारा भौतिक विकास की विशेषता तो हो गया परन्तु बदली हुयी अर्थ व्यवस्था ने हमारा जीवन मानसिक तनाव तथा अशांति से भर गया। इसीका चित्रण इस कहनी में किया गया है।

② हरी बिंदी

मृदुला गर्ग द्वारा रचित कहानी हरी बिंदी में एक आधुनिक नारी के मनोभावों का दाम्पत्य जीवन की एकरसता से ऊबी हुई युवती की मनोदशा का चित्रण किया गया है। कहानी की मुख्य पात्र आधुनिक नारी का पति विवाहित करती है। आधुनिक को भी पाना चाहती है यह कहानी पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक नारी के विद्रोही मन को दर्शाती है।

नायिका अपने दाम्पत्य जीवन की घुटन से परेशान है। अपने बंधनकारी दाम्पत्य जीवन से अलग सुकून के पल जीना चाहती है। एक बार उसका पति राजन शहर से बाहर चला जाता है तो वह एक दिन के लिए अपनी मर्जी के अनुकूल जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हो जाती है। अपना मनमाना व्यवहार करती है। सुबह देर से उठती है अकेली घूमने जाती है।

कहानी द्वारा यह स्पष्ट होता है कि नायिका परम्परागत सामाजिक नियमों को नकारकर स्वाभाविक जीवन जीना चाहती है।

विशेषता : आज नारी क्षेत्र में पुरुष की बराबरी कर चुकी है। फिर भी उसे पति के अनुशासन में रहना पड़ता है। इसलिए वह घुटन महसूस करती है और अवसर मिलते ही अपनी निजी जिन्दगी बिताने का प्रयास करती है। आधुनिक नारी अपनी इच्छा और शक्ति के प्रति सजग हुई है। यही बात मृदुला ने कहानी के माध्यम से बतानी चाहती है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 2003 -2024

Name / : Kavya K. Chavan Roll No./ : Date / : - -20

Subject/ : optional (English Lit-II) Semester/ : V Exam Seat No / : U15KH23A0042

Invigilator's Signature / Signature of Evaluator / Marks obtained/ 28/30

I) शंखी

2) आजादी

3) आधुनिक नारी

4) अलका

6) हरी बिंदी

II

1) हरी बिन्दी कहानी का कथावस्तु लिखिए।

"मृदुला गर्ग द्वारा रचित कहानी 'हरी बिन्दी' में एक आधुनिक नारी के मनोभावों का, दाम्पत्य जीवन की एकरसता से ऊबी हुई युवती की मनोदशा का चित्रण किया गया है। कहानी की मुख्य पात्र आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। आधुनिक नारी अपने ऊपर समाज का कोई बंधन नहीं चाहती। अपनी मर्यादा जानती है। लेकिन अपनी स्वतंत्रता के अधिकार को भी पाना चाहती है। यह कहानी पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक नारी के विद्रोही मन को दर्शाती है।

नायिका अपने दांपत्य जीवन की घुटन से परेशान है। अपने बंधनिकारी दांपत्य जीवन से अलग सुकून के कुछ पल जीना चाहती है। एक बार उसका पति रजन शहर से बाहर चला जाता है तो वह एक दिन के लिए अपनी मर्जी के अनुकूल जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हो जाती है। अपना मनमाना व्यवहार करती है। सुबह देर से उठती है। अकेली घूमने जाती है। फिल्म देखती है अजनबी के साथ रेस्तराँ में चाय पीती है, स्वच्छंदता से

घूमती है। वह सब करती है, जो वह करना चाहती है। लेकिन इसके साथ ही वह अपनी सरलता का हनन भी सहती है।

कहानी कुछ इस प्रकार है। सुबह 6:30 बजे जागने पर जब उसे याद आता है कि पति राजन दिल्ली चला गया है तो सोचती है कि अब उठने की कोई जल्दी नहीं है और फिर सो जाती है। दो घंटे बाद उठकर तैयार होती है। नीले रंग के ड्रेस पर हरे बिन्दी लगाती है। जानती है कि यह बेतुका लगेगा। अगर पति राजन होता, तो जरूर टोकता, लेकिन राजन नहीं है इसलिए एक दिन खुलकर जीना चाहती है।

कहाँ जाना है यह निश्चित किये बिना ही घर से बाहर निकलती है। टैक्सी को आवाज लगाती है और टैक्सी में बैठने के बाद निर्णय लेती है कि जहाँगीर आर्ट गैलरी जाना है। गैलरी में लगी किसी आधुनिक चित्रकार की प्रदर्शनी को देखती है और सबके सामने जोर से हँस पड़ती है। सड़क के किनारे ठेलों देखकर याद आता है कि भूख लगी है, तब अन्दर जाकर आदेश देती है "एक गरमागरम आलू की टिकिया और एक आइस्क्रीम, एक साथ"। ठंडी और गरम चीजें एक साथ खाने से दाँत खराब हो जायेंगे यह नहीं सोचती। आज पति नहीं है तो उसपर कोई बन्धन नहीं है। जब इस आदेश पर वेटर चौंकता है तो पूछती है "कोई एतराज है?"

पास के सिनेमाघर में उसके चहेते अँग्रेजी कॉमेडियन डैनी के की फिल्म लगी है, जो उसके पति को बिलकुल अच्छे नहीं लगते। अकेली सिनेमाघर जाऊँगी तो कैसा लगेगा यह बिना सोचे झमाझम फिल्म देखने जाती है और डैनी के ये कॉमेडी देखकर ठहाके लगाकर हँसती है।

बाजू में एक अजनबी पुरुष बैठा है, वह भी हँस रहा है। शायद जैनी के इसका पसंदीदा कलाकार है। सिनेमाघर से बाहर निकलते हुए उस अपरिचित से कुछ बात करती है और कॉफी पीने के लिए आमंत्रित करती है। कॉफी पीकर दोनों टैक्सी में बैठकर निकलते हैं, और घर पास आने पर नायिका टैक्सी से उतरती है। अबतक दोनों ने एक दूसरे का नाम जानना भी जरूरी नहीं समझा है। वह व्यक्ति कहता है "आज का दिन मेरे लिए काफी किमती रहा है, मैंने आज से पहले किसी को इतनी खिली नहीं देखा।"

3) सलाम कहानी का सारांश लिखिए।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'सलाम' कहानी संग्रह की कहानियाँ दलित जीवन की व्यथा, दलितों के जीवन-संघर्ष, उनकी बेचैनी की कहानियाँ है। इस कहानी संग्रह की पहली कहानी का नाम है सलाम। भारत में परंपरा के नाम पर कुछ ऐसी प्रथाएँ है जो अमानवीय है। उन्हीं में से एक है 'सलाम प्रथा', जिसको केन्द्र में रखकर कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने जातिभेद के कारण होनेवाले अन्याय-अत्याचार का चित्रण किया है।

शंगी (चूहड़े) जाति में प्रचलित शादी के समय अपमानित तथा निंदित करने वाली 'सलाम' या 'सरनाम' प्रथा को केन्द्र में रखकर 'सलाम' कहानी लिखी गई है। कथानक का आरंभ हरीश की शादी से होता है। बारात में परिवार वालों के अलावा उसका प्रिय दोस्त कमल उपाध्याय भी है।

देहरादून में हरीश और कमल उपाध्याय सहपाठी और घनिष्ठ मित्र है। जुम्मन की बेटी से ब्याहने जिस गाँव में हरीश की बारात गई है, वहाँ गाड़ समुदाय के लोगों का बहुमत और वर्चस्व है। गाड़ समुदाय के लोग चूहड़े समुदाय से नफरत

वहाँ रैदास समुदाय के लोगों का बहुमूल्य योगदान उपेक्षित है। रैदास समुदाय के लोग चूहड़ समुदाय से संबंधित और हीन समझे जाते हैं। हरीश 'सलाम' की प्रथा को निशाने पे इनकार करता है जिसमें विवाह के बाद नवविवाहित वर-वधू को उच्च वर्णियों के दरवाजे पर जाकर सलाम करना होता है। यह रस्म दूल्हे-दुल्हन दोनों को अपने समुदाय में निशाना पड़ती है। हरीश अपने लोगों को समझाते हुए कहता है कि मैं उस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ। यह रस्म खत्म होनी चाहिए।

रैदास जब ब्राह्मणवादी व्यवस्था देखता है, तो जुम्मन के घर जाकर पूरे बरातियों के सामने कहता है। "जुम्मन तेरा जमाई 'सलाम' पर क्यों नहीं आया? तेरी बेटी का ब्याह है, तो हमारा भी कुछ हक बनता है। जो नेग दस्तूर होता है, उसे निभाना ही पड़ेगा। हमारे बहू-बेटियाँ घर में बैठी इंतजार कर रही हैं। उसे जोतदो लेके आजा। जुम्मन कहता है कि "चौधरी जो जो सजा दोगे भुगत लूंगा, बेटी की विदा हो जाने दो। जमाई पढ़ा-लिखा लड़का है। गाँव देहात की रीत ना जाणे है।" अन्ततः सलाम पर गए बिना गाँव से बारात विदा हो जाने में हरीश को सफलता मिलती है और वह स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास बचाने में सफल हो जाता है।

दूसरी तरफ जाति से ब्राह्मण परन्तु जाति भेद का विरोध करनेवाला हरीश का मित्र कमाल सुबह-सुबह गाँव की चाय की दुकान पर जब चाय पीने जाता है, तो चायवाले के द्वारा उसका परिचय पूछने के बाद उसे चाय नहीं मिलती बल्कि अपमान का सामना करना पड़ता है। चायवाला मानने को तैयार ही नहीं था कि एक दलित बेटे शादी में कोई ब्राह्मण आ सकता है।

III टिप्पणी :

1) हरिश :

हरिश नायक पात्र इस कहानी में हरिश की शादी हो रही है। कर शादी जाति में प्रचलित शादी के समय अपमानित तथा शोषित करने वाली 'सलाम' प्रथा को तोड़ती है। इसमें दो समस्याएँ सामने आती है। एक तो समाज में व्याप्त सामंती - रिवाज जिसमें विवाह के बाद नव-विवाहित वर-वधु को गैर दलितों के दरवाजे पर जाकर सलाम करना होता है। यह रस्म दूल्हे - दुल्हन दोनों को अपने ससुराल में निभाना पड़ता है। दूसरी कहानी के नायक हरिश के माध्यम से कथाकार ने दलित को अपमानित तथा उनके आत्म-सम्मान का हनन करने वाली इस रीति को तोड़ कर स्वातंत्र चेतना का संदेश दिया है।

बटाल गंधड़ जो गैर - दलित पात्र के है वह जब ब्राह्मणवादी व्यवस्था टूटते देखता है तो जुम्मन यानी हरिश के ससुर से पूछता है कि हरिश सलाम करने क्यों नहीं आया तब जुम्मन कहता है कि हरिश एक पढ़ - लिखा शायरी लड़का है वह गाँव की रीत नहीं जानता है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Shravyashri . P. Patil Roll No./ಸ್ಥಾನಾಂಕ : 110 Date /ದಿನಾಂಕ : - -20

Subject/ವಿಷಯ : DSC - 9 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : V Exam Seat No./ ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಾಂಕ :

Invigilator Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 /30

I

① तत्भव

③ तत्भव

④ विदेशज

⑤ 1000

⑥ 4

IV

① भाषा की उत्पत्ति :-

भाषा की उत्पत्ति से आशय उस काल से है जब मानव ने 'भाषा' बोलना और सीखना आरम्भ किया, भाषा की उत्पत्ति का सम्बन्ध इस बात से है कि मानव ने सर्व प्रथम किस काम में अपने मुख से बोलने वाले ध्वनियों को वस्तुओं, पदार्थ, भावों से जोड़ा। मानव के इतिहास में यह काल इतना पहले आरम्भ हुआ कि इसके विकास से सम्बन्धित कोई भी संकेत मिलने असम्भव है।

1. दैवी उत्पत्ति - सिद्धान्त
2. निर्णय सिद्धान्त
3. धातु सिद्धान्त
4. अनुकरण सिद्धान्त
5. मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धान्त

6. गो-हे-हो सिद्धान्त
7. इंगित सिद्धान्त
8. सम्पर्क सिद्धान्त
(5) 9. समाहित सिद्धान्त

(2) आधुनिक आर्यभाषा :

आधुनिक आर्यभाषा का समयकाल 1000 से तक है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का विकास अपभ्रंश से हुआ है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा से आशिप्राय सन 1947 से पूर्व का अविभाजित भारत से है जिसमें पाकिस्तान और बंगलादेश समाविष्ट थे।

प्रमुख आधुनिक आर्यभाषा

* सिन्धी :
इस का संस्कृत सिन्धु से है। सिन्धु देश में सिन्धुनदी के दोनों किनारों पर सिन्धी भाषा बोली जाती है।

* लहंदा :
लहंदा का शब्दार्थ अर्थ है पश्चिमी। इसके अन्य नाम पश्चिमी पंजाबी, हिन्दकी, जटकी पोठवारी आदी है।

* पंजाबी :
पंजाबी शब्द 'पंजाब' से बना है जिसका अर्थ है पांच
(5) नदियों का देश।

* गुजराती :
गुजरात की अपनी लिपि है जो गुजराती नाम से प्रसिद्ध है वस्तुत गुजराती कैथी से मिलती-जुलती लिपि में लिखी जाती है।

* बंगला :
बंगला संस्कृत शब्द बंग + आल से बना है। यह बंगला प्रदेश की भाषा है।

II

③ पारिवारिक वर्गीकरण को 12 शाखाओं में बाँटा गया है।

चीनी परिवार :

इस परिवार का क्षेत्र चीन, स्याम, तिब्बती तथा बर्मा आदि है। इसकी मुख्य शाखाएँ चीनी, स्याम, तिब्बत तथा बर्मा आदि है। इसकी मुख्य शाखाएँ चीनी है जैसे 'हुआ पहाँ मीन' = राजा प्रजा की रक्षा करती है। 'मीन पहाँ हुआ' = प्रजा राजा की रक्षा करती है।

* इसमें प्रत्येक शब्द प्रायः एक अक्षर का होता है। इसीलिए इसे एकाक्षरी परिवार भी कहते है।
* इस परिवार की अधिकांश भाषाओं में सुर बहुत महत्वपूर्ण कार्य करता है। सुर के सहारे ही है।
* चीनी भाषा में लगभग दस हजार शब्दों से लगभग 42000 भिन्न भिन्न अर्थ व्यक्त किए जाते है
* एक ही शब्द विभिन्न सुरों में अलग-अलग अर्थ व्यक्त करता है।

① भाषा और बोली में अन्तर

भाषा :

* भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।
* भाषा बोली का विकसित स्वरूप है।
* भाषा का व्याकरण होता है।
* भाषा की लिपि होती है।
* भाषा का उपयोग राजकार्य में होता है।
* उदाहरण - हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी

5

बोली :

* बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
* बोली भाषा की लघुतम इकाई है।
* बोली का कोई व्याकरण नहीं होता है।
* बोली की कोई लिपि नहीं होती है।

* बोली का उपयोग बोलचाल में होता है।
* उदाहरण - हरियाणवी, खड़ीबोली, अवाही, भोजपुरी आदि।

III

② आधुनिक भारतीय आर्यभाषा :

आधुनिक आर्यभाषा का समयकाल 1000 से अब तक है। इसका विकास अपभ्रंश से हुआ है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा से अभिप्राय सन 1947 से पूर्व का अविभाजित भारत से है, जिसमें पाकिस्तान और बंगलादेश समविष्ट थे। कुछ विद्वान तो भारत का अर्थ श्रीलंका और वर्मा सहित भारतीय आर्यभाषा में लेते हैं। वस्तुतः अंग्रेजों के आने से पूर्व ये सब प्रदेश भारत के ही अंग थे।

प्रमुख आर्य भाषा

* सिन्धी :
सिन्धी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत सिन्धु देश व सिन्धु नदी के दोनों किनारों पर सिन्धी भाषा बोली जाती है। सिन्धी की मुख्यतः 5 बोलियाँ - विचोली, सिराइकी, थरेली, लासी, लाडी है।

* लहँदा :
लहँदा का शब्दगत अर्थ है 'पश्चिमी'। इसके अन्य नाम पश्चिमी पंजाबी, हिन्दकी, जटकी, पोठोहारी आदि है।

* पंजाबी :
पंजाबी शब्द 'पंजाब' से बना है जिसका अर्थ है पाँच नदियों का देश। पंजाबी की अपनी लिपि लंडा थी जिससे सुधार कर गुरुसंगत ने गुरुमुखी लिपि बनाई।

* गुजराती :
गुजराती की अपनी लिपि है जो गुजराती नाम से प्रसिद्ध है। वस्तुतः गुजराती कैथी से मिलती - जुलती लिपि में लिखी जाती है। इसमें शिरोरेखा नहीं लगाती।

* मराठी :
मराठी महाराष्ट्र प्रदेश की भाषा है। इसकी प्रमुख बोलियाँ कोंकणी, नागपुरी, कोष्टी, माहारी आदि है। मराठी की अपनी लिपि देवनागरी है किन्तु कुछ लोग मोडी लिपि का प्रयोग करते है।

* उड़िया :
उड़िया प्राचीन उत्कल अथवा वर्तमान उड़ीसा की भाषा है इसकी प्रमुख बोली गंजामी, सम्बलपुरी, शनी आदि है। उड़िया भाषा बंगला से बहुत मिलती है किन्तु इसकी लिपि नागरी की उत्तरी शैली से विकसित है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು: Kaveri. k. Chavan Roll No./ಕ್ರಮಸಂಖ್ಯೆ: Date / ದಿನಾಂಕ: 05-04-2024

Subject/ವಿಷಯ: Optional Hindi (Dsc-09) Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: V Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸೀಟ್ ನಂಬರ್: U15KN23P0042

Invigilator's Signature / ಕಂಡಕ್ಟರ್ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು: 29 / 30

I

1) ट्रेन

2) तत्भव

3) विदेशज

4) 1000

5) 4

5

II

1) डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी भाषा के विकास को कितने कुल खंडो में विभाजित किया गया है लिखिए।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने डॉ. चटर्जी के वर्गीकरण में सुधार करते हुए अपना निम्नांकित वर्गीकरण प्रस्तुत किया :-

i) उदीच्य - सिन्धी, लहँदा, पंजाबी।
ii) प्रतीच्य - गुजराती।
iii) मध्य देशीय - राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी।
iv) प्राच्य - उड़िया, असमिया, बंगला।
v) दक्षिणात्य - मराठी।

5

7) i) पूर्वी गौडियन - पूर्वी हिन्दी, बंगला, असमी, उड़िया।

ii) पश्चिमी गौडियन - पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी।

iii) उत्तरी गौडियन - गढ़वाली, नेपाली, पहाड़ी।

(5) iv) दक्षिणी गौडियन - मराठी।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का सर्वप्रथम वर्गीकरण डॉ. ए. एफ. आर. हार्नले ने सन् 1880 ई. में किया था। डॉ. हार्नले ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को 4 वर्गों में विभाजित किया है।

III

1) भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास :

भारत से अभिप्राय सन् 1947 से पूर्व का अविभाजित भारत से है, जिसमें पाकिस्तान और बंगलादेश सम्मिलित थे। कुछ विद्वान तो भारत का अर्थ श्रीलंका और वर्मा सहित भारत लेते हैं। वस्तुतः अंग्रेजों के आने से पूर्व ये सब प्रदेश भारत के ही अंग थे।

(5) आर्य भाषा :

आर्य भाषा का इतिहास आर्यों के भारत आगमन से प्रारम्भ होता है। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के आर्यभाषाओं के वर्गीकरण के केन्द्रीय समुदाय में पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती और हिमालयी भाषाएं हैं। मध्य समुदाय में मात्र पूर्वी हिन्दी को ही स्थान दिया गया है। इनके बाहरी पूर्वी समुदाय में बिहारी, उड़िया, बंगला तथा असमी भाषाएं हैं। दक्षिणी समुदाय में इन्होंने केवल मराठी को ही स्वीकार किया है। इनके अनुसार उत्तरी पश्चिमी समुदाय में सिंधी, लहंदा और कश्मीरी

भाषाएँ आती हैं।

* आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ

i) गुजराती
ii) मराठी
iii) सिन्धी
iv) लहँदा
v) पंजाबी

4

उ

3) प्रमुख आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ

i) सिन्धी → • सिन्धी शब्द का संबंध संस्कृत सिन्धु से है। सिन्धु देश में सिन्धु नदी के दोनों किनारे पर सिन्धी भाषा बोली जाती है।

ii) लहँदा → • लहँदा का शब्दगत अर्थ है 'पश्चिमी'। इसके अन्य नाम पश्चिमी पंजाबी, हिन्दकी जटकी, मुल्तानी, चिभाली, पोठवारी आदि है।

iii) पंजाबी → • पंजाबी शब्द 'पंजाब' से बना है जिसका अर्थ है पाँच नदियों का देश।
• पंजाबी की मुख्य बोलियाँ माझी, डोगरी, दोआबी, गढ़ी आदि है।

5

iv) मराठी → • मराठी महाराष्ट्र प्रदेश की भाषा है। इसकी प्रमुख बोलियाँ कोंकणी, नागपुरी, कोष्टी, महारी आदि है।

v) बंगला → • बंगला संस्कृत शब्द बंग + आल (प्रत्यय) से बना है। यह बंगाल प्रदेश की भाषा है।
• नवीन यूरोपीय विचारधारा का सर्वप्रथम प्रभाव बंगला भाषा और साहित्य पर पड़ा।

vi) गुजराती : • गुजराती गुजरात प्रदेश की भाषा है। गुजरात का संबन्ध 'गुर्जर' जाति से है - गुर्जर + त्रा → गुज्जरत्ता → गुजरात।

vii) असामी : • असमी (असामिया) असम प्रदेश की भाषा है। इसकी मुख्य बोली विश्वनाथिया है।

viii) उड़िया : • उड़िया प्राचीन उत्कल अथवा वर्तमान उड़ीसा (ओडीसा) की भाषा है। इसकी प्रमुख बोली गंजामी, सम्बलपुरी, भत्री आदि है।

1) अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाएँ :

डॉ भोलानाथ तिवारी ने अपभ्रंश के निम्नलिखित सात भेद माने हैं और उससे निर्गत आधुनिक भाषाओं को इस प्रकार दिखाया है -

अपभ्रंश - उससे निकलने वाली आधुनिक आर्यभाषाएँ तथा उपभाषाएँ.

- शौरसेनी - पश्चिमी हिन्दी (ब्रजभाषा, खड़ी बोली, बांगरू कन्नौजी, बुंदेली), राजस्थानी (मेवाती, मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी), गुजराती
- अर्धमागधी - पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
- मागधी - बिहारी (भोजपुरी, मैथिली, मगही), बंगला, उड़िया, असमिया
- खस - पहाड़ी हिन्दी
- पैशाची - लहंदा, पंजाबी

- बाघड़ - सिन्धी
- महाराष्ट्री - मराठी

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Alfiya. Choudhari Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : 105 Date /ದಿನಾಂಕ :05-01-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM22S0124

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 30/30

प्रश्न १.

१. १. जगदीशचंद्र माथुर

२. २. बी.ए

3. १. पुन्जीपती

(5)

४. १. साम्यहीन - साम्यवाद

५. १. मि. सेठ ने

प्रश्न २.

२. 'रीढ़ की हड्डी' नामक 'एकांकी' जगदीशचंद्र माथुर' जी द्वारा लिखी गई है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र हैं - उमा - लड़की, रामस्वरूप - लड़की के पिता, प्रेमा - लड़की की माता, शंकर - लड़का, गोपालप्रसाद - लड़के का पिता और रतन - रामस्वरूप का नौकर।

प्रस्तुत एकांकी में उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद और शंकर आनेवाले हैं। गोपालप्रसाद को ऐसी लड़की चाहिए थी जो ज्यादा पढ़ी लिखी न हो बस मैट्रिक पास हो, आखिर उन्हें नौकरी तो नहीं लगानी है और नाही वे अपने घर मेमसाब लाना चाहते हैं। वे लड़कियों की उच्च शिक्षा के विरोधी हैं। ~~लेकिन लड़कों~~ वे कहते हैं लड़कों का काम है पढ़ना और कामयाब। काबिल बनना लेकिन लड़कियों को तो सिर्फ गृहस्थी संभालनी है। वे यह उदाहरण भी देते हैं की - मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं और शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं उनके साथ रामस्वरूप भी कहते हैं की - मर्द की दाढ़ी होती है, औरत की नहीं। गोपालप्रसाद लड़कियों की उच्च शिक्षा के विरोधी हैं।

~~उन्हें~~ वे मैट्रिक पास वाली लड़की और संगीत, चित्रकला, सिलाई आदि आने वाली लड़की से अपने बेटे शंकर का विवाह करना चाहते हैं। इसलिए रामस्वरूप और प्रेमा ~~उन्हें~~ उन्से उमा की शिक्षा छुपाना चाहते थे।

(5)

3. 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी 'जगदीशचन्द्र माथुर' जी द्वारा लिखी गई है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र हैं - उमा, रामस्वरूप, प्रेमा, शंकर, गोपालप्रसाद और रतन।

प्रस्तुत एकांकी में उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद और शंकर आने वाले हैं। तो रामस्वरूप, प्रेमा और शंकर घर की साफ-सफाई करते रहते हैं। वे आपस में बात-चीत करते रहते हैं की - सब कुछ तैयार है या नहीं। रामस्वरूप, प्रेमा से कहते हैं कि - गोपालप्रसाद एक वकील हैं और उनका बेटा शंकर मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है। ~~वे~~ गोपालप्रसाद लड़कियों की उच्च शिक्षा के विरुद्ध हैं। यह कहते-कहते प्रेमा को याद आता है कि घर में मक्खन तो खतम हो चुका है। अभी गोपालप्रसाद आएँगे तो उन्हें क्या चाय और टोस्ट में क्या देंगे। रामस्वरूप कहते हैं की - तुम्हें तो अब याद आ रहा है, प्रेमा ये मक्खन का दुकान घर से दूर है। तभी वे रतन को ~~मक्~~ मक्खन लाने के लिए बाजार भेज देते हैं पीछे के दरवाजे से क्योंकि सामने के दरवाजे से गोपालप्रसाद और शंकर उसी वक्त आ जाते हैं।

(5)

प्रश्न 3. किन्हीं एक

2. "बाबू रामस्वरूप, क्या आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे बुलाया है ?"

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य 'गोपालप्रसाद' 'रामस्वरूप' से कहते हैं। प्रस्तुत वाक्य 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी से लिया ~~संदर्भ स्पष्टीकरण:~~ गया है जिसे 'जगदीशचंद्र माथुर' जी ने लिखा है।

संदर्भ स्पष्टीकरण :
प्रस्तुत एकांकी में उमा को देखने के लिए गोपालप्रसाद और शंकर आए हुए हैं। वे दोनों रामस्वरूप से बात-चीत करते हैं तभी वह कहते हैं कि - उन्हें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए, बस मैट्रिक पास होनी चाहिए और वह सुंदर हो, चित्रकला, सिलाई और संगीत आता हो। वे जब उमा को देखते हैं तो उसका तोल भाव करते हैं। ~~उमा आती है~~ वे उसे कुछ सुनाने के लिए कहते हैं, वे सुनाती है। फिर वे उसे कुछ कहने के लिए कहते हैं तो वह गुस्से से कहती है कि - जब दुकानदार मेज-कुर्सी बेचता है तो उन्हें उनकी राय नहीं पूछता बल्कि खरीदार को पसंद आनी चाहिए। यह कहते हुए वह पूछती - क्या लड़की का दिल नहीं होता, क्या उसे चोट नहीं लगती, क्या उसका कोई आत्मसम्मान नहीं। क्या वे भेड़-बकरियाँ हैं और यह भी पूछती है कि - शंकर पिछले फरवरी लड़कियों के होस्टेल के इर्द-गिर्द क्या कर रहा था तभी उन्हें पता चलता है की वह बी.ए पढ़ी है तो गोपालप्रसाद को गुस्सा आता है और वे ~~ऊपर प्रस्तुत~~ उपर्युक्त वाक्य कहते हैं।

3

प्रश्न ४.

२. 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी 'जगदीशचंद्र माथुर' जी द्वारा लिखी गई है। प्रस्तुत एकांकी के कुछ पात्र है - उमा, रामस्वरूप, प्रेमा, शंकर, गोपालप्रसाद और रतन।

प्रस्तुत एकांकी में विवाह के लिए उमा को देखने गोपालप्रसाद और शंकर आए हुए है। गोपालप्रसाद एक वकील है और उनका बेटा शंकर बी.एम.सी करके लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है। उन्हें ऐसी लड़की चाहिए जो सुंदर हो, जिसे चित्रकला, सिलाई, संगीत आता हो, जो ज्यादा पढ़ी लिखी न हो। उनका मानना है कि उन्हें नौकरी तो (बस मैट्रिल पास हो) लगानी तो है नहीं ना ही वे घर एक मैमसाब चाहते हैं जो अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़े और पॉलिटिक्स पर बहस करे बल्कि तो गृहस्थी चलाने वाली लड़की चाहिए। लेकिन उमा तो बी.ए पढ़ा है, तो रामस्वरूप यह बात गोपालप्रसाद से छुपा देते हैं। वे कहते हैं कि उमा बस मैट्रिक पास है। जब उमा अपना सोने की रिमवाला चश्मा पहनकर हाथ में पान का दे लेकर आती है तो गोपालप्रसाद और शंकर चौंक जाते हैं। वे पूछते यह चश्मा ज्यादा पढ़ने की वजह से तो नहीं लगा है तब फिर रामस्वरूप झूठ बोलते हैं कि - उमा की आँखें दर्द हो रही थी इसलिए ना की पढ़ाई की वजह से। ~~लेकिन~~

गोपालप्रसाद उमा की खामियाँ पूछता है लेकिन स्वयं बेटे शंकर की खामियों को छिपाता है। जैसे की वह एक साल फैल हुआ लेकिन उसका कारण वह ~~बिमारी~~ परीक्षा में शंकर बीमार था करके बोलता है।

गोपालप्रसाद ~~अपने बेटे~~ नहीं चाहता था कि उसका बेटा अपनी बहू से नीचा हो। चाहे अपना बेटा कितना भी खराब हो वह उनको अच्छा दिखाता है। ऐसा कहते हुए एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर जी यह दिखाना चाहते हैं कि वर्तमान काल में भी ~~का~~ समाज लड़कियों को कैसा देखता है और उनसे एक ~~का~~ अलग ही अपेक्षा करता है।

10

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I st INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Bhoomika. M. Kondaguli Roll No./ಸ್ಥಾನ : 001 Date /ದಿನಾಂಕ :05-01-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM22S0180

Invigilator's Signature / ಕೂಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 24 / 30

प्रश्न-१)

Ans-१) २) जगदीशचंद्र माथुर

Ans-२) २) बी.ए

Ans-३) २) पुन्जीपती

5

Ans-४) २) साम्यहीन - साम्यवादी

Ans-५) २) मि. सेठ ने

प्रश्न-२)

Ans-१) 'आधिकार का रक्षक' कहांकी जिसे उपेन्द्रनाथ अश्क जी ने लिखा है, उसमे भगवती नाम रसोइया था जो मि. सेठ के घर में काम करता था। उसे मि. सेठ ने तीन महीनों से पैसा नहीं दिया था यानी उसे तीन महीनों से वेतन नहीं दिया गया था। भगवती ने जब मि. सेठ से वेतन मांगा था वो देने से मना कर देते हैं और नौकरी से निकालने की धमकी भी देते हैं। इस तरह भगवती को मि. सेठ से बहुत समस्या थी।

4

Ans-२) 'रीढ़ की हड्डी' कहांकी जिसे ~~उपेन्द्र~~ जगदीश-चंद्र माथुर जी ने लिखा है, उसमे उमा की शादी की चर्चा हो रही थी। उमा की माँ प्रेमा और पिता रामस्वरूप अपनी बेटी की शिक्षा की बात लड़केवालों से यानी शंकर और उसके पिता गोपालप्रसाद छुपाना चाहते थे क्योंकि ⟹

- लड़केवालों को अपनी बहु बहुत पढ़ी-लिखी नहीं चाही थी। वो चाहते थे कि बहु ज्यादा से ज्यादा मैट्रिक ही पढ़ी हो नहीं तो वह गृहस्थी संभालने की जगह अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ने बैठेगी। इसलिए प्रेमा और रामस्वरूप अपनी बेटी की बी.ए. शिक्षा वाली बात छुपाना चाहते थे।

5

प्रश्न-3)

Ans-4) प्रेषक: इस वाक्य को हमारे पुस्तक 'ककांकी कलश' में दिया गया ककांकी 'रीढ़ की हड्डी' नामक ककांकी से लिया गया है जिसे जगदीशचन्द्र माथुर जी ने लिखा है।

संदर्भ: इस वाक्य को गोपालप्रसाद गुस्से में रामस्वरूप जी से कहते हैं।

स्पष्टीकरण: जब उमा को कुर्सी-मेज की तरह तोल कर, उससे चलने के लिए, गाने के लिए कहकर और पेंटिंग, सिलाई वगैरा आता है कि नहीं पूछकर, उमा को अपमान करते हैं तो उसे गुस्सा आ जाता है और वह कहती है कि लड़कियों को भी दिल होता है और उन्हें भी दुख: होता है। वह बताती है कि उसने बी.ए. पास की है और कोई सम्मान जाने वाली काम नहीं की जैसे गोपालप्रसाद का बेटा शंकर ने लड़कियों की हास्टल में गुस्सा कर अपना मान कोया था। यह सुन कर गोपालप्रसाद को गुस्सा आ जाता है और वह रामस्वरूप से दिया गया वाक्य बोलते हैं।

5

प्रश्न-४)

Ans-२) 'अधिकार का रक्षक' एक नाटक है जिसे उपेंद्रनाथ अश्क जी ने लिखा है। इसके प्रमुख किरदार हैं मि. घनश्याम सेठ जो समाचार पत्र के संचालक और असेंबली के उम्मीदवार हैं। जब उन्हें हरिजन सभा से रतनराम जी का फोन आता है, तब वो बताते हैं कि जब वो अधिकार में आयेंगे तो कैसे हरिजनों की सेवा करेंगे, उनके मान-सम्मान के लिए काम करेंगे और हरिजनों की बच्चों के लालन-पोषन, शिक्षा के लिए काम करेंगे लेकिन जब उनका उनका बेटा बलराम अंदर आता है तो उसे मार-पीटकर और अपने नौकर रामलखन को भी गालियाँ दे कर बाहर भेज देते हैं। जब उसे होजरी सभा से फोन आता है तो उनसे कहते हैं कि वो मजदूरों की वेतन बढ़ाएंगे और उनकी काम करने का समय कम करायेंगे लेकिन उन्होंने खुद अपने नौकरों का वेतन दो-तीन महीनों से रोक कर रखा है और अपने समाचार पत्र के संपादक से दिन के बारह-तेरह घंटा काम करने लिए मजबूर करते हैं।

उन्होंने अपने समाचार पत्र में छात्र को शिक्षा, हक के तरफ में कुछ छपवाया था जिससे प्रेरित हो कर दो छात्र उनके घर आते हैं और बताते हैं कि पूरा छात्र-धन उनको ही मत देगा। मि. सेठ प्रसन्न हो जाते हैं। छात्र चाहते थे कि मि. सेठ अपने समाचार पत्र में उनके विश्वविद्यालय के प्रिंसिपल के खिलाफ कुछ छापे। उस समय मि. सेठ उनसे सहमत होते हैं लेकिन जब वो चले जाते हैं तो अपने संपादक से कहते हैं कि छात्रों ने जो भी बोला है वह मत छापो। बाद में जब उन्हें महिला संघ के श्रीमती सरला देवी जी का फोन आता है तो उनसे बात करते वक्त वो कहते हैं कि वो महिलाओं को उनका हक दिलाएंगे ⇒

और मान-सम्मान दिलाएंगे लेकिन उन्होंने खुद अपनी पत्नी को मार-पीटकर घर से बाहर निकाल दिया होता है।

इससे हमे पता चलता है कि मि. सेठ जो भी बोल रहे है वह सब सिर्फ अधिकार पाने के लिए, चुनाव जीतने के लिए बोल रहे है और वो असल जिंदगी में ऐसा नहीं है। इस नौटंकी के द्वारा मि. सेठ के किरदार के द्वारा अश्क जी सबको यह बता रहे है कि हम जब किसी को चुनाव में मत दे तो बहुत सोच-समझकर और उनके काम को देख कर देना चाहिए ना की उनके बातों में आकर।

10

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

IA INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Sanjanya. M. Budihal Roll No./ಸ್ಥಾನಕ : _____ Date / ದಿನಾಂಕ : 5-1-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : 3 Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಕ : VI5KM22S0172

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29 / 30

प्रश्न-1 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लेखक के उत्तर लिखिए।

1. 2. जगदीशचंद्र माथुर
2. 2. बी. ए.
3. 1. पूंजीपती
4. 1. साम्यहीन - साम्यवाद
5. 1. मि. सेठ ने

(5)

प्रश्न-2 किसी दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए —

2. रामस्वरूप और प्रेमा गोपालप्रसाद से उमा की शिक्षा इसलिए छुपा रहे थे क्योंकि उमा बी. ए. पढ़ी हुई, उसकी शिक्षा के वजह से रामस्वरूप को कोई लड़के न मिल रहे थे शादी के लिए, इसलिए उन्होंने गोपलप्रसाद जी से अपनी बेटी की पढ़ाई छुपाई और कहा की उमा सिर्फ मैट्रीस पढ़ी है ही करके बताया गया था। रामस्वरूप और प्रेमा अपनी बेटी की शादी सुलझी करवाना चाहते थे, पर उमा की शिक्षा को कोई अपना नहीं रहा था, सबको लड़की कम पढ़ी लिखी ही चाहिए थी, सबका यह कहना था, लड़की कम पढ़ी लिखी होनी चाहिए और लड़की तोड़ी पैसा कमानेवाली लड़की को सिर्फ घर का काम संभालना, पर गोपल प्रसाद को उमा की शिक्षा पता चल जाती है और वह रामस्वरूप को कह रहे थे आपने हमसे झूठ बोला है, आपने अपनी बेटी की शिक्षा छुपाई है। पूर उमा ने कहा की हाँ मैंने बी.ए. पढ़ा है और कोई छोटी नहीं की है वह कहने लगी की आपके बेटे के लिए जो आप सरवगुन लड़की ढूंढ रहे हैं वह शायद को कोसती है और बताती है की वह कैसे लड़कियों के होस्टल में रहकर - उठकर घूमता है और कई गलत प्रसंग भी किया है।

(5)

3. रामस्वरूप ने रतन को मकान लाने भेजा बाजार को क्योंकी घर में मकान न था और लड़के वाले आ को देखने आ रहे थे, रामस्वरूप रतन को मकान लाने भेजता है पर तब तक गोपालप्रसाद और शंकर आ जाते हैं और दवाना कह-कहते हैं, तब रतन आगे से आके रामस्वरूप से कहता है की लड़के वाले या आ गया, वे मेहमानों को रामस्वरूप बिठाता है और रतन को बाजार भेजा जाता, जब तक रामस्वरूप मकान लेके आता है तब तक लड़के वाले चले जाते हैं, क्योंकी उन्हें उमा की शिक्षा पता चल गई, और उमा ने भी शंकर की सच्चाई बता दी थी, लड़के वाले जाने के बाद रामस्वरूप और कुर्सी पर बैठ जाता है, उमा रोने लगती है, और प्रेमा उदास बनी रहती है, तभी ही रतन मकान लेके आता है और सब उसके तरफ देखते हैं।

प्रश्न-3) किन्ही चार का संदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए -

4.) "बाबू रामस्वरूप, क्या आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे बुलाया है?" यह संवाद गोपाल प्रसाद जी रामस्वरूप से कहते हैं क्योंकी जब प्रेमा पान की तश्तरी लेके आती है तब गोपालप्रसाद लड़की का चाल ढलन देखते हैं फिर उसे गाने और हारमोनियम बजाने के लिए कहने लगते हैं, फिर उमा की नजर गीत-गाते शंकर पर पड़ती है और उसे याद आता है की यह लफंडा लड़कीयों के हॉस्टेल में इधर, उधर घुमता है वह कई बार पकड़ा भी गया है। वह तुरतन गाना रुक जाती है फिर गोपालप्रसाद उमा से पूछते हैं की लड़की ने कोई अवगुण नहीं जीता है क्या कढ़ाई, सिलाई में, तो उमा को गुस्सा आता है क्योंकी गोपालप्रसाद जी लड़की को ठोक-बजा के देख रहे थे, उमा कहती है की वह कोई कुर्सि या मेज नहीं है जो आप मुझे ठोक बजा कर मोल भाव कर रहे हो। इसी का गोपाल प्रसाद गुस्सा हो जाते हैं। वह

कहते हैं की क्या आपने मेरी बेटी को बुलाया है। अम्मा यह सुन के कहती है की आप जो सद्गुण लड़की में ढूंढने आया है। अपना लड़का हॉस्टल के बाहर खड़े कर छोड़ा गया है। गोपालप्रसाद को अम्मा की शिक्षा के बारे में पता चलता है और वह दुखी हो जाते हैं तभी अम्मा भी कहती है की जाइए-जाइए और आपके बेटे की रीढ़ की हड्डी है की नहीं देखिये।

प्रश्न-8 किसी एक निबंधात्मक प्रश्न का उत्तर लिखिए

2. रीढ़ की हड्डी कहानी में स्त्री और पुरुष को समान दिखाने का भाव व्यक्त किया है क्योंकि समाज में लोग लड़कियों को ज्यादा शिक्षा नहीं देना चाहते हैं और जल्द शादी कराना चाहते हैं। यह कहानी में बताया गया है की अम्मा जो पढ़ी लिखी है वह लड़के वाले को न पढ़ी लिखी हुई चाहिए इसलिए रामस्वरूप जी गोपाल प्रसाद से झूठ कहते हैं की अम्मा सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। क्योंकि लड़के वालों का यह कहना था की लड़की कम पढ़ी लिखी होनी चाहिए। क्योंकि उसे सिर्फ घर की ही चलाना है और पैसा कमाने का काम सिर्फ लड़के का है। गोपालप्रसाद और शंकर दोनों पढ़े लिखे को है पर उन्हें लड़की कम पढ़ी लिखी ही चाहिए। अभी भी समाज में लड़कियों को ज्यादा इंजीनियर नहीं बनाते हैं क्योंकि लड़के वाला को कम पढ़ी लिखी चाहिए। यह कहना है की पढ़ी लिखी लड़कियां अपना ही काम चालाकी उनका क्या ही सब कहना मानना पड़ेगा पर इसी कारण लड़कियों की जल्दी शादी कर देते हैं, गोपालप्रसाद को जब पता चलता है की उन्हें कम लड़की पढ़ी लिखी है और वह रामस्वरूप को भला-बुरा कहते हैं, अम्मा भी उनके बेटे को नीचा दिखाती है, और कहती है जाइए-जाइए अपने बेटे की रीढ़ की हड्डी ठीक करें, रीढ़ की हड्डी- आत्मसम्मान के बारे में बताती है, और लड़की को नीचा, बात नहीं करना

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

I INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು: Supriya Zunjarawad Roll No./ಸ್ಥಾನ: _____ Date / ದಿನಾಂಕ: 5-1-2024

Subject/ವಿಷಯ: Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ: U15KM22S0051.

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28 / 30

प्र. १.

१ २. जगदीशचंद्र माथुर

2. २. बी. का

(5)

3 १. पुन्नीपती

४. १. साम्यहीन-साम्यवाद

५. १. मि. सेठ ने

प्र. २.

२. रामस्वरूप और प्रेमा इसलिए छुपा रहे थे क्योंकि शंकर के पिता गोपालप्रसाद चाहते थे की उनकी होने वाली बहु ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो। गोपालप्रसाद खुद काफी पढ़े-लिखे वकिल थे लेकिन फिर भी वह चाहते थे की उनकी होने वाली बहु अगर ज्यादा पढ़ी-लिखी होगी तो उनकी घर की इज्जत चली जाएगी और बड़ों से बहस भी करेगी। वह चाहते थे की उनकी बहु घर के अंदर और चार दिवारों के बीच में ही रहे।

(5)

३. रामस्वरूप ने रतन को मखखन लाने को बाजार भेजा था। क्योंकि उमा को देखने लड़के आने वाले थे तो उनको खाने के लिए रामस्वरूप ने भेजा था। रामस्वरूप उस मखखन को टोस्ट के साथ लगाकर खाने को देने वाला था। लेकिन रतन जल्दी लाया ही नहीं और मेहमानों ने टोस्ट को चाय में डुबोकर खा लिया।

(2)

प्र. 3.

4. संदर्भ = प्रस्तुत वाक्य को हमारे "काकाकी कलश" के पाठ्यपुस्तक में जगदीशचंद्र माथुर" द्वारा लिखित "रीढ़ की हड्डी" पाठ से लिया गया है।

स्पष्टीकरण = "बाबू रामस्वरूप, क्या आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे बुलाया है?" यह वाक्य गोपालप्रसाद रामस्वरूप से पूछते हैं। क्योंकि जब गोपालप्रसाद दहेज के बारे में पूछता है रामस्वरूप से और ज्यादा खर्चा पूछता है तो उमा गुस्से में आकर उलटा सीधी बोल देती है। तो यह वाक्य कहते हैं गोपाल प्रसाद।

4

विशेष्य = इस पाठ में स्त्री शिक्षा को लेकर और दहेज के बारे बात की गई है।

प्र. 4.

2. रीढ़ की हड्डी काकाकी जगदीश चंद्र माथुर जी ने लिखा है। इस पाठ में लड़की को देखने के लिए लड़के वाले आते हैं। लड़की की पढ़ाई बी.ए. और एम.ए. तक की है। और लड़के के पिताजी बहुत पढ़े लिखे थे लेकिन खुद पढ़े-लिखे होकर भी वह बहु कम पढ़ी-लिखी बहु चाहते थे क्योंकि अगर बहु पढ़ी-लिखी होगी तो उसे नौकरी करने लिए शहर से या फिर घर से बाहर भेजना पड़ेगा। और अगर औरते घर के बाहर जाती है तो उन्हे बहुत निचा समझते है और ऐसा लोगों का मानना है कि और बाहार काम करती है तो घर की संस्कृती, बड़ो का आदर करना, आदी सब भुल जाती है। अगर लड़की पढ़ी-लिखी हो तो वो बड़ों से बहस भी करेगी ऐसा लोगों का मानना है। इसलिए लड़कियों को ज्यादा पढ़ाते नहीं थे उस समय। और पहले जमाने में दहेज भी ज्यादा माँगा जाता था। अगर लड़की पढ़ी-लिखी

है तो दहेज भी ज्यादा देना होगा। लेखक की मनोदशा यह है की लड़की पढ़ी-लिखी होकर भी वह पढ़ी-लिखी नहीं है बताया जा रहा। और इतना सब कुछ मेहनत से पढ़ा हुआ सब बेकार जा रहा है। और साथ ही में दहेज भी ली जा रही है। जो लड़का देखने आया था उसके गुण और लक्षण भी कुछ ठीक नहीं थे। लड़की रिश्ता पसंद ना होने पर भी उसे रिश्ते के लिए राज़ी होना पड़ता है। इस कहानी का शिक्षक यह है की जब भी हम दूसरों पर उँगली उठाते हैं तो हमें पहले हमारे बारे में सोचना चाहिए और हमारा स्वभाव उनसे भी अच्छा होना चाहिए।

प्र. 3.
उ संदर्भ = प्रस्तुत वाक्य को हमारे "काकी कलश" पाठ्य पुस्तक में "जगदीशचंद्र माथुर" द्वारा लिखित "रीढ़ की हड्डी" पाठ से लिया गया है।

स्पष्टीकरण = "लेकिन घर जाकर पता लगा हुआ कि आपके बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं।" यह वाक्य रामस्वरूप की बेटी उमा शंकर के पिता गोपालप्रसाद को कहती है क्योंकि शंकर के पिता को काफी कम पढ़ी लिखी बहु चाहिए थी और उनके सामने रामस्वरूप ने उमा की पढ़ाई सिर्फ दसवी तक बताई थी। शंकर को पता चल गया की उमा की पढ़ाई सिर्फ दसवी नहीं बल्की उससे ज्यादा हुई है। और शंकर के पिता अनाब-शनाब बोलने लगते हैं। तो उमा गुस्से में कहती है कि शंकर लड़कियों के हॉस्टल में हुड़-गिड़ करते हुआ पकड़ा गया था और मार भी खाई थी तो उसी वजह से शायद उसकी रीढ़ की हड्डी है या नहीं कहती है।

विशेष्य = इस कहानी में बताया है कि हमें कभी भी दुसरों की भला चाहनी चाहिए तो भगवान भी उसका भला चाहता है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Appalal S. Mulla. Roll No./ಸ್ಥಾನ : 195 Date /ದಿನಾಂಕ : 13/02/2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : (III) Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM22S0245

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 24 / 30

प्रश्न 1)

1)
→ 1) भगवतीचरण वर्मा।

2)
→ 1) बैरिस्टर की पत्नी।

3)
→ 3) ~~[illegible]~~ कलाकार।

7)
→ 1) मकान मालिक।

5)
→ 1) वैज्ञानिक।

6)
→ 1) रीढ की हड्डी।

5

प्रश्न २)

२)

संदर्भ :- इस वाक्य को "दो कलाकार" नामक एकांकी से लिया गया है। इस 'दो कलाकार' नामक एकांकी के लेखक भगवतीचरण वर्मा जी है।

स्पष्टीकरण : इस एकांकी मे मार्तण्ड एक चित्रकार है। और चूड़ामणी एक कवि है। दोनो कलाकार एक किराए के कमरे मे रहते है। उस कमरे के मालिक छलाकीदास जी है। एक दिन दोनो बाजार मे जाते है। मार्तण्ड ~~परमानन्द~~ सेठजी के घर जाता है अपने चित्र को बेचने के लिए। और परमानन्द एक प्रकाशक है। चूड़ामणी अपनी कविता के संग्रह उस प्रकाशक के पास बेचते है। चूड़ामणी पैसे बनाने के लिए परमानंद प्रकाशक के पास जाता है। परमानंद जी चूड़ामणी से बोलते है तेरा एक भी कविता नही बेची मैने तो तुझे मै पैसे कहा से दू। चूड़ामणी को पता चलता है की उन्होने कल ही एक मोटर खरीदी है। तो चूड़ामणी परमानंद की सोने की घडी उठाकर वहा से भागा कि अगर दो घंटे के अंदर पैसे नही मिले तो मै घडी बेच दूगा।

5

संदर्भ : इस वाक्य को जान से प्यारे नामक एकांकी से लिया गया है। इस जान से प्यारे नामक एकांकी लेखक 'ममता कालिया' जी है।

स्पष्टीकरण :

इस एकांकी मे डॉ. कौशिक एक वैज्ञानिक है। और अविनाश डॉ. कौशिक के मित्र है। डॉ. कौशिक अपने लॉबोरेटरी प्रयोग कार्य करते है। उन्होने ऐसा फॉर्मूला ढूंढ लिया है जो मरे हुए व्यक्ती को जिंदा करता है। उन्होने उस फार्मूला का प्रयोग एक कॉक्रोच पर किया है। और वह कॉक्रोच फार्मूला का प्रयोग करने के बाद जिंदा हो गया। और यह सब बात डॉ. कौशिक ने अविनाश से बताय तो यह झूठ है। अगर हम कॉक्रोच को चप्पल से दबोचते तो वह फिर दस मिनट के बाद उठकर भाग जाता है। डॉ कौशिक अविनाश से बोलते है यह कॉक्रोच हल्के धक्के से मरा हुआ था। तो उसी समय "युरेका, मैंने ढूंढ लिया, मैने ढूंढ लिया यह वाक्य बोलते है।

5

प्रश्न 7)

जनसंचार।

जनसंचार शब्द अँग्रेजी भाषा के mass communication का हिन्दी पर्यायवाची है। इसका अभिप्राय बहुल मात्रा मे या भारी मात्रा मे या भारी आकार मे बिखरे लोगो या अधिक मात्रा मे लोगो मे संचार माध्यम से सूचना या संन्देश पहुँचाना है। एक साथ एक बहुत बड़े मिश्रित जनसमूह को सन्देश पहुँचाना जनसंचार कहलाता है।

किसी एक व्यक्ती से दूसरे व्यक्ती को अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियोंको कुछ सार्थक चिन्हो, संकेतो या प्रतीको के संप्रेषण से सूचना, जानकारी, ज्ञान या मनोभाव का आदान प्रदान करना है।

कुछ संचार विशेषज्ञो का कहना है कि संचार, अर्थ का संप्रेषण है, सामाजिक मान्यताओ का संचारण है, या अनुभव बाँटना है।

इस प्रकार जनसंचार से अभिप्राय: एक बड़े मिश्रित जनसमूह को एक साथ संन्देश पहुँचाना है। अत: जनसंचार एक विशेष प्रकार का संचार है जो यंत्रचालित है और संदेश को दोहरा गिहरा कर दूर-दूर तक भेजता है। जनसंचार का प्रवाह असिमित है।

5

प्र 3 श

2)

स्त्री की शिक्षा

स्त्री की शिक्षा वर्तमानकाल मे कोशिश पर है। अगर स्त्री पढ़ेगी। स्त्री आगे जाएगी। और स्त्री आगे जाएगी तो हमारा भारत देश आगे जाएगा। जैसा की हमारे देश मे पहली IPS ऑफिसर किरण बेदी जी है। जो की सामान्य परिवार से होकर कड़ी मेहनत करने के बाद उन्होंने IPS की नौकरी जॉईन की। उन्होंने नौकरी जॉईन होने के बाद बहुत बड़े काम किए। जैसा की उन्होंने जब भी ड्यूटी पे रहते थे तो उन्होंने अपनी परवाह किये बगैर लोगो की सेवा करने मे लगी रहती है। उन्होंने सेक्यूरिटी के कारण भारत के प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की गाड़ी रोकी थी। उन्होंने कहा मै जब तक ड्यूटी पर हू मेरे हाथ से जितना अच्छा काम हो उतना अच्छा बोलती और लास्ट मे बोलती है I do my best for my nation at any time.

अगर हमारे परिवार एक स्त्री शिक्षित है तो हमारे परिवार के लोग शिक्षित होंगे। स्त्री शिक्षित होगी तो वह अपने बच्चो को पढ़ाएगी अपनी पत्नी को बताएगी और अपने माँ-बाप को सलाह देगी। अगर अपने परिवार मे कोई गलत काम हो रहा होता है तो वह उस गलत को रोकेगी। अगर स्त्री पढ़ेगी तो वह पुरुषो से सामना करेगी। और पुरुषो से आगे बढ़ेगी।

हाल-ही मे जो UPSC मे परिक्षा हुई उसमे ऑल इंडिया रैंक 9 नंबर आने वाली भी स्त्री है और जो हाल ही

National Entrance Eligibility Test हुआ उसमे भी ऑल इंडिया। रैंक नंबर 1 आने वाली स्त्री ही है।

स्त्री अब हर फिल्ड मे पुरुषो से आगे है। इसका कारण सिर्फ और सिर्फ महात्मा ज्योतिबा फुले है। उन्होने ही स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहीत किया है। वह नही होते थे तो अभी तक स्त्री घर की संभाल रही होती थी।

महात्मा ज्योतिबा फुले उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले स्त्री शिक्षा के संशोधक है। उन्होने पहली स्त्री की स्कूल पुणे मे निकाली वहा से ही स्त्री शिक्षा की शुरुवात हुई।

अगर स्त्री पढेगी तो वह परिवार की रीढ की हड्डी बनेगी। स्त्री पढेगी तो परिवार आगे बढेगा।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023 -2024-

Name / ಹೆಸರು : Alfiya. Choudhari Roll No./ಕ್ರಮಾಂಕ : 105 Date / ದಿನಾಂಕ : 13-02-2024

Subject/ವಿಷಯ : एकांकी कलश Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷಾ ಕ್ರಮಾಂಕ : U15KM22S0124

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಮಾಪಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 21 / 30

प्र. १.

१. १. भगवतीचरण वर्मा

२. २. बैरिस्टर की

३. २. कलाकार

४. २. मकान मालिक

५. २. वैज्ञानिक

5

प्र. २.

३. "यूरेका, मैंने ढूँढ लिया, मैंने ढूँढ लिया।"

प्रस्तुत वाक्य 'एकांकी कलश' नामक पुस्तक से लिया गया है। और 'जाने से प्यारे' नामक एकांकी से लिया गया है जिसे 'ममता कालिया' जी ने लिखा है।

जान से प्यारे एकांकी के पात्र हैं - डॉ. कौशिक जो एक वैज्ञानिक हैं और उनके मित्र हैं अविनाश। प्रस्तुत एकांकी द्वारा ममता कालिया जी दिखाना चाहती हैं कि खून के रिश्तों में भी स्वार्थ और लोभ छुपा हुआ है।

अपर्युक्त वाक्य डॉ. कौशिक अविनाश से कहते हैं जब उन्होंने मृत जीव यानी मरे हुए व्यक्ति को जिंदा करने का फॉर्मूला खोज लिया। उन्होंने उस फॉर्मूले को, कॉकरोच पर डाला था जिससे वो कॉकरोच जिंदा (मरे हुए) हो गया था। इसी खुशी में डॉ. कौशिक कहते हैं कि - "यूरेका मैंने ढूँढ लिया, मैंने ढूँढ लिया।"

२. 'सरकार का हुक्म था, कैसे न आता ? पर हुजुर यह पत्र किसका है ?
प्रस्तुत वाक्य एकांकी कलश नामक पुस्तक से लिया गया है। और 'समरेखा विषमरेखा' नामक एकांकी से लिया गया है जिसे 'विष्णु प्रभाकर' जी ने लिखा है।

समरेखा विषमरेखा एकांकी के पात्र हैं :-
केशव, रेवा, रंजन, जमना और हरि।
केशव बैरिस्टर है और रेवा उसकी पत्नी है।
इस एकांकी द्वारा विष्णु प्रभाकर जी यह व्यक्त करना चाहते हैं कि इस आधुनिक युग में पति-पत्नी का प्रेम और अधिकारों की सहजता का चित्रण किया गया है।

5

प्रस्तुत एकांकी में उपर्युक्त वाक्य केशव रेवा से कहता है जब रेवा उसे मूवी जाने के लिए बुलाती है। वह आता है और रंजन का लिखा हुआ पत्र देखकर पूछता है - 'सरकार का हुक्म था, कैसे न आता ? पर हुजुर यह पत्र किसका है।

प्र.४.
२. जनसंचार
किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों को संदेश या सूचना पहुँचाने को जनसंचार कहते हैं।
किसी भी माध्यम से एक साथ एक बड़े जनसमूह को संदेश पहुँचाने को जनसंचार कहते हैं और इस प्रक्रिया में प्रयुक्त होनेवाले माध्यमों को जनसंचार के माध्यम कहते हैं।

जनसंचार के माध्यमों को तीन हिस्सों में बाँटा गया है -
i) प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम)
ii) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
iii) सोशल मीडिया

i) प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम):
प्रिंट मीडिया एक ऐसी ~~माध्यम~~ मीडिया है जो लिखित रूप में जनता के सामने प्रस्तुत होता है और इसका उपयोग करके संचार स्थापित होता है।
जैसे - अखबार, पत्रिकाएँ, पॅमफ्लेट, इत्यादि।

समाचार पत्र को भी दो भागों में बाँटा गया है -
~~a)~~ अ) हार्ड न्यूज़ : जो प्रतिदिन देखते हैं।
आ) सॉफ्ट न्यूज़ : जो विशेष रूप की खबर देती है और इसका मुद्रण का समय होता है जैसे साप्ताहिक, मासिक, आदि।

ii) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया :
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक ऐसी मीडिया है जो इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का उपयोग कर, (जनसमूह के बीच) संचार स्थापित करती है।
जैसे - टीवी, रेडिया, सिनेमा, आदि।

(5) iii) सोशल मीडिया :
सोशल मीडिया एक ऐसी मीडिया है जो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का ही एक रूप है परंतु इसका प्रयोग करने के लिए इंटरनेट की जरूरत पड़ती है।
जैसे - फेसबुक, ट्विटर, वाट्सएप, इंस्टाग्राम, आदि।

प्र.३.
२. 'रीढ़ की हड्डी' ~~नाम~~ एकांकी को 'एकांकी कलश' नामक पुस्तक से ली गयी है। जगदीशचंद्र माथुर जी ने इस एकांकी की रचना की है।

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ~~ने~~ यह व्यक्त करते हैं कि स्त्री की शिक्षा वर्तमानकाल में भी हाशिय है। इस एकांकी में लड़के वाले लड़की को देखने आते हैं। उनकी लड़की वालों से बहुत सारी अपेक्षाएँ है कि लड़की सुंदर होनी चाहिए, गाना-बजाना आना चाहिए, सिलाई-बुनाई और अनेक चीज़े आने चाहिएँ जो एक घरेलू लड़की को आना हो परंतु वे यह नहीं चाहते की लड़की पढ़ी लिखी हो, उन्हें बस मैट्रिक

पास वाली लड़की चाहिए। लड़के के पिता जी सोच यह है कि उन्हें तो कोई नौकरी नहीं लगानी और नाही वे अपने घर अफसर चाहते हैं। तो वे लोग लड़की देखने आते हैं। लड़की के पिता ने भी उनसे झूट कहा है कि लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है हालांकी उसने बी.एस.सी किया है। लड़की की माता को भी उसका पढ़ना-लिखना नहीं पसंद है वे उसे भी अपनी तरह घरेलु बहू बनाना चाहती हैं जो सजे-सवरे तैयार होकर लड़के के पास जाए। परंतु लड़की को ऐसे लड़के से विवाह नहीं करना है जो सिर्फ अपने पिता की ही बात माने और सोचे कि पढ़ाई तो लड़कों का काम है।

इस एकांकी में यह उदाहरण भी दिया गया है कि पंख सिर्फ मोर के होते हैं, मोरनी के नहीं और दाड़ी भी आदमी की होती है, औरत की नहीं। यह बात दोनों लड़का और लड़की के पिताजी कहते हैं। इसका मतलब है कि उन्हें लगता है पढ़ाई सिर्फ लड़कों का काम है और कामयाब बनना भी। लड़कियों बस घर में बैठ चूला जलाना, तैयार होकर सुंदर दिखना है और वो भी पती के सामने।

इस एकांकी की द्वारा एकांकीकार यह व्यक्त करना चाहते हैं कि इस आधुनिक दुनिया में भी लड़कियों को पढ़कर आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया जा रहा है बस लड़की बड़ी हो गई तो उसका विवाह कर दो और भेज दो उसे अपने ससुराल। लड़कियों के पंख काटकर उनसे उढ़ने का मौका छीन लिया जा रहा है।

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : बसवराजेश्वरी . शि. इजेरी Roll No./ಸಂಖ್ಯೆ : 113 Date / ದಿನಾಂಕ : 13 - 2 - 2024

Subject/ವಿಷಯ : हिंदी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸಂಖ್ಯೆ : U15KM22S0200

Invigilator's Signature / ಕೂಡದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಮೌಲ್ಯಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28 / 30

प्रश्न १.

१. १. भगवतीचरण वर्मा

२. २. बैरिस्टर की

३. १. २. नौकर

४. १. मकान मालिक

५. १. वैज्ञानिक (5)

६. २. रीढ़ की हड्डी

प्रश्न २

२. राकांकी : दो कलाकार

राकांकीकार : भगवतीचरण वर्मा

विवरण : चुड़ामणी कवि था, और मार्तण्ड चित्रकार। दोनों ही एक कमरे में रहते थे। चुड़ामणि कुछ रेजिस्टर पर उक्तीयां लिखयी देता है। मार्तण्ड चित्र बनाता हुआ दिखता है। चुड़ामणि सोचती है कि परमनंद जी ने एक मोटर कर्ज लिया है। फिर बोलती है किताबें बिकती नहीं है। इसलिए चुड़ामणि ने परमानंद जी के सोने की घड़ी उठा ले आता है। चुड़ामणि प्रकाशक परमानंद जी को कहता है कि मुजे दो घंटे के अंदर पैसे नहीं मिले तो मैं इस घड़ी को बेच दूंगी। मार्तण्ड ने रईस लाला रामनाथ के पास तसवीर बेचने जाता है रईसलाला रामनाथ नहीं खरिदते है। इसलिए गुस्से में दवायी से लाये हुई रामनाथ के पिता की तसवीर उठा ले आता है। (5)

विशेषता :- चूड़ामणि कवि थे और मार्तण्ड चित्रकार थे। दोनों एक छोटे कमरे में रहते थे।

३. शीर्षक :- जान से प्यारे
शीर्षकार :- ममता कालीया
विवरण :- डॉ. कौशिक वैज्ञानिक था और कौशिक का मित्र और सहयोगी अविनाश था। कौशिक ने एक कॉक्रोच पर संशोधन किए कर रहे थे, मारे हुए कॉक्रोच जिंदा होगयी। इसलिए कौशिक बहुत खुश हुई थी। इस बात अविनाश को कहता है, अविनाश कहते है कि कॉक्रोच पुरी मरी नहीं है। कौशिक कहता है कि कॉक्रोच छे घंटे के पहले ही मर गयी थी, मैं इस सोलूशन को डालने पर जिंदा हो गयी। कौशिक ने इस कंपाउंड को मनुष्य में प्रयोग करने के लिए धावना नगर, मोडेल नगर, इबहत नगर को जाये थे। कोई नहीं मरे हुए को जिंदा करने कि बात नहीं कहती है। कौशिक को बहुत दुःख होती है। अविनाश बोलती है इस जमान में लोग बहुत स्वार्थ होते है।
विशेषता :- डॉ कौशिक ने मरे हुए कॉक्रोच को जिंदा करने की एक सोलूशन खोज लिए थे।

प्रश्न ३
२. भुवनेश्वर जी के द्वारा लिखित रीढ़ की हड्डी शीर्षक है।
रामस्वरूप अपने बेटी को विवाह करना चाहता था। लड़की बि. ए. तक पढ़ी थी। गोपालप्रसाद और लड़का रामस्वरूप के बेटी को देखने के लिए आता है। गोपालप्रसाद वकील थे और लड़का मेडीकल कॉलेज में पढ़ रहे थे। रतन नौकर था। घर में मकान नहीं थी, मकान लाने के लिए रतन बाहर जाती है। घर को सभी लोग मिलकर सजा रहे थे। उसी समय रामस्वरूप और लड़का आता है। रामस्वरूप चाहता था कि लड़की पढ़ी लिखी नहीं चाहिए।

बस घर के काम करना लड़की चाहती थी। सभी लोग घर के अंदर आती है। रामस्वरूप गोपालप्रसाद बात करते करते हाते रहते है। उसी समय रामस्वरूप ने चाय लेकर आता है। लड़की को आने के लिए बोलता है। लड़की आती है। आँख में चश्मा देखकर अश्चर्य होती है और गोपालप्रसाद कहता है लड़की पढ़ी लिखी ~~न~~ नहीं है। रामस्वरूप कहता है आँख में चश्मा तोड़ दिन पेहनती है पढ़ी लिखी नहीं है। रामस्वरूप अपने बेटी को गाना गने के लिए कहता है। गाना गाती है और गुस्से में कहती है लड़की का मन नहीं होती, लड़की की पढ़ने का अधीकार नहीं है। मैं अपने बेटे को हॉस्टेल में देखी हूँ। किस तरह दूसरों को क्षमा माँगकर शिर झुकाकर आ रही थी। पूछता अपने बेटे को रीढ़ की हड्डी है या नहीं। गोपालप्रसाद कहता है कि आप मुझे अपमान करने के लिए पुकार रहे थे क्या और बोली थी अपने बेटी पढ़ी लिखी न हो। गुस्से में बाहर जाता है। रामस्वरूप और पत्नी को बहुत दुःख होती है। ~~रामस्वरूप~~ उसा गाना गाती थी, पढ़ी लिखी थी। आज का जमान में पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए घर में काम करनेवाली लड़की चाहिए।

(8)

प्रश्न 8

3. जनसंचार :-
किसी संदेश को किसी माध्यम से सारे लोग को पहुंचाना ही जनसंचार है।
एक संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और दूसरे से तिसरे व्यक्ति को पहुचाना है।
जनसंचार का माध्यम :-
रेडियो, समाचार पत्र, टेलिविझन, मोबायील आदी।

- मुद्रण माध्यम :-
- लेखन इस माध्यम पुराना माध्यम है।

- लिखकर सारे लोग को संदेश पहुंचाना है।
- उदाहरण :- समाचार पत्र, किताबें

- इंटरनेट माध्यम :-
  - इस माध्यम आज कल का माध्यम है।
  - इसमे ध्वन सुनाते है, और चित्र भी देखते है।
  - इस माध्यम से सबी लोग को संदेश पहुंचते है।
  - उदाहरण :- रेडियो, टेलिविझन, आदी।

विशेषता :-
- इस माध्यम से ~~सब~~ सारे लोग को संदेश मिलती है।
- मनोरंजन होती है।
- शिक्षा भी होती है।
- व्यापार भी करती है।
- पैसे को राक लोग से दूसरे लोग तक पहुंचती है।
- ~~इसका~~ राक दूसरे से बाते करती है।

हानी :-
- बहुत इंटरनेट उपयोग करने से आँख को, ध्यान को, मानसिक स्थिती को हानी होते है।

5

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Bhoomika. M. Kondaguli Roll No./ಸ್ಥಾನ : 001 Date / ದಿನಾಂಕ : 13-02-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : III Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : U15KM22S0180

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29/30

प्रश्न.१)

Ans-१) १) भगवतीचरण वर्मा

Ans-२) १) बैरिस्टर की

Ans-३) १) कलाकार

Ans-४) १) मकान मालिक

5

Ans-५) १) वैज्ञानिक

प्रश्न-२)

Ans-१) प्रेषक : यह वाक्य हमारे पुस्तक 'काकांकी कलश' में दिया गया काकांकी 'समरेखा - विषमरेखा' से लिया गया है जिसे 'विष्णु प्रभाकर' जी ने लिखा है।

संदर्भ : काकह वाक्य केशव अपनी पत्नी रेवा से कहता है।

स्पष्टीकरण : रेवा को उसके पूर्व मित्र रंजन का पत्र आया हुआ होता है जिसमे रंजन ने लिखा था कि वह एक महीने के लिए रेवा के घर रहने आनेवाला है। रेवा ने यह पत्र अपने पति को दिखाने के लिए टिपाई पर रखा था। जब केशव अपने काम कतमकर घर आता है, अपनी पत्नी को ३:00 बजे की पिश्चर-शो दिखाने ले जाने के लिए, तबी उसकी नजर इस पत्र पर पड़ती है और वह दिया गया वाक्य बोलता है। ⇒

वह बोलता है कि अगर सरकार का यानी उसकी पत्नी की हुक्म थी, तो आना ही पड़ा और पूछता है कि यह पत्र किसका है।

(5)

Ans-2) प्रेषक : यह वाक्य हमारी पुस्तक 'काकांकी-कलश' में दिया गया काकांकी 'दो कलाकार' से लिया गया है जिसे भगवतीचरण वर्मा जी ने लिखा है।

संदर्भ : यह वाक्य चूड़ामणि जो एक कवि है, मार्तण्ड से कहता है।

स्पष्टीकरण : जब मार्तण्ड, चूड़ामणि से कहता है कि उसने अपने चित्र नहीं बेचा क्योंकि लाला रामनाथ उसका चित्र सात रूपा में पूछ रहा था जो पचास रूपा की थी। फिर वह रामनाथ से जगड़ा करके, जल्दी में अपनी चित्र की जगह, रामनाथ के पिताजी का चित्र जो उसी दिन विलायत से आयी थी वह लेकर आया है। फिर चूड़ामणि भी बोलता है कि उसने भी अपने प्रकाशक परमानंद की सोने की घड़ी उठाकर लाया है और बोला है कि दो घंटे में पैसे देकर घड़ी ले जाना।

(5)

प्रश्न-3)

Ans-2) 'अधिकार का रक्षक' एक काकांकी है जिसे उपेन्द्रनाथ अश्क जी ने लिखा है जिसमें वह बताते है कि कैसे आज के नेता लोग सिर्फ और सिर्फ अधिकार पाने के लिए, बड़ी-बड़ी बाते बनाकर लोगों को उल्लू बनाते है। ऐसे ही एक दृश्य का वर्णन इस काकांकी में दिया गया है। श्री. सेठ समाचार पत्र के संचालक है और कांसबाली के उम्मीदवार हैं।

⟹

उसका बेटा बलराम है और नौकर रामलखन है। उसे जब हरिजनों के सभा से एक व्यक्ति का फोन आता है तो वो बताता है कि वह हरिजनों के लिए और उनके बच्चों के लिए बहुत काम करेगा लेकिन वह खुद अपने छोटे बेटे बलराम को मारता-पीटता है और नौकर रामलखन को भी गालियाँ देता है। वह कहता कुछ और है ~~और बोलता~~ कुछ और करता कुछ और है।

वह बोलता है कि जब वो नेता बनेगा तो मजदूरों की तंख्वा बढ़ाएगा और उनके काम करने का समय कम करवाएगा लेकिन वह खुद अपने घर के नौकरों को तीन महीने से तंख्वा नहीं दिया और अपने समाचार पत्र के संपादक को दिनके बारह-तेरह घंटे काम करने के लिए मजबूर कर रहा है। इससे पता चलता है कि उसके कहनी और करनी में बहुत अंतर है।

वह विद्यार्थियों के लिए भी काम करने की बात करता है लेकिन पीठ-पीछे करता कुछ और है। उसे जब स्त्री समुदाय से श्रीमति सरला देवी जी का फोन आता है तो वह बहुत बड़ी-बड़ी बातें करता है, बोलता है कि वह स्त्री सम्मान के लिए काम करेगा उन्हें उनका हक, सम्मान सब कुछ दिलाएगा लेकिन वह खुद अपनी पत्नी को मार पीटकर, गालियाँ दे कर घर से बाहर निकाल दिया होता है। जिससे हमें पता चलता है कि वह स्त्रीयों कि क्या ही सम्मान करेगा।

इस फाकांकी के द्वारा अश्क जी सब को बता रहे हैं कि कैसे आज की दुनिया में नेता लोग सिर्फ अधिकार पाने के लिए बड़की और बड़ी-बड़ी बातें बनाकर लोगों को उल्लू बनाते हैं। इससे हमें पता चलता है कि जब भी हम किसी को मत दें तो सोच-समझ कर उनके कामों को देखकर देना चाहिए ना कि उनकी बातों में आ कर।

9

प्रश्न-४)

Ans-2) जनसंचार: जनसंचार को अंग्रेजी में - 'mass communication' के नाम से जाना जाता है। किसी भी माध्यम से जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या एक से अनेक व्यक्तियों को संदेश भेजा जाता है तो उसे संचार माध्यम कहा जाता है।

जब एक वक्त पर बहुत सारे जन समूह को संदेश भेजा जा है तो उसे जनसंचार कहा जाता है। जन-संचार के तीन प्रकार हैं -

1) मुद्रित माध्यम
2) इलेक्ट्रानिक माध्यम
3) नव इलेक्ट्रानिक माध्यम

- मुद्रित माध्यम में हम पत्रिकाएँ, मेगजीन, जर्नल आदि देख सकते हैं जो विविध भाषाओं में प्रकट होता है।
- इलेक्ट्रानिक माध्यम में हम दूरदर्शन, रेडियो, रेडियो क्यासेट आदि को देख सकते हैं जो भी अलग-अलग भाषाओं में प्रसार होता है।
- नव इलेक्ट्रानिक माध्यम में हम इंटरनेट, ई-मेल, ई-कामर्स आदि को देख सकते हैं जो आज की दुनिया में बहुत उपयोग किया जाता है।

5

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

IInd INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು: Laxmi. Sivu Chavan Roll No./ಕ್ರಮಾಂಕ: 123 Date /ದಿನಾಂಕ: 15-2-2024

Subject/ವಿಷಯ: Hindhi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್: IIIrd Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸೀಟ್ ನಂಬರ್: U15KM22S0230

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28 / 30

I

1) दो कलाकार पाठ के लेखक भगवतीचरण वर्मा।

2) रेवा बैरिस्टर की पत्नी है।

3) रंजन कलाकार है।

4) बुलाकीदास मकान मालिक है।

5) डॉ. कौशिक एक वैज्ञानिक है।

5

III

2. रीढ़ की हड्डी

रीढ़ की हड्डी राकांकी के लेखक जगदीशचन्द्र माथुर जी है। वे लड़कीयों को छोटे बकरी की तरह माना जाता है। और लड़को को दोषो को न देखकर थी लड़कीयों को दोष को पर परका जाता है। यह कहानी में उमा एक पढ़ी हुई लड़की रहती है। और उनके पिता रामधारीसिंह, उनका मतलब उमा के उच्च शिक्षा को चुपाते है। उमा एक डिग्री पास करी रहती है। जब उमा को देखने शंकर और उनके पिता गोपाल आते है। जब उमा सबके सामने आई गोपाल हैरान हो जाता है।

जब उमा सबके सामने शंकर सारी बता देती है। की लड़कीको के हस्टोल में घुमने की वजह से वह बुरी तरह से पिट चुके थे।

वह लड़कीयो के दुराचार
के चक्कर काटने की वजह से
बहुत बुरी तरह से पिट चुके है।
बड़ी मुश्कील से वह अपनी जान
बचा सके है। जिसके कारण वह अपनी
रीढ़ की हड्डी ही नही है।
और अमा गोपाल बहुत सुनाती है।
लड़कीयों बेद बकरी की तरह मानने वाले
गोपाल को बहुत सुनाती है।
और लेखक के जी यह कहते है।
न कीसी ने बी साथ जा हो यह
लेखक का आदेश है। अमा अपनी
जान बचा सकी। उस शंकर
बदमाश की वजह से अपनी जिंदगी
गवा देती। तो हमे सबसे पहले
बहुत सावधान रहना चाहिए।
यह अमा एक डिग्री पास करी है।
और यह लेखक आदेश है। की
सब स्त्रीयाँ पढ़े और अपनी जिंदगी में
आगे बढ़े।

IV

(1) इंटरनेट

इंटरनेट एक ऐसी दुनीया बन
गई है। अजकल हर घरों में
इंटरनेट की चलन होने लगी है।
जब इंटरनेट एक दुनीया बन गई है,
अजकल तो यह सब कुछ यह मानने
लगे है। जो लोग जो नही समझते वो
भी इंटनेट के द्वारा समझाते है।
इंटरनेट हर एक घर में।
हर एक शीक्षालय और गाँव और
शहर और पुरे दुनीया में यह मान
चुके है की इंटरनेट ही अब सब
कुछ है। हम लोग सोलार और
हर घर के जानकारी भी इंटरनेस
ही पाना लगा लेते है। और

अब तो इंटरनेट छोटे-से
लेकर बड़े बुढ़े भी इंटरनेट की को
चलाने लगे है। और सब यह अनुकूल है
इंटरनेट में। आज हमारा देश भी आगे
जाने का कारण इंटरनेट के वजह से
है। आज कल लड़कीयो की शादी भी
इंटरनेट के द्वारा होती है।
और यह हम यह सब समझते
है। इंटरनेट के द्वारा तो सब हर एक काम
मानलो इंटरनेट एक दुनीया हो गई है।

5

II
(3)

"युरेका, मैंने ढूंढ लिया, मैंने ढूंढ लिया।"

संदर्भ :- यह पाठ जान से प्यारा रंकाकी से
लीया गया है। यह कवि डॉ. अविनाश
और से कहा गया है।

स्पस्टीकरण :- डा अवीनार विज्ञानीक केशव
कहते है। की मैंने ढूंढ लिया
मैंने ढुंढ लिया यह बुरी तरह से
कहते जब अविनाश पुछते है।
तो क्या ढुँढलीया तो बताते है।
की मैंने कॉकरोच को ढूँढ लिय मेरे
पास एक सोलुशन है। उसके अपर डालु
तो वह ठीक हो गया। तब इखीनाशी
केहते है। की कहा की ठीक हुआ।
जब कहते तो वह नही वो जिंदा था।
तो नही मैंने सोलुकंम डालने की वजह
से ठीक हुआ। तब आगे जाते है। वह
एक युवक मरा हुआ रहता है।
उसे केशव पुछते की मैं उसे बचा सकता हूँ।
तब वह कहते है। मरे हुओ को
कैसा जिन्दा कर सकते है। तब वह कोई
यह समझते कोई भी जिन्दा करने की
नही सोचता। यव यह कवि का केहना
है ॥

5

II (i) "सरकार का हुक्म था, कैसे न आता?
पर हुजूर यह पत्र किसका है।"

संदर्भ :- यह अधिकार का रूक
संकाकी से लिया गया है।

स्पीस्करण: सरकार का हुक्म था। की सब
कैसे न आता यह पत्र सुन
जो कीसका है हम यह कर
ये समझते है। की जो की लिखे
सरकार की बात हमें माननी है।
क्योंकी वह हमें आदेश देते है।
और मान लेते है। यह सबका
हैयही कहना है। हुजूर हम जो।
बड़े लोगो को कहते है। की यह
सरकार हुक्म हमें माननी चाहिए न
की न मानने की वजह से परिश्रम करना
पड़ता है। तो हम यह जान चुके थे।
यह कवि का कहना है। कि कभीभी
बड़ो का बात को नहीं टालना चाहिए।
और यह सब कहते है सरकार का
हुक्म मानो वरना कही का नही
रहोगे इसलीए सधिका बात मनानी
पड़ती है। इस तरह यह कवि का
कहना है।

5

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

1st INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : जयलक्ष्मी खांडया हत्तांगे Roll No./ಸ್ಥಾನ : 176 Date / ದಿನಾಂಕ 04.01.20

Subject/ವಿಷಯ : हिंदी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : 1st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನ : VISKM23S0226

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 27 / 30

प्रश्न 1

1) 3. आठ

2) 1. पंच परमेश्वर

3) 1. वाराणसी

4) 2. माधव

5) 1. इंजीनियर

6) 3. यशपाल

प्र. 2.

1) प्रस्तुत वाक्य 'आकाशदिप' इस कहानी से है। और कहानी के लेखक जयशंकर प्रसाद है। प्रस्तुत कहानी एक अधुरी प्रेमकहानी पे आधारित है।

इस कहानि की नायिका चंम्पा है और नायक बुध्दगुप्त है। चम्पा के पिता मणिभद्र के यहाँ क्षत्रिय थे। चम्पा एक ऐसी लड़की थी की जो बचपन मे माँ के प्यार से वंचीत थी। एक बुध्दगुप्त ने मणिभद्र के नाव पर प्रहार किया। उनमे घमंड युध्द छिड़ गया था। तब चम्पा के पिता ने आठ जलदस्युओ को मारकर अपनी जल समाधी हो गये। तब से चम्पा अनाथ की तरह मणिभद्र के यहाँ बंदी बनकर रह रही थी। तबी वक्त बुध्दगुप्त भी बंदी था। एक रात आँधी तुफान के समय वो बंदी से मुक्त हो गये और एक पहाड पर जाके रह रहे। उस पहाड़ का बुध्दगुप्त ने चम्पा-नगरी रख दीया। चम्पा ने बुध्दगुप्त के मन मे क्रोध मिटाकर प्रेम की आशा लगा दी। फिर दोनो साथ रहने लगे। फिर भी चम्पा को लगता था बुध्दगुप्त ही मेरे पिताजी को मारा है। तबी बुध्दगुप्त ने बताया "मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूँ, चम्पा! वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे।"

2) प्रस्तुत कहानी "आदमी का बच्चा" है। और इस कहानी के लेखक 'यशपाल' है। यशपाल जी ने बहुत सुंदरता से आदमी मी गर्विता और श्रीमंती के बारे मे बताया है।

इस कहानी की मुख्य पात्र "डॉली" है। डॉली अबी पाँच वर्ष की है। और

डॉली के पिता मिल में चिप इंजिनिअर है। और मामा घर पर रहती है। डॉली को संभालने के लिये आया है।

डॉली एक ऐसी लड़की है जो सबसे मिलकर रह रहना चाहती है। पर डॉली के मामा को ये सब पसंद नहीं है। डॉली के घर के पिछे डोबी और माली के क्वॉर्ट थे। डॉली की वहाँ जाना पसंद था। माली के तीन बच्चे पहलेसे ही थे अबी दस-पंद्रह दिन पहले एक बच्चा हुआ था। डॉली को बच्चे बहुत पसंद थे तो वह जाती थी पर मामा को डॉली का वहाँ जाना बिलकुल पसंद नहीं था। मामा को डर था की डॉली दोबी और माली के बच्चों के साथ रहकर बिगड जायेगी।

डॉली के घर में एक डेनी नाम का कुत्ता था। उसके चार-पाँच पिल्ले हो गये थे। पर भी बग्गा साहब और उनकी मिसेस उन डेनी बच्चो को किस और को नहीं देते थे। उनको गरम पानी मे डुबवाकर मार देते। पर डॉली के सामने कैसे मारना यह प्रश्न था। एक दिन डॉली स्कूल जाती जो व उस वक्त बग्गा साहब ने उस कुत्ते के बच्चो को गरम पानी मे डुबवा-कर मार दिया। फिर भी डॉली स्कूल से आती तो उसे मालूम हो जाता है।

एक दिन माली के बच्चे भूक से रोने लगे थे। रात-दिन रोना-धोना चालू था उन बच्चोंका तब मामा आया और डॉली बैठकर बात कर कह थे। तब मामा ने कहा 'इन माली के बच्चे तो भूक मे तम करके रखा है। तब डॉली बोली "मामा, माली के बच्चे को मेहतर से गरम पानी मे डुबवा दो तो फिर नहीं रोयेगा।"

प्र उत्तर

2) 'आकाशदीप' इस कहानी के लेखक जयशंकर प्रसाद है। उनका जन्म 30 जनवरी 1890 मे हुआ है। उन्होने आकाशदीप इस कहानी को बहुत अच्छे तरह से लिखा है।

इस कहानी की नाईका चम्पा और नायक बुद्धगुप्त है। चम्पा एक क्षत्रिय की बेटी है। चम्पा के पिता मनिभद्र के यहाँ क्षत्रिय का काम करते थे। चम्पा के माँ उसके बचपन मे ही चली बसी थी। तब से चम्पा अपने पिताजी के साथ मनिभद्र के यहाँ नाव पर रहती थी।

एक दिन बुद्धगुप्त ने मनिभद्र पर प्रहार किया उन दोनो के बिच युद्ध चिड गया उस युद्ध मे चम्पा के पिता और जल दस्यु को मारकर खुद भी जल मे जम समाधी हो गये। तबी मनिभद्र ने चम्पा को बंदी बनाया और बुद्धगुप्त को भी बंदी बनाया।

उस रात जहाज पर तुफान, आँधी आ गयी थी तबी उसका उपयोग करके रात मे चम्पा और बुद्धगुप्त फरार हो गये। फरार होके एक बडे द्वीप पर जा कर रह गये। बहुत दिन बाद बुद्धगुप्त उन आदिवासी यो पर अपना हक चलाने लगा और वह राज्य करने लगा। चम्पा को वहाँ की राणि बना दिया और उस नगर का या द्वीप का नाम चम्पानगरी रख दिया। ओ दोनो खुशी से रहने लगे।

चम्पा रोज एक बडे पहाड पर जाकर दीप जलाती थी। एक बार बुद्धगुप्त ने पुछा चम्पा तुम ए दूर यहा बैठकर निले आकाश की तरफ देखकर दीप क्यूँ

मै लगाती हो। तो चम्पा ने उत्तर दिया मै अपने पिताजी को शांति मिले और उनको सभी खुशीयाँ मिले इसलिये मै उनके लिये आकाशदिप लगाती हूँ। तबी चम्पा ने बुद्धगुप्त को अपने प्रेम के बारे मे बताती है। वह दोनो मान जाते है। एक दूसरे के साथ रहने लगते है। फिर चम्पा को यह एक शंका था की बुद्धगुप्त ही मेरे पिताजी को मारा है। वह चम्पा बुद्धगुप्त से सवाल करती है की तुमने हमारे पिताजी को मारा है। तबी बुद्धगुप्त कहता है। नही मैने नही मारा ओ मेरे एक जल दस्यु के हाथो मारे गये है। फिर भी वह यकीन नही करती है।

और बुद्धगुप्त से कहती है। तुम चले जाओ मै अकेली रहना चाहती हू। तो बुद्धगुप्त चम्पा को वही छोडकर भारत देश क मे जाता है।

प्र 3.

1) माधव

माधव यह एक आदमी है। यह टिपनी 'कफन' कहानी सी सुरू होती है। कफन कहानी के लेखक मुन्सी प्रेमचंद है।

माधव एक बेटा है और उसके पिता का नाम घिसू है। ये दोनो चमार जाव से आते है। दोनो बहुत ही आलसी थे। एक घंटा काम दो दो घंटा सोना। माधव की बीवी प्रसव वेदना से पछाड रही थी। तबी उन दोनो को कोई फरक नही पडता था। माधव की बीवी इसका नाम बुधिया था। बुधिया उन दोनो को बहुत ही देखभाल करती थी। घीसू की पत्नी भी गुजर गयी थी। अब वह बीचारी प्रसव वेदना से मर रही है। फिर भी माधव को अपने बिवी का ख्याल नही है। माधव और घीसू दोनो दुसरे के खेत से आलू उखाडकर खा रहे थे। माधव का मेन पात्र यही है।

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

2nd INTERNAL TEST 20 -20

Name / : [illegible] Roll No./ : 176 Date / : 4-1-2024

Subject/ : हिंदी Semester/ : 1st Exam Seat No / : U1SKM23S0226

Invigilator's Signature / Signature of Evaluator / Marks obtained/ 29 / 30

प्र 1.

1) 2. निर्मिला

2) 1). कॉमरेड

3) 2. इलाहाबाद

4) 3. एन गोपाल स्वामी अय्यंगार

5) 1. 22

6) 3. गालक

प्र 2..रा

2. प्रस्तुत कहानी डिप्टी कलक्टरी है। और इसके लेखक है अमरकान्त जी और यह कहानी बहुत ही रोचनात्मक है। भविष्य के बारे मे या सफलता के बारे मे बनाने का प्रयास किया है।

डिप्टी कलक्ट एक शिक्षण से जुडी कहानी है। नारायण, यह एक मुख्य पात्र है। और नारायण डिप्टी कलक्टरी परीक्षा की तयारी कर रहा है। नारायण की माँ और बाबा उसे सपोर्ट कर रहे है।

नारायण का नाम घर मे सब लोग प्यार से बबुआ कहकर पुकारते है जब वह परीक्षा की तयारी कर रहा है। तब उसके बाबा कहते है बबुआ पढ़ रहा है। जोर से मत बोलो सावकाश बोलो।

उसे पढ़ने दो और पढ़कर मेरा नारायण डिप्टी कलक्टर बनेगा और मेरा नाम ऊँचा करेगा।

इसलिए उसके पिताजी सबको या माताजी, घरमे सब सदस्यो को बता रहे है कि शोर बन करो, जोर से मत बोलो बबुआ पढ रहा है।

यह डिप्टी कलक्टर कही कहानी बहुत ही रोचनात्मक और मोटीवेट करने वाली कहानी है।

1) प्रस्तुत कही खोई हुई दिशाएँ है। और इस कहानी के लेखन, मोहन राकेश जी है। उन्होने बहुत सारी कहानिया लिखी है। वह एक सुप्रसिद्ध लेखक है। और खोई हुई दिशाएँ बहुत ही आकर्षणात्मक कहानी है।

इस कहानी का मेन पात्र चंदर है। और चंदर की पत्नी निर्मिला भी है। चंदर बहुत ही खोया-खोया या बहुत ही उदास था। क्युंकी उसे इस शहर आये हुए तीन साल हो गये थे फीर भी उसे इस शहर मे कोई भी पहचानता नहीं था। इसलिए वह दिनभर यहाँ-वहाँ, इधर-उधर भटकता रहता था। क्युंकी उसे घर जाने का भी मन नहीं करता था।

एक दिन वह उसकी प्रेमिका को मिलने गया था। उसका नाम इंद्रा था वह तो अब बहुत ही बदल चुकी थी वह रिक्षा आया और उसके घर मे बैठा चहा पानी किया और उदास मुँह लेकर बाहर पड़ा। क्युंकी उसकी प्रेमिका इंद्रा उसे भूल चुकी थी वह अपने पती के साथ खुश थी। फिर चंदर आते वक्त रिक्षा मे बैठा तो उसे वह रिक्षावाला जान-पहचान लगा।

उसे लगा रिक्षा वाला तो पहचान वाला है तो पैसा कम लेगा। तब वह रिक्षासे उतरकर बाहर आया और चार आनादिया तबी वक्त रिक्षा वाला ने कहा ओ साहब अभी दो आना दीजिए साहब. इस प्रकार यह वाक्य स्पष्ट होता है।

प्रश्न 3.

3) हिंदी भाषा के विविध रूप :-
हिंदी भाषा के कुल पाँच रूप हैं।
① बोलचाल की भाषा
② मानक भाषा
③ संपर्क भाषा
④ राज्यभाषा
⑤ राष्ट्रभाषा

① बोलचाल की भाषा :-
बोलचाल की भाषा समझने के पहले उसकी (Dilate) बोली समझना जरूरी है। क्यूँकी बोलचाल की भाषा तो सभी जगह पर बोलते हैं। बोलचाल की भाषा अपने बोली पर आधारित होती है। बोलचाल की भाषा को मानक भाषा भी कहते हैं। बोली भाषा अपने अपने भाषा-ओं पर अवलंब रहती हैं। आप जैसे बोली-बोलते हैं। उस प्रकार आपकी बोलचाल की भाषा होती है। बोलचाल की भाषा घर में, ~~एक~~ आपस में बात करते वक्त उसका उपयोग किया जाता है। बोलचाल की भाषा अपने व्यवहार या बोली पर अवलंब रही है। बोलचाल की भाषा बोलने वाले को साधे- और सरल लगते हैं। बोलचाल भाषा को मानक भाषा भी कहा जाता है।

② मानक भाषा :-
मानक भाषा यह एक उच्च भाषा है। मानक भाषा को शिक्षण क्षेत्रों में, पत्रिकाओं में और ~~बड़े~~ बड़े-बड़े कार्य का अर्थ व लिखते समय करते हैं। मानक भाषा यह एक प्रसिद्ध भाषा है।
मानकता में ही एकता होती है। और मानक भाषा बहुत ही शुद्ध और सरल होती है। शिक्षण ~~क्षे~~ छात्रों में छपाई करने के लिए मानक भाषा का उपयोग होता है। एवं समाचार छपने का काम भी इस भाषा से ही होती है।

मानक भाषा को बोलचाल भाषा भी कहते हैं। और यह भाषा सभी नए उपयोग होता है। मानक भाषा यह एक वाक्य से स्पष्ट होता है की "मानकता मे ही एकता होती है"।

③ संपर्क भाषा :-

संपर्क भाषा का उपयोग ~~जब होता~~ ~~दो~~ दो देशों को जब आपस मे बात करना होती है तब संपर्क भाषा का उपयोग होता है।

संपर्क भाषा को राज्य-राज्यों मे, राष्ट्र-राष्ट्रों मे, देश-देशोंमे संवाद करते वक्त उपयोग करते हैं। और संपर्क भाषा यह राजनिती भाषा भी कहलाती है। क्यूँ की यह भाषा ~~राजस~~ राजसभा, विधानसभा मे संपर्क करते वक्त उपयोग किया जाता है।

संपर्क भाषा राज्योंको, देशोंको जोडा रखता है। उनमे संपर्क रखने का काम संपर्क भाषा करता है।

④ राज्यभाषा :-

राज्यभाषा यह अपनी राज्य की भाषा होती है। राज्य मे बोलने वाली भाषा होती है।

जैसे कर्नाटक मे कन्नड, महाराष्ट्र मे मराठी, कोकण मे कोंगनी वैसे ही अपनी राज्यभाषा होती है। अपने-अपने राज्यों को। राज्यभाषा को राष्ट्रभाषा की भी मान्यता दि गयी है। जैसे हिंदी यह भाषा राज्य और राष्ट्रभाषा दोनो जगह मानी जाती ठीक उसी तरह राज्यभाषा को राष्ट्रभाषा भी बोलते हैं।

राज्यभाषा यह अपने राज्य से मर्यादित होती है। और अपने-अपने राज्य मे बोलने जाने वाला भाषा को राज्यभाषा कहते हैं। और राज्यभाषा अपने राज्यो मे स्थगित नही सभी ⑤ राज्यों मे बोला जा सकता है।

⑤ राष्ट्रभाषा :-

राष्ट्रभाषा यह राष्ट्र के प्रती होती है। राष्ट्र मे बोलने जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा होती है। और वह राष्ट्र के मर्यादित रहता है।

भारत का राष्ट्र भाषा हिंदी और इंग्लिश होती है। इसलिए अपने राष्ट्र की भाषा यह अपने राष्ट्र पर अवलंब रहती है। विविध राष्ट्रो की भाषा विभिन्न होती है।

भारत मे हिंदी राष्ट्रभाषा को 14 सितंबर 1949 को मान्यता दि गयी। उस वक्त हिंदी यह राष्ट्रभाषा कहलाता है। हिंदी या ~~इग~~ इंग्लीश इन दोनो का प्रयोग कही भी कर सकते है। जैसे की राजनितियो मे, विधानसभा - राज्यसभा, इत्यादि जगह पर राष्ट्रभाषा उपयोग होता है।

हमे गर्व है की हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है।

10

प्र उत्तर.

3) संपर्क भाषा :-

संपर्क भाषा यह एक बहुत ही शुद्ध और सरल भाषा है। यह भाषा दो देशों के या दो राज्यों के बिच का अस्त्र है।

संपर्क भाषा को बहुत जगह उपयोग किया जाता है। दो राज्यों मे या दो राष्ट्रो मे संपर्क भाषा का उपयोग किया जाता यह एक बहुत ही मानक भाषा कहाँ जा सकता है। क्युंकी दो राज्यों मे या राष्ट्रो मे बातचित करना है तो संपर्क भाषा का उपयोग होता है।

संपर्क ~~जब~~ भाषा उदाहरण में जब भारत और अमेरिका जब संपर्क करते है तो उस वक्त उन्हें हिंदी या इंग्लीश का उपयोग करना पड़ता है। पर अमेरिका का राष्ट्रभाषा इंग्लीश है इसलिए भारत और अमेरिका को संपर्क करते समय इंग्लिश भाषा का उपयोग करना पड़ता है। इसे ही हम संपर्क भाषा कहते है।

दो राष्ट्रो में संवाद करना, राजनिति के बारे में बोलना यह सभ कार्य संपर्क भाषा के उपयोग से ही होता है। संपर्क भाषा यह एक संवेदक भाषा है। यह एक बड़ी ही अच्छी और सरल भाषा है।

संपर्क भाषा को एक स्थान दिया गया है। इसलिए वह भाषा बहुत शुद्ध और सरल कहाँ जाता है। संपर्क भाषा का उपयो. सभी जगह किया जाता है।

29/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : मल्लराज मज्जगि Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM23S0160 Date /ದಿನಾಂಕ : 04-1-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिन्दी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : BSC 1st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ :

Invigilator's Signature / ಕೂಡದ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 15 / 30

प्रश्न १

1) तीन

2) पंच परमेश्वर

3) १) वाराणासी

4) २) माधव

5) १) इंजीनियर

6) ३) यशपाल

प्रश्न २

2) 'अमा, मालि के बच्चे को मेहतर से गरम पानी में डुबावा दो तो फिर नहीं रोयेगा।"
इस वाक्या 'आदमी का बच्चा' कहानी से लेलीया। इस कहानी की का कवि (लेखक) यशपाल जी है। यशपाल जी जनवरी 1903 में जन्म हुआ। यशपाल जी एक लेखक है। उनकी प्रमुक लेख रचना देशद्रोही, दादा कामरेड, झूठ सच्चा, मेरी तेरी उसकी बात यशपाल का प्रमुक रचनाये। यह वाक्या इस सदर्भ में आवाया बग्गा साहब की बेटी डोली यह बात कहता है। एक दीन डोली उनकी घर की माली के घर गया था। उनके माता पीता को वो अच्छी नही लगा ओ बोला वो लोग गंदा लोग है उनके पास घर को मत जाव बोला। डोली बोली उनके घर में एक पापु था उसके साथ खेलने केलीए गये थे। यह होनेके बाद उनकी घर पर एक कुत्ता था बडा कुत्ता बहुत अजीब लगती थी उसकी पेट दुपक गया था उसकी रंग अलग था. उस कुत्ता का

आंख खोला लगाता था। वह कुत्ता बीमार पड़ा था। दौली की पत्नी ने बोला इस कुत्ता को गरम पानी डुबकर मारना चाहिए। एक दिन उस लड़के के बच्चों को गरम पानी को डुबकर मारोगे। दौली आया घर पर जो कहती वही है कुत्ता। आया बोला गोकर घर पर वारे से गर्मी की बोला गरम पानी से डुबकर मरवाये थे। एक दिन दौली का बच्चा बहुत रोहता दौली यही संदर्भ से बोली थी " मामा, माली के बच्चे को गीहतर से गरम पानी से डुबवा दो तो फिर नहीं रोयेगा इस संदर्भ मे यह वाक्य आया था।

3) "हाँ लड़की तो बहुत है. अब कफन चाहिए। तो चलो कोई लड़का सा कफन ले लो।
इस वाक्य कफन कहानी से लेगाये। इस कहानी का लेखक प्रेमचन्द जी था। उनी जन्म जुलाई 1880 मे हुआ था। उनकी पहली कहानी पंच परमेश्वर था। और लास्ट कहानी कफन, कफन इस कहानी मानसरोवर रचना से लेलीये प्रेमचन्द लगभग 300 रचना थे। यह वाक्य इस कहानी से लेलीये

प्रश्न 3

1) माधव
माधव यह आदमी का पात्र आता है कफन कहानी में। यह कहनी प्रेमचन्द जी लीखा है। माधव एक आदमी था। माधव की लग्न होगयी थी उनकी पत्नी भी था माधव का पत्नी की नाम बुधीया थी। इस कहानी मे कहता माधव की पत्नी नायकी है इस कहानी में। माधव एक अच्छा आदमी था। माधव की पत्नी अतीम मे नही मरनायी थी।

5/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II nd INTERNAL TEST 2023 -2024

Name / ಹೆಸರು : Spoorthi. S. pati Roll No./ಸ್ಥಾನಾಂಕ : 50 Date / ದಿನಾಂಕ : 12-2-2024

Subject/ವಿಷಯ : Hindi Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : Ist Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಾಂಕ : U15KM23S0077

Invigilator's Signature / ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28 / 30

प्रश्न २

२ २. निर्मला

२ २. कॉमरेड

३ ३. इलाहाबाद

४. ३. रान गोपाल स्वामी अय्यंगार

५. २. 14

६. ३. मानक

प्रश्न २

२. इस वाक्य को छोई हुई दिशाएँ कहानी से लिया गया है इस पाठ का लेखक मोहन राकेश जी है।

प्रसंग :- जब चंदर ने रिक्षा से उतरता है तो तब बस वो दो आना है देखर आता है। लेकिन पूरा पैसा चाँर आना रहेता है।

जब चंदर दिल्ली में नया आया रहेता है। उसे अकेलापन का महसूस हो रहा रहेता है। तो वो सोच था है के क्यों ना इंद्र के घर क्यों ना यार बहुत दिन होगयी है। उसे मिलकर तोडी बहुत बात भी हो जायेगी करके सोचकर वो सामने रास्ते पर जाकर रिक्षा पकड़ था है। उसे वो जान पहचान का लगता है। लेकिन रिक्षावालेने पहचानसे ही इनकर कर देता है। वो थानी चंदर इंदर के घर के पास रिक्षा से पहुंचता है।

तब उसने बस दो आन देखकर उतरता है क्यों की पहले भी उसने एक बार दो आना देकर ही गया हुआ था करके अंदर सोचता है। लेकिन रिक्षा का पैसा पूरे पाँच आन रहता है तो रिक्षा वाले ने उसे और दो आना देने के लिए कहता है।

उपर लिखित हुवे संदर्भ मे पाँच वाक्य को कहा गया है।

~~प्रश्न~~ 3. इस वाक्य को अपठित पाठ से संकलित किया है
इस पाठ का लेखक अमरकांत जी ने लिखा है

प्रसंग :- जब ट्रेन में एक महिला और पुरुष सवार कर रहे रहते है। वो दोनो अपरिचित रहते है। वैसे ही वुन दोनों के बिच बात शुरू होती है। फिर ट्रेन में जाते समय वो दोनो बात करते रहते है वुन दोनो की जिन्दगी के बारे में तब बात करते - करते रात हो जाता है तो। पुरुष बोलता है कि महिला को सो जायिये बहुत देर हो चुकि है करके बोलता है।

महिला कहती है कि लोगो को जाने सफर करते समय कैसे निद आयाती है। मुझे तो निंद कहा आखे में बन्द नही कर सकती है करके महिला ने पुरुष से कहती है।

इस प्रकार महिला ने पुरुष से कहती है कि वो ट्रेन में नही सो सकती है करके उस ट्रेन में एक आदमी ट्रेन जाने हुवे से लेकर रुकने तक सोया ही रहता है। तब वो ये बात कहते है।

प्रश्न 3.

2. डिप्टी कलक्टरी इस पाठ का लेखक जी का नाम कमलेश्वर जी है।

पात्रों का परिचय

शक्तिदीप बाबू - घर की मालिक
चमन - शक्तिदीप की बेटी
नारायण - शक्तिदीप का पुत्र
निर्मल - नारायण की बीबी
टुन-टुन - शक्तिदीप का बेटा (छोटा बेटा।

डिप्टी-कलक्टरी का संक्षेप

→ ये कहानी शक्तिदीप जी एक बूढ़े इनसान वो गठने दर्द होता रहता है। उने एक बेटा रहता है नारायन वो बारवी पास करके बि.ए. पास किया रहता है। गाँव से घूमन फिरन करता रहता है। एक दिन काम ढूढ़ते सब कोरी के चक्कर कटता है। लेकिन उसे कोय काम नहि मिलती तो उसने डिप्टी कलक्टरी की पढ़ायी शुरु कर देता है।

तब नारायन को पढ़ते देखकर सब लोग अचर्चि चकित रहते है। वो हरामी रहता है वो क्यूँसे पढ़ना शुरु करदी। वो तो बि.ए. तो कम अच्छे से पास हुवा है।

लेकिन शक्तिदीप बाबू ने उस पर बरोसा तो नहीं था नारायन पर किसकी, उसे पढ़ने के समय उसे कोयी दिखता ना हो उसे कोयी बात-चीत ना करे वो आराम से पढ़ायी पर ध्यान रखे करके। उसने यनी शक्तिदीप बाबू ने बाहर बेट जाता है। क्यों की कोयी नारायन को बात-चित ना करे करके।

नारायण बाहर जाकर सिगरेट पीयेगा तो वक्त बरबाद होगा करके। शकलदीप बाबू खुद जाकर उस के लिए मेवा और सिगरेट लाकर देते हैं।

नारायण की परीक्षा की दिन पास आयी रहती है। तो नारायण ज्यादा शकलदीप बाबू को परिशान होते रहते हैं। नारायण बहुत अच्छे से पढ़कर जाने वाला था। उसकी परीक्षा इलाहाबाद में चलरहे थे तो नारायण इलाहाबाद जाने के लिया जारहा तो उसे जोड़ने के लिए उसके दोस्त और शकलदीप बाबू गये हुये थे।

तो नारायण इलाहाबाद जाता है परीक्षा देता है उसमें उत्तीर्ण भी होता है। उसके बाद इन्टर क्यू आता है। उसमें सब लोगों पाँच मिनट बैठकर आ रहते लेकिन नारायण पन्द्रह मिनट तक बाहर नहीं आता था शकलदीप बाबू कहते हैं यस का तो नहीं होगा करके।

बाद वे लोग वापस घर लौट कर आते हैं एक महीने के बाद परीक्षा की रिजल्ट भी आता है उसमें नारायण का नाम तो था लेकिन टॉप दस में उसका नाम नहीं था उसका नाम तेरहवा पर था। तो उसका सेलेक्ट होना मुश्किल लगरहाता बस मेडिकल टेस्ट में किसी के जूटने की इन्तजार थी।

शकलदीप बाबू डर लगती है कभी नारायण कुछ कर ना बैठे। तो वे नारायण थोड़े हावे समय पर जाकर उसकी हालत देखता रहता है।

उद्देश्य : इनसान पढ़ने में कितना मे कमजोर हो परिवार की साथ हो तो हम कुछ भी कर सकते हैं

10 → और कुछ करने के क्षमता होनी चाहिये संकल्प मे नहीं छोड़नी चाहिये।

प्रश्न 4.

3. संपर्क भाषा :-

* संपर्क भाषा यानि की हमारी स्थानिय भाषा। जिसे से हम एक दूसरे से बात कर सकते हैं उनकी भाषा को समझ सकते हैं।

* संपर्क भाषा एक स्थानिय भाष है। उसे हम अपनी मातृभाष भी उपयोग कर सकते हैं।

* संपर्क भाषा में हमारी मातृभाष, स्थानिय भाष दोनो प्रमुक पात्र निभाते हैं।

* संपर्क भाषा मे जो इनसे दूसरे से उनकी भाषा से समझ दे सकता है कोड - कचेरी यो में

* उनकी स्थानिय भाषा में बात करते हैं तो उसे ट्रान्सलेट कर ने के लिए कोड में ट्रान्सलेटर रहता है।

* संपर्क भाषा : भाष ये संपर्क करने मे बेहतर भूमिका निभाति हैं।

28/30

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

II nd INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : अर्शियानाज. पि. चौहरी Roll No./ಸ್ಥಾನಕ : 228 Date /ದಿನಾಂಕ : 12-2-2024

Subject/ವಿಷಯ : हिन्दी Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : 1st Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಾನಕ : U15KM23S0287

Invigilator's Signature / ಕೀಲಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 28/30

प्रश्न २.

2. 2. निर्मला

2. 2. कामरेड

3. 2. इलाहाबाद

4. 3. एन गोपाल स्वमी अय्यंगार

5. 2. 22

6. 3. मानिक

P.T.O

प्रश्न २).

१) "दो आना और दीजिए साहब!"

↳ इस वाक्य को कमलेश्वर जी के द्वारा लिखित कहानी 'खोयी हुई दिशाएँ' नामक कहानी से लिया गया है।

इस कहानी मे लेखक ये दरशाना चाहते है कि इस मोडर्न जमाने मे लोग अपने आप मे इतना खो गये है कि उन्हें एक दूसरे का खयाल नही रहता।

ऊपर दिए गये इस वाक्य को रिक्शा का मालीक जो की एक सरदार था, उसने कहा था।

जब बेचारा चंदर थका-हारा, अकेलेपन से उलझता हुआ, अपने आप से बातें कर खत्म होने पर, अपनी प्रेमिका इन्द्रा को याद करके उसके घर जाने को ठाना है, तब वह एक पहचान वाले से रिक्शे वाले को देखकर थोड़ा बहुत खुश होता है कि कोई तो उसकी पहचान का है, और वह (चन्दर) को हमेशा कनॉट प्लेस के पास छोड़ता, परंतु वह उसे इन्द्रा के घर के पास छोड़कर ज्यादे पैसे मांगते हुए अपरिचितता दरशाता है।

२) "लोगों को लंबे सफर में कैसे इतनी गहरी नींद आ जाती है।"

↳ इस वाक्य को ~~अमरकांत~~ मोहन राकेश जी के द्वारा लिखित कहानी 'अपरिचित' नामक कहानी से लिया गया है।

इस कहानी मे लोगों के बीच होनेवाले आपसी बात-चीत को दाशाया गया है।

ऊपर दिया गया वाक्य स्त्री ने उस अजनबी आदमी से कहा था।

इस कहानी में साथी एक ट्रेन की यात्रा का वर्णन किया गया है। ट्रेन में सफर करते समय जब लेखक के सामने के अनजान औरत बैठी थी। और उसके साथ एक 1 महीने की बच्ची भी थी, जिसे वह बिंदु कह कर पुकार रही थी उस वह औरत अपने पति को विदेश के लिए छोड़कर आयी थी।

बच्ची के विषय को लेकर दोनों में बात शुरू हुई और तभी औरत ने यह उपर वाला वाक्य बताया कि लोगो को सफर में कैसे इतनी गहरी नींद आ जाती है। क्योंकि सफर करते वक्त उसे कभी नींद नहीं आती।

प्रश्न 3.

(ख). खोयी हुई दिशाएँ कहानी का सारांश.

उ 'कमलेश्वर एक बड़े जाने-माने लेखक है जिनका जन्म 02 जुलाई 1932 को मैनिपुर नामक गाँव में उ.प्र. में हुआ था। वे आदमी के वर्तमान के बारे में और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास कराते। इन्होंने अनेक कहानियां, साहित्य पत्रिकाएँ और उपन्यास लिखी है।

खोयी हुई दिशाएँ 'कमलेश्वर' लिखित कहानी है, जिसमें आदमी के जीवन में होनेवाले अकेलेपन को दर्शाया गया है; आदमी जब लोगों के बीच होते हुए भी अकेला हो तो उसका अकेलापन या तो मन में होने वाला डर बहोत ही खतरनाक होता है, उससे बहार निकल पाना बहुत ही कठिन है।

P.T.O.

इस कहानी के मुख्य पात्र है, चंदर, निर्मला और इन्द्रा।

चंदर एक मामुली से व्यक्ति है जो थका हारा अपने काम को बाद घर लौट रहा है। पर उसे घर जाने का भी मन नही हो रहा था क्योंकि वह घर भी गया तो, उसके घर मिसेज गुप्ता होंगी जो की उसके पत्नी के साथ गप लड़ाने आयी होगी, उसे भोजन के लिए निर्मला को कोई बहना बनाना होगा। चन्दर को अपना घर पराए जैसा लगता है।

सुबह से उसने कुछ नही खाया था. उसने बस एक कप चाय कापी पी थी। और उसे लग रहा था कि अब शायद उसे भूख लग रही है और वह कनाट पार्क की ओर बढ़ता जाता है। वहाँ वो अपने बच्चों को देखकर खुश होता है और उनकी माँओ को देखकर संकोच भी होता है।

अपनी डायरी निकाल कर अगले दिन का कार्य देखकर यह सोचता है कि दिल्ली के लोगों का कब क्या हो किसी को कुछ पता नही चलता उसका उदहरण वह वहाँ के कपड़ो के बड़े व्यापारि का लेता है।

दुनिया से थक कर वह यह सोचता है कि चल कर अपने-आप से ही कुछ बात कर ली जाये परन्तु तभी उसका दोस्त अमर वहा आ जाता है। उससे पैसे माँगकर चला भी जाता है यहाँ उसके दोस्त का व्यक्तित्व बताया गया है कि लोग कितने मतलबी होते है।

P.T.O

नभी बस स्टॉप पर खड़े खड़े को इन्द्रा की याद आती है तो वह वहां जाने का निश्चय करता है परंतु इन्द्रा के घर जाने तक भी उसे एक रिश्ते वाले से धोखा मिलता है।

इन्द्रा के घर पहुंचने के बाद इन्द्रा का स्वभाव इस बार कुछ बदला बदला सा नजर आने लगता है। उसके स्वभाव मे या बरताव मे अपनापन नहीं बल्की महमान नवाजी की बु आती लगती है।

वहां से थक कर जब वह अपने घर आता है तो उसके पत्नी को देखकर खुश होता है। और बस आज ही के दिन उसे सब अपना अपना सा महसुस होने लगता है। घर की हर चीज उसे अपनी लगती है। परंतु वह अपने अकेलेपन से बहार आ नही पाता है।

इस कहानी का उद्देश यह है कि; शहरी जीवन का आम आदमी को परिचित कराना और उसके वजह से होने वाले अकेलेपने का भय, शहरों के लोगों की सोच और लोगों के बीच का संबंध को इस कहानी मे बखुबी से देखा जा सकता है।

प्रश्न 3)

१) राष्ट्रभाषा :-

आधुनिक भारत काला में यानी हमारे आजादी के पहले (1947) हमारे भारत देश मे अंग्रेजों का राज था और उन्होंने हमारे सारे लोगों को अपने मुट्ठी मे बन्द कर लिया था।

अंग्रेजी शासन यानी तभी अंग्रेजी भाषा ही बोली जाती थी। परंतु हमारे स्वतंत्रता के बाद बहोत सारे लोगों को मद्दे नजर रखते हुए सरकार

P.T.O.

ने राष्ट्र के लिए एक राजभाषा को आयोग लागु किया और यही भाषा भारत में हर कामों में इस्तेमाल होती है। यह और कोई दूसरी भाषा नहीं वह बस अपनी भाषा हिन्दी है।

हिन्दी भाषा का प्रयोग हम हर एक सरकारी अवसरों में करते हैं और इसे राजभाषा के नाम से बुलाया जाता है क्योंकि आज तक हमारे यहाँ राष्ट्रभाषा नहीं है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे हर कोई आसानी से बोल और लिख सकता है। भारत के किसी भी कोने में क्यों ना जाए हमें राजभाषा का प्रयोग करना आना चाहिए। और किसी भी अवसर में गये वक्त हमें हिन्दी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

28/30